माणस जनमु अमोलु है
भाई पिंदरपाल सिंघ जी
के मुख्य लैकचर

१ओअंकार सतिगुर प्रसादि ।।

माणस जनमु अमोलु है

भाई पिंदरपाल सिंघ जी 'कथावाचक' के मुख्य लैक्चर

SIKHBOOKCLUB.COM

संपादक

भाई परमजीत सिंघ ख़ालसा

अध्यक्ष, सिक्ख स्टूडेंट फेडरेशन (महिता)

प्रकाशक

भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ

अमृतसर।

© प्रकाशक

MANAS JANAM AMOL HAI
Edited by : Bhai Paramjit Singh Khalsa

ISBN : 978-81-7601-972-9

प्रथम संस्करण 2009

भेटा 100-00

SIKHBOOKCLUB.COM

प्रकाशक :
भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ
बाज़ार माई सेवां, अमृतसर।
फोन : (0183) 2542346, 2547974, 2557973
फैक्स : (0183) 5017488
E-mail : csjssales@hotmail.com, csjsexports@vsnl.com
Website : www.csjs.com

Printed in India

मुद्रक : जीवन प्रिंटर्स, अमृतसर। फोन : 2705003, 5095774

प्रशंसनीय यत्न

भाई पिंदरपाल सिंघ जी इस समय के प्रसिद्ध विद्वान तथा कथावाचक हैं। आज हर व्यक्ति उनकी कथा सुनकर गुरु-घर के साथ जुड़ता है। भाई परमजीत सिंघ ख़ालसा ने उनके लेक्चरों को पंजाबी और हिन्दी रूप देकर अति प्रशंसनीय कार्य किया है। हमें मालूम है कि कैसेटों से पंजाबी और हिन्दी प्रतिलिपि करना कोई आसान काम नहीं। भाई परमजीत सिंघ ख़ालसा ने इस तरफ बड़ी हिम्मत की है। इससे पहले भाई चतर सिंघ जीवन सिंघ की फर्म ने ज्ञानी संत सिंघ जी मसकीन की कई कैसेटों की पंजाबी प्रतिलिपियां करवाई हैं। भाई पिंदरपाल सिंघ जी बड़ी चढ़दी कला वाले वक्ता हैं। उनकी कैसेटों को पंजाबी-हिन्दी रूप देना अति प्रशंसनीय कार्य है। भाई परमजीत सिंघ ख़ालसा ने आठ लेक्चरों को पंजाबी रूप दिया है। इन कथाओं में 'माणस जनमु अमोलु है, गुर रामदास कउ मिली बडाई, गुरि अमरदासि करतारु कीअउ, नानक की प्रभ बेनती, बिनु सतिगुर भगति न होवई, मनमुखु बालकु बिरधि समानि है, एको नामु धिआइ, पंजि पिआले पंजि पीर, जीवन धन्य बाबा बुड्ढा साहिब जी, साका चमकौर साहिब' आदि दर्ज हैं।

–इकबाल सिंघ

सिंघ साहिब, जत्थेदार तख़्त श्री पटना साहिब (बिहार)।

SIKHBOOKCLUB.COM

विषय-सूची

SIKHBOOKCLUB.COM

दो शब्द

भाई पिंदरपाल सिंघ जी एक उच्च कोटि के विद्वान तथा कथावाचक हैं। उनकी विद्वता उनके मुख से फूलों की तरह झड़ती है। जब वे बोलते हैं तो उनकी बोलने की गति कभी भी धीमी नहीं होती। ऐसे विद्वान की आवाज़ को सुन कर कलमबद्ध करना कोई मामूली काम नहीं था। मैंने इनकी कैसेटों को बार-बार सुना है और तसल्ली होने पर ही कलमबद्ध किया है। इस पुस्तक में मैंने उनके दस लेक्चर एकत्र किए हैं। उनके पहले लेक्चर का नाम है 'माणस जनमु अमोलु है'। इसलिए उनके सारे लेक्चरों के समूह का नाम भी 'माणस जनमु अमोलु है' रख दिया है। भाई गुरदास जी के इस श्लोक के बारे में विद्वान लेखक ने यह समझाया है कि मनुष्य को यह जो जन्म मिला है अमोल है, इसको ऐसे ही न खोना। उनका दूसरा लेक्चर है 'गुर रामदास कउ मिली बडाई'। इस बारे में 'कीरत' नामक भट्ट कहता है—सारे संसार के कल्याण को सोढी, जो श्री गुरु रामदास साहिब जी हैं, अब उनको गुरुता-गद्दी का यश मिला है। इस प्रकार उनके और लेख जिनको मैंने कलमबद्ध किया है, उनमें 'माणस जनमु अमोलु है, गुर रामदास कउ मिली बडाई, गुरि अमरदासि करतारु कीअउ, नानक की प्रभ बेनती, बिनु सतिगुर भगति न होवई, मनमुखु बालकु बिरधि समानि है, एको नामु धिआइ, पंजि पिआले पंजि पीर, जीवन धन्य बाबा बुड्ढा साहिब जी, साका चमकौर साहिब' हैं।

मैंने जैसे पहले भी ज़िक्र किया है कि भाई पिंदरपाल सिंघ अपनी निजी रफ़्तार से अपना लेक्चर बोलते हैं, इसलिए उनकी

SIKHBOOKCLUB.COM

आवाज़ को कलमबद्ध करने के लिए कई प्रकार की कठिनाइयां पेश आती हैं। हो सकता है मुझसे कई लग-मात्राएं रह गई हों, ऐसी मेरी कमज़ोरी को पाठकजन खुद सुधारने की कोशिश करें। मेरे इस खरड़े को विद्वान कथाकार भाई पिंदरपाल सिंघ जी ने खुद भी पढ़ा है, इसलिए मुझे उम्मीद है कि मेरी त्रुटियों को उन्होंने दूर कर दिया होगा।

-भाई परमजीत सिंघ ख़ालसा

SIKHBOOKCLUB.COM

आमुख

भाई परमजीत सिंघ ख़ालसा ने मेरे कुछ लेक्चरों को कैसेटों से कलमबद्ध किया है, इसलिए मैं उनका बहुत आभारी हूं। एक कैसेट से लेक्चर ज्यों का त्यों लिख लेना कोई आसान बात नहीं है, लेकिन मैंने उनके खरड़े को पढ़कर देखा है और वे इस कार्य में पूरे सफल रहे हैं। इसमें सबसे बड़ा तथ्य यह है कि भाई परमजीत सिंघ ख़ालसा खुद भी गुरबाणी के रंग में रंगे हुए हैं, इसलिए मेरे लेक्चरों को कलमबद्ध करने में उनको ज्यादा कठिनाई नहीं आई होगी। मैंने उनके खरड़े को अच्छी तरह से पढ़ा है और उसमें से बहुत कम गलतियां मिली हैं। जो मनुष्य तन-मन से गुरु ग्रंथ साहिब के साथ जुड़ जाता है उसके अंदर की हउमै दूर हो जाती है और वह गुरबाणी के रंग में रंगा न-भूलने योग्य होता जाता है। गुरु ग्रंथ साहिब जी की अमृत गुरबाणी में जहां जिज्ञासु अपने गुरु से बार-बार कुर्बान जाता है, वहां सतिगुरु अपने सिक्ख से बार-बार बलिहार जाते हैं। गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी में हजूर गुरु अरजन देव जी का एक अमृत वचन है कि आम तौर पर हम रूहानियत के मार्ग पर चलने वालों को गुरु ग्रंथ साहिब जी की गुरमति में से चार-पांच शब्दों के साथ संबोधन करते हैं। किसी के लिए यह शब्द प्रयोग करते हैं कि यह महान संत है, किसी के लिए शब्द प्रयोग करते हैं कि यह वास्तव में प्रभु का प्यारा भक्त है, किसी के लिए गुरु ग्रंथ साहिब में से शब्द पढ़ते हैं कि यह पूर्ण साध है, किसी के लिए पढ़ते हैं कि यह तो गुरमुख है। पांचवां शब्द हम पढ़ते हैं कि यह एक महान गुरु का सिक्ख है। भाई परमजीत सिंघ जी ख़ालसा, जिन्होंने इतनी लगन और प्यार से मेरे लेक्चरों को कलमबद्ध किया है, उनके लिए भी मेरा एक ही शब्द है कि भाई परमजीत सिंघ जी ख़ालसा एक महान गुरु का महान सिक्ख है।

SIKHBOOKCLUB.COM

-भाई पिंदरपाल सिंघ

माणस जनमु अमोलु है

मनसा करि सिमरंत तुझै नर कामु क्रोधु मिटिअउ जु तिणं।।
बाचा करि सिमरंत तुझै तिन्ह दुखु दरिद्रु मिटयउ जु खिणं।।
करम करि तुअ दरस परस पारस सर बल्य भट जसु गाइयउ।।
स्री गुर रामदास जयो जय जग महि तै हरि परम पदु पाइयउ।। ४।।

(अंग १४०५)

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

परम सत्कारयोग्य युगो-युग अटल साहिब सतिगुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब सच्चे पातशाह जी की पावन पवित्र हजूरी में सुशोभित गुरु-संवारे सतसंगी-जनो! भट्ट जी ने इस सवय्ये में पहला वचन यह बख्शिश किया है कि जो मनुष्य अपने मन के कारण, हे गुरु रामदास! आप जी को याद करता है, उस मनुष्य के अंदर से काम, क्रोध वाली मलिन इच्छा आप जी खत्म कर देते हो। दूसरा वचन कि जो मनुष्य वचनों करके आप जी का सिमरन करता है, उसके दुख-दरिद्र एक पल में आप मिटा देते हो। तीसरा वचन जो कर्म करके अपनी शारीरिक इंद्रियों के द्वारा आप जी को स्पर्श करता है, उस मनुष्य को आप पारस के समान बना देते हो। हे धन्य गुरु रामदास सच्चे पातशाह! मन-बच-कर्म करके जिस ने भी आप जी को याद किया, आपने उसकी इच्छाओं को खत्म करके उसके भीतर सारे दुख-दरिद्र मिटा कर उसको पारस की तरह बना दिया। जैसे पारस कुछ धातुओं के जीवन को बदल सकता है, तांबे से सोना बन सकता है। इसी कारण जो आप जी के चरणों में मन करके जुड़ा है, वह

पारस की तरह है। उस गुरमुख की संगत करने वाले का जीवन भी पलट जाता है।

भट्ट बल साहिब जी ने आज के इस अमृत सवय्ये के अंदर गुरु रामदास सच्चे पातशाह जी को तीन तरीकों से याद करने की, उनका धन्यवाद करने की युक्ति हमें बख़्शिश की है, मन करके, वचनों करके और कर्मों करके।

गुरु ग्रंथ साहिब की अमृत बाणी में प्रभु-भक्ति करने वाले जो जिज्ञासु हैं, गुरु-भक्ति में जो इच्छा रखते हैं, उनको तीन बातें ही हज़ूर ने समझाई हैं कि तेरे मन में भी गुरु की आराधना हो, तेरे मुंह में भी गुरु का शब्द हो और तेरे कर्मों में भी गुरु का उपयोग हो, क्योंकि अगर मनुष्य अपनी ज़ुबान से तो गुरु कहता है, परंतु उसके मन के अंदर गुरु नहीं, उसके हृदय में गुरु नहीं, फिर कई बार ज़ुबान से कहा हुआ वह असर नहीं रखता अगर मनुष्य के अपने अंदर गुरु नहीं टिका। अब इंसान ज़ुबान से भी वाहिगुरु कह दे, मन करके भी कभी एक क्षण टिक जाए और जब संसार में विचरण करने लगे तो तब अपने कर्मों में सतिगुरु का भय न रखे तो धन्य गुरु ग्रंथ साहिब कृपालु जी कहते हैं कि तब फिर सही अर्थों में आत्मिक तरक्की से मनुष्य खाली रह जाता है। जिसके मन में गुरु टिके, रसना से भी गुरु जपे और उसके कर्मों मे भी गुरु आ जाए, फिर उस प्यारे को सारे फल मिल जाते हैं।

एक इंसान ज़ुबान से गुरु कहता है परंतु अपने अंदर कपट रखकर बैठा है। ज़ुबान से केवल लोगों को सुनाने के लिए प्रभु, राम, अल्लाह शब्द प्रयोग करता है, मेरे गुरु ग्रंथ साहिब कहते हैं ऐसा कहा हुआ कई बार कपट वाली वृत्ति धारण कर जाता है। हज़ूर का एक अमृत वचन हम पढ़ते हैं। कहते हैं :

जो बिनु परतीती कपटी कूड़ी कूड़ी अखी मीटदे...।।

(अंग ७३४)

एक तरफ जब इंसान प्रभु का चिंतन करता है, अपने नेत्रों को बंद करके अंतर्रात्मा गुरु-गुरु जपता है, अब उसके अंदर भी गुरु

SIKHBOOKCLUB.COM

चलता है, उसके नेत्र बंद हैं, वह पूर्ण रूप से एकाग्र होकर टिका है और दूसरा इंसान नेत्र बंद कर ले, हृदय में कपट रखकर प्रीति के बिना केवल ज़ुबान से हरि-हरि कहे जाए तो साहिब कहते हैं ऐसे कपटी का अहंकार परमात्मा स्वयं ही उतार देता है।

गुरु रामदास जी के पास योगी आए हैं। उन्होंने अपने मत के अनुसार गुरु रामदास कृपालु जी से चर्चा की, किंतु जब वे कहीं ज्ञान की बात करते थे तो हाथ में पकड़ कर किंगुरी बजाते हैं या वे तार पकड़कर एकतारा बजाते हैं और जब वे गाते हुए वाकई इंसान को अति सुंदर लगते हैं। परंतु गुरु रामदास जी के सामने जब आए, जो वचन गुरु रामदास कृपालु जी ने उन योगियों को कहे, उनका मतलब यह नहीं कि वे वचन सिर्फ योगियों के लिए सीमित हैं, जो आत्मिक उपदेश उनको अर्जित करने के लिए सदियों पहले दिया था, गुरु ग्रंथ साहिब जी की अमृत बाणी में वह शब्द है :

हथि करि तंतु वजावै जोगी थोथर वाजै बेन।।

SIKHBOOKCLUB.COM

कहते हैं, हे योगी! तूने अपने हाथ में साज़ पकड़ा है, तंती साज़ है और उस साज़ को बजाता है। जब तू उस साज़ के साथ अपने अंदर के सुर को मिला कर गाता है, यह ठीक है तेरा साज़ बजाना प्रभावित कर रहा है, परंतु हे योगी! अगर तेरा अंदर मन भगवान की बंदगी की तरफ नहीं भीगा तो सच जानना तेरा बोल भी खोखला है और तेरा बजाया हुआ साज़ भी खोखला है।

हथि करि तंतु वजावै जोगी थोथर वाजै बेन।।
गुरमति हरि गुण बोलहु जोगी इहु मनूआ हरि रंगि भेन।।

(अंग ३६८)

हे योगी! खोखले बोल न बोल। तू गुरु की मति में रंग कर गुरु के शब्द को पुकार, जो मन तेरा गाते हुए भी सूखा है, तू यत्न कर कि गुरु की मति लेकर इस सूखे मन को गुरु के शब्दों में भिगो ले। अब उसने आगे से प्रश्न कर दिया, कहने लगा, महाराज! हम अनेक प्रकार के राग गा रहे हैं, अनके प्रकार के सुर लगा रहे हैं

और क्या यह हमारे गाए हुए राग किसी प्रभाव-अर्थ नहीं। मेरे गुरु रामदास जी ने साथ ही वचन कह दिया। कहने लगे :

गावहि राग भांति बहु बोलहि इहु मनूआ खेलै खेल।।

(अंग ३६८)

जुबान करके मैं राम-राम कहे जाऊं और मेरा भीतर वाला मन अपना खेल खेलता है तो क्षमा करना! गुरु रामदास सच्चे पातशाह कहते हैं कि ऐसा कपट रखकर गाया हुआ कई बार मनुष्य के जीवन को तरक्की नहीं दे सकता। कई बार सिमरन करने के बाद भी मन में यह ख़्याल उत्पन्न होते हैं कि इतने कम समय में ही मैंने नित्तनेम कर दिया, क्योंकि जितना समय जुबान से बोले, उतना समय मन उसमें हाज़िर रहा।

वे योगी फिर पूछते हैं, सच्चे पातशाह! आप ठीक कर रहे हो कि मन तो अपनी खेलें खेलता है। क्या यह जो कुछ हम गा रहे हैं इसका ज़िन्दगी में कोई अर्थ नहीं। मेरे गुरु रामदास जी ने बहुत सुंदर उत्तर दिया। कहने लगे कि एक जमींदार खेती को सींचने वाले कुएं को जोतता है। बैलों को अपने कुएं के आगे हांक दिया, अब बैल इसलिए कुएं को चला रहे हैं कि कुएं की माहल उसकी टिंडें पानी कुएं में से बाहर निकालें और जिस फसल को पानी की ज़रूरत है वहां पानी पहुंचाया जाए। बैल को इसलिए लाया जाता है कि वह कुएं को चलाने के लिए है। जिस बैल ने कुएं को चला कर खेती को प्रफुल्लित करना है, प्यारिओ! अगर वह बैल ही खुलकर खेती को नष्ट कर दे तो फिर उस बैल को क्या करना है? साहिब कहने लगे, कीर्तन गाता है, राग गाता है, कथा करता है, बाणी पढ़ता है, यह इसलिए है कि अपने अंदर को बाणी से तू सींच सके और अगर प्यारिआ तेरा मन रूपी बैल ही रस्सी तुड़वा कर अपनी खेलें खेल कर, एक तरफ तू बाणी पढ़ता है और दूसरी तरफ मन तेरा गंदे विचार बनाए बैठा है, फिर यह तो यह बात बन गई कि बैल ही रस्सी तुड़वा कर कुएं से जिस खेती को सींचता था, उस खेती

को उजाड़ने लग पड़े। इसका मतलब है कि तू अपने मनूए को खेल खेलने से बचा। हज़ूर ने फरमाया :

कोई गावै रागी नादी बेदी बहु भाति करि...।।

(अंग ४५०)

गाया तो परमात्मा को जा रहा है। कोई राग द्वारा गा रहा है, कोई नाद बजा-बजा कर गा रहा है, कोई वेदों के मंत्र पढ़-पढ़ कर उस परमात्मा को गा रहा है, गाना कोई बुरी बात नहीं। हज़ूर कहते हैं कि तू केवल ऊंची-ऊंची गाए जा, सच जानना, वास्तव में यह तेरा रोना बन जाएगा। एक वह है जो बिलकुल कोई भेष नहीं बना रहा। सीधा-सादा-सा उसका जीवन है, परंतु जहां भी बैठता है एकसुरता पैदा कर लेता है मन करके, वचनों करके और कर्मों करके। देखने में कई बार ऐसे प्रतीत होता है कि शायद इस इंसान के पल्ले कुछ नहीं, यह पाग़ल होगा, किंतु साहिब कहते हैं कि ज़रूरी नहीं कि जो मन-वचन करके ज़िन्दगी को कमा रहा है, वह बाहर का आडंबर करके भी लोगों को दिखाए। हकीकत में वे भीतर से रेशम की तरह कोमल हैं। बाहर उनके फटे कपड़े दिखाई देंगे, बाहर की चमक-दमक नहीं और मेरे गुरु नानक साहिब कहते हैं कि वह संसार में सबसे भले हैं। एक अंदर से झूठा है और उसका बाहर का आडंबर कोई अर्थ नहीं रखता। एक अंदर से जुड़ा हुआ कोमलता के कारण और बाहर का उसका भेष कोई देखे तो भ्रम में आएगा कि यह भी परमात्मा की बंदगी करने वाला है । प्यारिओ! मेरे गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी ने ऐसे कपट को स्वीकार नहीं किया।

बाबा फ़रीद जी कहते हैं कि जो परमात्मा को दिल से इश्क करता है वास्तव में वह प्रभु का भक्त है और जो मन में कुछ रखता है, जुबान से कुछ कह रहा है :

दिलहु मुहबति जिन्ह सेई सचिआ।।
जिन्ह मनि होरु मुखि होरु सि कांढे कचिआ।।

(अंग ४८८)

अगर मन में कुछ है और वचनों में कुछ है, वास्तव में वह इंसान कच्चा है। गुरु गोबिंद सिंघ जी ने ज़फ़रनामे में औरंगज़ेब को एक बात कही और अगर कोई इंसान गुरु जी के नज़दीक रह कर भी वैसे कर्म किए जाएं तो उसको ज़फ़रनामे का यह शेयर पढ़ लेना चाहिए कि जो कुछ मैं कह रहा हूं वह कहां तक उचित है। गुरु कलगीधर पातशाह ऐसे कर्मों को देखकर अपनी कलम से एक शेयर लिख कर गए। कहने लगे :

हमो मरद बाइद शवद सुखम वर।

वास्तव में मर्द वह है जो वचन का बली हो।

ना शिकमे दिगर दर दहाने दिगर।

वह कैसे मर्द कहा जा सकता है जो पेट में कुछ रखे और जुबान से बोल कर कुछ कहे । साहिब कहने लगे, जो मनुष्य वचन करके भाग जाता है, ऐसे कपटी को परमात्मा की कृपा कैसे मिल जाएगी? साहिब कहते हैं कि तू मन करके, वचनों करके और कर्मों करके परमात्मा को जप। जो अपने बचाव के लिए कुछ समय के लिए रब्ब-रब्ब करता है, ऐसे सज्जनों की जुबान मीठी होती है, ऐसे सज्जनों के लिबास बड़े अच्छे होते है परंतु वास्तव में जब ऐसे सज्जनों के नज़दीक कोई जाता है तो पता ही तब चलता है, जब भीतर की कैंची से मनुष्य की जड़ें काट कर रख देते हैं। अब हम कहें कि मन करके यत्न करेंगे, अंदर टिक जाए, वचनों करके वाहिगुरु-वाहिगुरु कहेंगे और हमारे कर्मों में वाहिगुरु कैसे आएगा?

भाई साहिब भाई गुरदास जी ने अपनी एक पउड़ी में पूरे के पूरे शरीर की क्रिया को बयान किया है कि मन करके क्या है, वचनों करके क्या है और कर्मों करके क्या है? भाई साहिब कहते हैं कि पहली बात यह है कि हर इंसान अपनी जुबान से यह बात कहता है कि मनुष्य-देही बहुत ही कीमती है। अगर कोई इसको न समझे तो अपने भीतर की अज्ञानता के कारण अंधेरे में डूबा हो तो वह दया का पात्र हो सकता है। यह सबको पता है कि मनुष्य-देही अत्यंत

SIKHBOOKCLUB.COM

कीमती है। इसमें उसने अपना नूर टिकाया है। इस नूर के होने के कारण इसको परमात्मा ने इतनी समझ दी है कि यह अपने बीते को भी याद करता है, आने वाले का भविष्य संवार सकता है। अगर वह सुरति करके जुड़ जाए तो परमात्मा के दर पर पहुंच सकता है।

यह मनुष्य का तन इसलिए मूल्यवान है क्योंकि इसको परमात्मा का चिंतन करने की परमात्मा ने दात दी है? अब एक पशु है। उसकी सोच में और आदमी की सोच में ज़मीन-आसमान का अंतर है। कई गुण परमात्मा ने पशुओं-पक्षियों के भीतर ऐसे डाल दिए हैं जो मनुष्य के पास नहीं हैं। इंसान चाहे स्वयं को चौरासी का सरदार कहता है परंतु आज भी किसी कातिल को ढूंढना हो तो चौरासी का सरदार इंसान अपने हाथ में कुत्ते की ज़ंजीर पकड़कर उसको ले जाएगा क्योंकि कुत्ते की सूंघने में जो शक्ति है, उसका गुण इंसान से ज्यादा है। वह सूंघ कर बता सकता है कि यह इंसान चोर है, यह धोखेबाज़ है। भाई गुरदास कहते हैं कि आ मैं तुम्हें बताऊं, तू सांसारिक इंद्रियों के साथ कर्म करने शुरू कर। हो सकता है यह कर्म तेरे मन-वचन-कर्म में एकसुरता पैदा कर सकें। भाई साहिब ने पहला वचन कहा, कहने लगे :

माणस जनमु अमोलु है

बहुत अमूल्य है पर याद रखना :

होइ अमोलु साधसंगु पाए।

तू जब इस तन को लेकर साधसंगत में आ जाए, उसके उपरांत सच में तेरा मन अनमोल हो गया है। परमात्मा की बंदगी करने वाला और साधारण विकारों को भोगने वाला, सच मानो, उनके तन में भी अंतर है। हम कहेंगे पांच तत्वों का बना है, बोल-चाल एक समान है, हालांकि जो परमात्मा के दर से टूटा है, उसके कपड़े सुंदर हों, उसकी चमक-दमक बड़ी हो और जो जुड़ा हो, वह सारा दिन कभी जोड़ों की सेवा करता है, कभी झाड़ू लगाता है, उसमें और उस शरीर में क्या अंतर है? ज़मीन-आसमान का अंतर है। एक

तन को संगत में लेकर आ जाना। उस तन पर गुरु का इतना परोपकार होता है कि वह तन जहां बैठ जाए वहां भी संगत की दया का प्रयोग करने लग पड़ते हैं, परंतु प्यारिओ! जो तन परमात्मा से टूटा है, वह जहां भी जाएगा वहां केवल कमी पैदा करेगा, कभी भी जुड़ने वाली कला उसके पास नहीं होगी। भाई साहिब ने कहा :

माणस जनमु अमोलु है होइ अमोलु साधसंगु पाए।
अखी दुइ निरमोलका सतिगुरु दरस धिआन लिव लाए।

अगर तूने मन-वचन-कर्म करके स्वयं को नाम से जोड़ना है। तेरे दोनों नेत्र अति अनमोल हैं। इनके प्रकाश की कोई कीमत नहीं, परंतु गुरु की नज़र में उस दिन नेत्र अनमोल हैं जिस दिन इनसे गुरु के दर्शन किए। अपने नेत्रों को बंद करके गुरु के वचनों को पढ़कर अपने भीतर पैदा करके तू ध्यान कर सके।

मसतकु सीसु अमोलु है चरण सरणि गुरु धूड़ि सुहाए।

तेरा मस्तक, तेरा शीश दोनों अनमोल हैं। तू गुरु के चरणों में जाकर अपने मस्तक को झुका कर गुरु के चरणों की धूल अपने मस्तक पर लगा ले।

जिहबा स्रवण अमोलका सबद सुरति सुणि समझि सुणाए।

तेरी ज़ुबान और तेरे कान अनमोल हो सकते हैं, परंतु शर्त है कि अगर तू कानों से प्रभु की प्रशंसा सुने, ज़ुबान से प्रभु की प्रशंसा करे, फिर तू अपने ध्यान को उस विचार में टिकाए। कहने लगे, प्यारिओ!

हसत चरण निरमोलका गुरमुख मारगि सेव कमाए।

(वार १५, पउड़ी १७)

हाथों से गुरु की सेवा कर, पैरों से गुरु द्वारा बताए मार्ग पर चल। जब तू बाहरी इंद्रियों से इतना काम ले लेगा तो सच मानो, तेरा हृदय तब अनमोल हो गया जब तेरे हृदय में परमात्मा जी ने अपना निवास कर लिया। मन में परमात्मा की प्रशंसा कर, ज़ुबान

से नाम अमृत को पी, कानों से तू नाम-अमृत को सुन, पैरों से गुरु द्वारा बताए मार्ग पर चल, फिर मन-वचन-कर्म से जुड़े इंसान! जो कुछ तू मन में विचार बनाएगा, परमात्मा तेरे हर विचार को भाग्य लगाएगा। परंतु मन नहीं टिकता, प्यारिओ! जिसने गुरु रामदास, कहीं मन टिका कर निर्मल हृदय से एक बार तेरे प्रति अपने मन में विचार बना लिया कि मेरे सिर पर मेरे पिता गुरु रामदास खड़े हैं, कहने लगे फिर पता क्या कृपा करते हो :

मनसा करि सिमरंत तुझै नर कामु क्रोधु मिटिअउ जु तिणं।।

तिणं का शाब्दिक अर्थ है तीनों का। परमात्मा ने दया की, कहने लगे, अगर कोई मन से गुरु रामदास जी को याद करे तो गुरु रामदास एक पल में उन लोगों के काम और क्रोध को मिटा देते हैं।

बाचा करि सिमरंत तुझै तिन्ह दुखु दरिद्रु मिटयउ जु खिणं।।

जिन वचनों से गुरु रामदास आप जी को याद करते हैं, उनके दुख, दरिद्र, कलह एक पल में आपने मिटा दिए।

SIKHBOOKCLUB.COM

करम करि तुअ दरस परस पारस सर बल्य भट जसु गाइयउ।।

मन से कोई जुड़ता है तो काम, क्रोध नाश होता है, वचनों से कोई जुड़ता है तो उसके दुख-दरिद्र नाश होते हैं और जो कर्मों से जुड़ते हैं :

करम करि तुअ दरस परस पारस

जो कर्मों से आपके दर्शन स्पर्श करते हैं, वे पारस जैसे बन जाते हैं।

सर बल्य भट जसु गाइयउ।।

भट्ट बल जी कहते हैं कि मैं गुरु रामदास जी की प्रशंसा गाकर करता हूं कि गुरु रामदास जी को स्पर्श करने वाले पारस बन गए। वह पारस उनके जीवन को भी आगे बदल गया।

स्री गुर रामदास जयो जय जग महि

जिनको आपने मन-वचन-कर्म करने का ढंग दे दिया, वे फिर बाहर खड़े होकर कहते हैं, गुरु रामदास सच्चे पातशाह! इस संसार में तेरी जय-जयकार हो रही है।

तै हरि परम पदु पाइयउ।।४।।

आपने उस हरि के पास, उस हरि का रूप होकर परम-पदवी को प्राप्त किया। इसलिए बाबा जी ने बाणी में बार-बार यह बात समझाई है :

हरि एकु सिमरि एकु सिमरि एकु सिमरि पिआरे।।

(अंग ६७९)

मन से, वचनों से हमें वाहिगुरु याद आ जाए, फिर हमारी ज़िन्दगी सफल हो सकती है। सतिगुरु रहमत करें।

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

SIKHBOOKCLUB.COM

गुर रामदास कउ मिली बडाई

नानकि नामु निरंजन जान्यउ
कीनी भगति प्रेम लिव लाई।।
ता ते अंगदु अंग संगि भयो
साइरु तिनि सबद सुरति की नीव रखाई।।
गुर अमरदास की अकथ कथा है
इक जीह कछु कही न जाई।।
सोढी स्रिस्टि सकल तारण कउ
अब गुर रामदास कउ मिली बडाई।।

SIKHBOOKCLUB.COM

(अंग १४०६)

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

परम सम्मानयोग्य सतसंगी-जनो! आप जी ने भट्ट कीरत साहिब जी की ज़ुबान से उच्चारण किया हुआ गुरु रामदास कृपालु जी की प्रशंसा में जो सवय्या है, इसका पाठ श्रवण किया है। इसका संक्षेप भाव है कि आदि-गुरु धन्य गुरु नानक साहिब जी ने उस निरंजन परमात्मा वाहिगुरु जी के नाम को जाना और उन्होंने ध्यान लगाकर अपने भीतर की सोच को पूर्ण रूप से टिकाकर उस परमात्मा की प्रेम-भक्ति की। गुरु नानक साहिब जी की की हुई प्रेम-भक्ति का आदर हजूर के अंग-संग रहने वाले धन्य गुरु अंगद साहिब जी एक समुद्र की तरह विशाल हो गए और गुरु अंगद साहिब जी ने आए हुए जिज्ञासुओं पर शब्द-सुरति के अभ्यास की वर्षा कर दी।

हमारी एक ज़ुबान गुरु अमरदास जी की कथा को पूर्ण रूप से वर्णन नहीं कर सकती। कहते हैं, इन तीन पातशाहियों की दया

और आदर अब धन्य गुरु रामदास पातशाह सोढी सुलतान गुरु नानक साहिब जी के भक्ति के ख़ज़ाने के मालिक बने और अब इस जगत-जलंदे को परमात्मा के नाम की दातें बांटने के लिए गुरु रामदास पर दया करते हैं। भट्ट कीरत साहिब ने आज के इस अमृत वचन में सबसे पहले आदि-गुरु धन्य गुरु नानक साहिब सच्चे पातशाह जी की एक मन होकर प्रेम-भक्ति का वर्णन किया है। पहला वचन भट्ट साहिब ने कहा :

नानकि नामु निरंजन जान्यउ

धन्य गुरु नानक साहिब कृपालु जी ने उस परमात्मा के नाम को जान लिया।

कीनी भगति प्रेम लिव लाई।। *(अंग १४०६)*

धन्य गुरु नानक साहिब जी ने एक मन होकर ध्यान लगाकर अपने भीतर के पूर्ण टिकाव में उस परमेश्वर वाहिगुरु जी की भक्ति की।

SIKHBOOKCLUB.COM

आरम्भता है प्रेमा-भक्ति से। धन्य गुरु नानक साहिब जी ने हठ की बात नहीं की। गुरु नानक साहिब ने मजबूरी में कोई काम करने के लिए हमें उत्साहित नहीं किया। हजूर ने बेरसे कर्म-काण्डों में हमें प्रवृत्त नहीं होने दिया। बाबा फ़रीद साहिब ने ये वचन कहे कि :

तनु तपै तनूर जिउ बालणु हड बलंन्हि।।
पैरी थकां सिरि जुलां जे मूं पिरी मिलंन्हि।।

(अंग १३८४)

अपने तन को तंदूर की तरह गर्म कर देना। कहते हैं, जो हड्डियां हैं, इनको इस तरह जलाऊं कि जैसे तंदूर में लकड़ियां जलती हैं। अगर पांव से चलते हुए थक जाऊं तो मैं पैरों की जगह पर सिर के बल चल पड़ूं। अगर मुझे मेरा प्यारा मिल जाए। सतिगुरु ने हमें बाहर की व्याकुलता से बचा कर, भीतर जुड़ कर, ध्यान लगा कर भक्ति करने की बात सिखाई। सतिगुरु ने साथ ही वचन कर दिया कि :

तनु न तपाइ तनूर जिउ बालणु हड न बालि।।

अपने तन को तंदूर की तरह मत गर्म कर। इन हड्डियों की लकड़ियां बनाकर तंदूर में मत जला।

सिरि पैरी किआ फेड़िआ अंदरि पिरी सम्हालि।।

(अंग १४११)

देख तेरा इन पैरों ने, सिर ने, इस तन के अंगों ने क्या बिगाड़ा है? तू अपनी अंतरात्मा को उस वाहिगुरु जी की प्रेमा-भक्ति से उस तक ले जा। प्रेम एक परमात्मा द्वारा दी हुई वह शक्ति है जो हरेक जीव के अंदर परमात्मा ने दी है।

प्रेम क्या है? गुरु कलगीधर जी के वचन पढ़ते हैं कि :

साचु कहों सुन लेहु सभै
जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाइओ।। *(त्व प्रसादि सवय्ये)*

कोई मनुष्य ऐसा नहीं जिसके अंदर परमात्मा ने प्रेम वाली शक्ति नहीं डाली। केवल मनुष्य नहीं, हर जीव के अंदर परमात्मा ने यह शक्ति डाल दी है। यहां तक कि धरती में पैदा होने वाली फसल, धरती में पैदा हुए पेड़-पौधे, परमात्मा ने इनके भीतर भी उस शक्ति को डाल दिया है। प्रेम एक अंदर की कशिश है। प्रेम एक परमात्मा द्वारा दी हुई वह दात है जो अलग-अलग जीवों में परमात्मा ने अलग-अलग ढंग से डाल दी है। हजूर ने बाणी में भी वचन किया है :

सरवरि कमलु किरणि आकासी बिगसै सहजि सुभाई।।

(अंग १२७३)

कमल का फूल अब सरोवर में है और किरण सूर्य-आसमान में है। दोनों में करोड़ों मीलों की दूरी है। इन करोड़ों मीलों की दूरी होने के बावजूद कमल में परमात्मा ने एक ऐसी शक्ति डाल दी, ताकत डाल दी जो सूर्य को अपनी करोड़ों मील की दूरी होने के बावजूद भी उसकी किरणों को देखकर पूर्ण रूप से खिल जाता है। वह कौन-सी शक्ति है जो इस कमल के फूल को कीचड़ में खिले हुए को पूर्ण रूप से खिला देती है?

भाई गुरदास जी ने अपनी रचना में बहुत सुंदर कुछ उदाहरणें दी हैं कि गुरु की प्रेमा-भक्ति कैसी है? भाई साहिब ने बाणी में यह शब्द कहे हैं कि चांद और चकोर का आपस में कितना फासला है। न तो चकोर को किसी ने स्कूल में या अपने घर में पिंजरे में बंद करके उसको सिखायाा है कि देख, रात को चांद निकलना है और तूने सारी रात चांद को एक-नज़र देखना है। हालांकि चकोर की मृत्यु का कारण भी कई बार चंद्रमा को देखना हो जाता है। परंतु परमात्मा ने चकोर के भीतर चंद्रमा के प्रति एक कशिश पैदा की है, जिस कशिश को अगर कहीं मनुष्य समझे, उस कशिश को ही प्रेम कहा गया है। भाई गुरदास जी कहते हैं—**चंद चकोर परीत है।** चकोर का चंद्रमा से प्रेम है और वह एक-नज़र चांद को देखता है।

चंद चकोर परीत है लाइ तार निहाले।

तार का शाब्दिक अर्थ होता है लगातार देखना। भाई साहिब कहते हैं, देखो परमात्मा ने प्रेम एक जानवर में, एक पक्षी में भी पैदा कर दिया है, लगातार चंद्रमा को देख रहा है।

SIKHBOOKCLUB.COM

चकवी सूरज हेत है मिलि होनि सुखाले।

यहां कहा कि चकवी का प्रेम सूर्य से है। दरअसल, चकवी का प्रेम सूर्य से नहीं, चकवी का प्रेम तो अपने चकवे से है। सूर्य उदय से, प्रकाश से उनका मिलन है और रात्रि के अंधेरे में वे जुदा हो जाते हैं। सारी रात चकवी और चकवा एक-दूसरे को पुकारते रहते हैं। हजूर के प्रिय सिक्ख भाई गुरदास कहते हैं कि उस चकवी और चकवे को, उनका मनुष्य जैसा तन नहीं, बुद्धि नहीं, उनके सोचने की शक्ति नहीं, पर देखो उस चकवी और चकवे के अंदर भी परमात्मा ने कशिश डाल दी है। उतनी देर तक उनको सकून नहीं जितनी देर तक चकवी और चकवा आपस में मिल नहीं जाते। अब वह कौन-सी कशिश है जो सारी रात पुकारते रहे? बाकी साल के महीने पपीहा कभी भी ऊंचा नहीं पुकारता, परंतु आषाढ़ और श्रावण का माह आता है तो

पपीहे के कंठ में राग पैदा हो जाता है। वह बादलों को देखकर ऊंचा-ऊंचा पुकारने लगता है, उसमें भी कशिश है। माँ और पुत्र में भी एक कशिश है। भाई साहिब ने सारी बातें करके कहा है कि सच मानो, चंद्रमा बेवफ़ाई कर सकता है, चकवा और चकवी जुदा हो सकते हैं, माँ और बाप साथ छोड़ कर जा सकते हैं, परंतु परमात्मा का प्रेम ऐसा है जिस हृदय में टिक जाए, सच मानो, यह प्रीति मृत्यु के बाद भी कभी नहीं टूटती। गुरु नानक की प्रीति ऐसी है :

पीर मुरीदा पिरहड़ी ओहु निबहै नाले।।

(भाई गुरदास जी, २७ : ४)

मुरीद की और पीर की जो प्रीति है, वह कभी न टूटने वाली है।

गुरु नानक ने अपनी बाणी में अपने मन को संबोधित करके प्यारे को प्रेम करने के कुछ ढंग हमें बताए हैं। असटपदी के रहाउ के वचन हैं :

मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर।।

SIKHBOOKCLUB.COM

हे मेरे मन! क्या परमात्मा को प्रेम करने के बिना तेरा साथ छूट सकता है? क्या तू परमात्मा को प्रेम करने के बिना बंधनों से मुक्त हो सकता है?

गुरमुखि अंतरि रवि रहिआ बखसे भगति भंडार।।

(अंग ६०)

गुरु के द्वारा यह समझ आती है कि परमात्मा सभी जगह पर मौजूद है और गुरु कृपा करें तो भक्ति के भंडार देता है। अगर इंसान को समझ आ जाए तो तन के भीतर परमात्मा के लिए प्रेम नहीं, प्रेम नहीं तो गुरु ग्रंथ साहिब कहते हैं कि प्रीति के बिना जो मनुष्य के तन हैं मानो वे इस तरह हैं जैसे शमशान भूमि में मुर्दे जल कर कहीं मिट्टी का ढेर हो जाएं। वह तो इस प्रकार है जैसे एक मृत तन है। मृत तन में कोई हरकत नहीं और जिस मनुष्य के तन के अंदर परमात्मा का प्रेम नहीं, सच मानो, वह खाए भी, पीए भी,

बोले भी, परंतु गुरु की दृष्टि में वह एक जिंदा लाश है। हजूर के वचन हम पढ़ते हैं :

अति सुंदर कुलीन चतुर मुखि ङिआनी धनवंत।।

यह सभी गुण होने के बावजूद भी—

मिरतक कहीअहि नानका जिह प्रीति नही भगवंत।।

(अंग २५३)

भाई नंद लाल जी ने अपनी ग़ज़लों में पहला शेयर भी यह कहा है :

हवाइ बंदगी आवुरद दर वजूद मरा

हे इंसान! तू वजूद में तो आया है कि परमात्मा की इबादत करे।

अगर परमात्मा की बंदगी नहीं थी करनी तो फिर इस तन में आने का क्या लाभ? कहने लगे, फिर ऐसे ही आसमान के नीचे अपनी ज़िन्दगी के दिन व्यतीत कर रहा है, बंदगी करके ही ज़िन्दगी है। अगर बंदगी नहीं, फिर ज़िन्दगी नहीं।

SIKHBOOKCLUB.COM

वगरना ज़ौकि चुनीं आमदन न बूद मरा।

(भाई नंद लाल, ग़ज़ल १)

अगर उस परमात्मा की इबादत नहीं तो परमात्मा! मुझे इस तन में रहने की कोई रुचि नहीं। क्योंकि तेरी बंदगी की रुचि से ही मैं जी रहा हूं।

हम बाबा जी की बाणी से पूछ लें कि कैसी प्रेमा-भक्ति उन्होंने की। उन्होंने बीच में प्रमाण दिया है :

मन रे किउ छूटहि बिनु पिआर।। *(अंग ६०)*

बाबा फ़रीद, अभी बचपन है और उनको कुरान जुबानी याद हो गया; अभी बचपना है और कितना-कितना वक्त भगवान की बंदगी में लीन रहते हैं। आखिर वह कैसी परम अवस्था मिली कि

जिस दिन धरती पर पड़ी हुई मिट्टी अपने मुंह में डाली तो उस मिट्टी में से शक्कर जैसा स्वाद आ गया। क्यों? अपना अंदर इतना मीठा हो चुका था। हम कहेंगे मिट्टी मीठी हो गई। धरती पर मिट्टी मीठी नहीं हुई, वास्तव में बाबा जी की जुबान की मिठास से मिट्टी भी मीठी हो गई। वे स्वयं शक्कर के भंडार हैं। उस महापुरुष ने कहा, यौवन चला जाए प्रीति के बिना, जवानी चली जाए प्रेम के बिना तो अंदर को दुख महसूस होता है। अपने अंतिम वक्त में भी वह महापुरुष भगवान की बंदगी में लीन है और नमाज़ अदा कर रहा है। अचानक मूर्छित हो गए। बेहोश होकर धरती पर गिर गए। प्रणाम पूरी तरह नहीं कर सके। मुरीदों ने बाबा फ़रीद साहिब जी को संभाला। संभालने के बाद जब उन्होंने बाबा जी के पैरों के तलवों को दबाया, उनके हाथ-पैर दबाए तो वे उठ कर बैठ गए और पहला प्रश्न था उस महापुरुष का कि कैसी प्रीति है? कहने लगे, नमाज़ अदा हो गई। मेरा नियम जारी रहा। बैठे हुए मुरीद ने कहा, बाबा जी! नमाज़ पूर्ण रूप से पूरी न हो सकी, आप एक दम धरती पर गिर गए। कहने लगे लाओ जल, कराओ मेरा वुजू, मैं वापिस ख़ुदा की याद में जुड़ना चाहता हूं।

वहां किसी ने प्रश्न कर दिया कि बाबा जी, सारी ज़िन्दगी तो ख़ुदा के सिमरन में व्यतीत हुई, अब अगर नमाज़ नहीं हो रही, तन मुसीबत में है तो आज आप रहने दो। उन्होंने उस वक्त पीछे मुड़कर कहा—क्या तुम्हें पता है, मेरा अंदर कहां खड़ा है? तुम्हें केवल मेरी बाहर की क्रिया दिखाई दी। जल लाओ ताकि वुजू करके मैं परमात्मा की याद में जुड़ जाऊं। वे महापुरुष कह रहे हैं कि प्रीति के बिना तो समय व्यर्थ है। प्रेम मजबूरी-कर्म नहीं है, प्रेम तो एक अंदर की कशिश है।

बाबा नानक जी ने स्वयं को पूर्ण रूप से प्रभु के चरणों में समर्पित कर दिया। पूछा, सच्चे पातशाह! यह तो आप कह रहे हो कि प्रेम के बिना मुक्ति नहीं, पर यह बताओ कि कैसा प्रेम करें?

कृपालु दाता जी कहते हैं, कमल का फूल पानी में खिला है। पानी में छोटी-छोटी तरंगें पैदा हुईं। जब पानी की लहर हवा से तीव्र हुई और कमल के छोटे-से पौधे की जड़ को लगी तो कमल जड़ तक कांप गया। लहर कभी उसको धक्का देकर कभी दाएं और कभी बाएं करे। लहरें सारा दिन उसको अपनी ठोकरों से धकेलती रहीं। बाबा जी ने वहां कहा, मन! प्रेमा-भक्ति करनी है तो इस कमल के फूल से सीख कि प्रभु को कैसे प्रेम करते हैं। प्रेम कभी गिला-शिकवा नहीं करता। जो इंसान मित्रता करके भी गिला-शिकवा करता है, वह कभी प्रेमी नहीं हो सकता।

हजूर ने पूछा कमल के फूल को और बाणी में ये बातें दर्ज कीं कि हे कमल के फूल! तुझे परमात्मा ने सबसे पहले यह गुण दिया है कि तू कीचड़ में रह कर भी स्वच्छ है। दूसरा गुण तुझे परमात्मा ने दिया है कि तेरे पास कोमलता है। तीसरा गुण तुझे दिया है कि तेरे परस सुगंध है। चौथा गुण दिया है कि तुझमें कशिश है। तू करोड़ों मील बैठे सूर्य से भी बातें करता है। जिसके पास सुगंध हो, जिसके पास स्वच्छता हो, जिसके पास सुंदरता हो, जिसके पास दूर टिके हुए प्रेमी को भी प्यार करने की जाच हो, क्या ज़रूरत है इस मलीन जल में ठोकरें खाने की? यह जल सुबह उठता है, लहरें बन कर तेरी इस जड़ को ठोकरें मारता है। छोड़ दे इस पानी को।

हजूर कहते हैं कि उस कमल के फूल ने उत्तर दिया, वास्तव में इस पानी की बदौलत ही मेरा जीवन है। जिस दिन मैंने पानी को छोड़ दिया, उस दिन जो गुण आपने गिनाए हैं, उनमें से एक भी गुण नहीं रहेगा। पानी को छोड़ने की देर है कि मैं स्वयं खत्म हो जाऊंगा। फिर क्या हुआ अगर पानी ठोकरें मारता है, आखिर जो आपने गुण बताए हैं, यह गुण भी मुझे पानी ने दया से दिए हैं।

हजूर ने कहा, हे मनुष्य! प्रेमा-भक्ति का अर्थ है कमल की तरह तू प्यार कर। कैसे? परमात्मा ने तुझे सुंदर तन दिया है, परमात्मा ने तुझे गुणों की सुगंध दी है, परमात्मा ने तुझे मन दिया है संसार

में स्वच्छ रहने के लिए, परमात्मा ने तुझे शक्ति दी है। करोड़ों जन्मों की दूरी के बावजूद तू मन से उसके चरणों को पकड़कर प्रसन्नता प्राप्त कर सकता है। जिस परमात्मा ने कमल की तरह तुम पर इतनी दया की हो ताकि थोड़ा-सा झटका लगे तो सांसारिक और झट से परमात्मा से मुंह मोड़कर, पीठ करके चला जाए तो सच मानो, यह कभी सच्चे प्रेमी की निशानी नहीं होती। प्रेमी तो वह होता है जो ठोकर खाकर भी अपने प्यारे का साथ कभी न छोड़े। गुरु नानक देव जी कहने लगे :

रे मन ऐसी हरि सिउ प्रीति करि जैसी जल कमलेहि।।
लहरी नालि पछाड़ीऐ भी विगसै असनेहि।।

(अंग ५९)

मेरे बाबा नानक ने इस तरह प्रीति की। अगर किसी ने दीवाना कहा, मस्ताना कहा, पागल कहा, सब कुछ सहन करके भी मेरे गुरु नानक ने अपने प्रिय परमात्मा के नाम को फिर भी प्रेम किया। बाबा जी ने बाणी में एक बात कही—हे जुबान! तुझे बातें अच्छी लगती हैं, तुझे भोजन पानी अच्छा लगता है। जब कभी 'सतिनाम वाहिगुरु' की बात चले तो ऐसे लगता है जैसे तुम्हारी मृत्यु हो गई है। अगर बड़े से बड़ा झगड़ा करना हो तो जुबान को बिगाड़ना पड़ता है और वह आग लगाती है, केवल तेरी तो छोटी-सी जुबान हिलाने की देर है और वह कई खानदानों के झगड़े आपस में करा देती है। अगर जुबान इतनी दूरी डाल सकती है तो इसके पास शक्ति है कि अगर भगवान का जाप करने लगे तो करोड़ों जन्मों की दूरी भी मिटा सकती है। अगर कोई गुरु नानक देव जी से पूछता है कि सच्चे पातशाह! प्रभु को पाने का क्या मार्ग है? सच्चे पातशाह कहते हैं यह मार्ग है—

इक दू जीभौ लख होहि लख होवहि लख वीस।।

इतनी भक्ति की, एक जिह्वा से लाख जिह्वा हो गईं। लाख से बीस लाख हो गईं और उस बीस लाख जिह्वा में से एक-एक जिह्वा

SIKHBOOKCLUB.COM

से लाख-लाख बार जगत के मालिक का नाम लिया और बाबा नानक ने कहा कि इतनी कमाई भी तू करे तो जगत के मालिक को तू मिल सकता है। यह मार्ग है परमात्मा को पाने का और अगर भीतर से खुश्क है तथा बाहर से प्रेमा-भक्ति वाले की नकल करता है तो फिर :

सुणि गला आकास की कीटा आई रीस।।
नानक नदरी पाईऐ कूड़ी कूड़ै ठीस।। *(अंग ७)*

प्रेमा-भक्ति उसकी दया-दृष्टि से मिलती है। ठीस का शाब्दिक अर्थ होता है झूठी बात कहना। अगर उसकी दया-दृष्टि से तेरे पास प्रेमा-भक्ति नहीं, ऐसे धरती पर रेंगने वाले कीड़े, तू आसमान में उड़ने वाले पक्षियों की नकल मत कर। प्रेमा-भक्ति में अपना सब कुछ कुर्बान किया जाता है।

ता ते अंगदु अंग संगि भयो
साइरु तिनि सबद सुरति की नीव रखाई।।

SIKHBOOKCLUB.COM

इसको भाई गुरदास जी ने अपनी रचना में कहा है कि प्यारिओ! गुरु नानक साहिब ने दया की कि गुरु-उपदेश में रहना है। अब धन्य गुरु अंगद साहिब शब्द-सुरति का खेल नहीं बरताते। भाई पारो जैसा आता है। जब आकर पूछता है, महाराज! हंस और परम हंस में क्या अंतर है? बाबा नानक जी का प्रकाश गुरु अंगद देव जी वर्षा करके कहते हैं कि पारो! हंस होते हैं जो दूध-पानी को अलग करते हैं और परम हंस होते हैं जो जीते-जी अपने तन में से शुद्ध हो जाते हैं। तो वह चला गया। कहता है कि फिर हमें परम हंस नहीं बनना। बाबा जी ने दया की और गुरु अमरदास के वक्त परम हंस बना। जोध ब्राह्मण रसोइया था। इसने लंगर की इतनी सेवा की कि माता खीवी जी के साथ दो सिक्ख और थे जो सेवा करते थे, एक भाई किदारा और दूसरा भाई जोध।

मेरे गुरु अंगद साहिब कैसे वर्षा करते हैं नाम की। भाई जोध आया और इसने बाणी सुनी। मन में आया, लंगर की सेवा करूं।

माता खीवी जी के साथ भाई जोध और भाई किदारा सारा दिन लंगर में रहते थे। भाई जोध के मन में कई बार ख्याल आ जाना कि ये नीच जातियों वाले भी यहां आए हैं, क्योंकि वह ब्राह्मण था। एक दिन मन में आया, हे मन! अगर बर्तन साफ करके भी, लकड़ियां जला कर भी, सारा दिन चूल्हे के सामने बैठ कर भी तेरी मैल न गई तो कब जाएगी? कहने लगा, अभी भी अहंकार की मैल उठाए हुए है। वहां अपने मन को कहते हैं कि तू अपवित्र है, तुझे कोई अधिकार नहीं कि तू शुद्ध भोजन खाए। कल के उपरांत जो जाति वाला भूत भीतर है, इसको अशुद्ध भोजन दिया जाएगा। सभी बर्तन उठाए परंतु कुछ पत्तल उठाकर एक तरफ रख देनी। जब सभी चले जाएं, जो पत्तलें छुपाकर रखी होंगी उसमें से कुछ-मात्र चुन कर एक स्थान पर एकत्र करके खा लेना। माता खीवी जी ने देखा कि सारा दिन सेवा करता है और लंगर कहां से खाता है? आज देखा कि जब सारे चले गए, दोपहर के लंगर के बाद छुपकर सारी पत्तलों में से लेकर स्वयं खाए। माता खीवी जी ने बाबा बुड्ढा जी को कहा कि बाबा जी, भाई जोध सारा दिन सेवा करता है परंतु पंगत में लंगर नहीं खाता। बाबा जी नहीं माने।

गुरु अंगद साहिब अचानक एक दिन आए। देखा कि वह सज्जन पत्तल में से छोटे-छोटे तिनके उठाकर खा रहा है। सतिगुरु कहने लगे, भाई जोध! यह क्या कर रहे हो? एक दम कांप गए। हाथ जोड़कर उठ गए। कहने लगे, दाता! भीतर अशुद्ध है और अशुद्धों को अशुद्ध भोजन ही चाहिए। आप पंगत में क्यों नहीं बैठते? कहने लगे कि भीतर जाति वाला भूत बैठा है और जब कोई साथ बैठता है तो कहता है कि मैं ब्राह्मण हूं, मैं ऊंचा हूं। कहने लगे, इसको नीच रहने दो, इसको तब समझ लगेगी जितनी देर तक पत्तलों में नहीं रहता। सच्चे पातशाह प्रसन्न हुए। माता खीवी जी के पास आए, सिर पर हाथ रखकर कहने लगे, भाई जोध, तू सच्चा है। आज के बाद लंगर में बैठकर भोजन छकना है। जब इतना शब्द सिर पर हाथ रखकर कहा तो भाई जोध देवता बन गया। सिर से पांव तक

नाम में भीग गया। जो गुरु अंगद देव के पास आया, उन्होंने वर्षा की।

गुर अमरदास की अकथ कथा है

भट्ट कहते हैं कि अमरदास जी की कथा बयान से रहित है। कैसे अकथनीय है?

इक जीह कछु कही न जाई।।

हमारी एक जुबान है। क्या बयान करेंगे, गुरु अंगद साहिब की कथा अकथनीय है? हम नहीं कर सकते। अब गुरु अमरदास जी ये बरकतें आपके पास आ गई हैं।

सोढी स्रिस्टि सकल तारण कउ
अब गुर रामदास कउ मिली बडाई।। *(अंग १४०६)*

गुरु रामदास जी को सारे संसार के कल्याण के लिए यश प्राप्त हुआ। यह यश मिला कि आप सारे संसार को नाम का नूर दो। सतिगुरु रहमत करें।

SIKHBOOKCLUB.COM

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

गुरि अमरदासि करतारु कीअउ

सतिगुरि नानकि भगति करी
इक मनि तनु मनु धनु गोबिंद दीअउ।।
अंगदि अनंत मूरति निज धारी
अगम ग्यानि रसि रस्यउ हीअउ।।
गुरि अमरदासि करतारु कीअउ
वसि वाहु वाहु वाहु करि ध्याइअउ।।
स्री गुर रामदास जयो जय जग महि
तै हरि परम पदु पाइयउ।। २।।

SIKHBOOKCLUB.COM

(अंग १४०५)

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

परम सम्मानयोग्य सतसंगीजनो! आज के इस पावन पवित्र सवय्ये के भीतर भट्ट जी ने धन्य गुरु रामदास सच्चे पातशाह जी की प्रशंसा करते प्रथम तीन गुरु साहिबान जी की जो कृपा गुरु रामदास जी पर बीत रही है, उसका वर्णन किया है। धन्य गुरु रामदास सच्चे पातशाह जी की संसार में बहुत प्रशंसा हो रही है। उन्होंने उस हरि-प्रभु के साथ अभेद होकर इस परम पदवी को प्राप्त कर लिया है। एक प्रश्न उठता है कि यह परम पद, यह हरि-रूप गुरु रामदास सच्चे पातशाह कैसे हो गए? यहां फिर भट्ट जी ने पहले गुरु नानक साहिब कृपालु जी के संबंध में यह वचन कहा कि सतिगुरु गुरु नानक साहिब जी ने उस परमात्मा जी की भक्ति एक मन होकर की। अपना तन, मन, धन गोबिंद जी के चरणों में समर्पित किया। दूसरा वचन किया गुरु अंगद साहिब

जी ने धन्य गुरु नानक साहिब जी की कृपा का सदका उस अपार और असीम परमेश्वर को अपने हृदय के भीतर धारण कर लिया और इन्होंने परमेश्वर के नाम का रस अपने हृदय में टिका लिया है। तीसरा वचन धन्य गुरु अमरदास जी के संबंध में किया है कि गुरु अमरदास जी ने अपनी जुबान से वाहिगुरु-वाहिगुरु कह कर उस परमेश्वर को धन्य-धन्य कह कर करतार को पा लिया है, उस करतार को अपने वश में कर लिया है। गुरु अमरदास जी की कृपा के कारण गुरु रामदास जी की सारे संसार में जय-जयकार होने लगी। गुरु रामदास जी ने उस परमात्मा को पा लिया है।

भट्ट जी ने पहला वचन किया है :

सतिगुरि नानकि भगति करी
इक मनि तनु मनु धनु गोबिंद दीअउ।। *(अंग १४०५)*

धन्य गुरु नानक साहिब सच्चे पातशाह जी ने उस परमात्मा की भक्ति एक मन होकर की। अपना मन, तन, धन सब कुछ गोबिंद के चरणों में समर्पित कर दिया। धन्य गुरु नानक साहिब जी द्वारा किए परिश्रम के संबंध में गुरु ग्रंथ साहिब जी की अमृत बाणी में भी वचन है। हजूर का वचन आता है :

नाराइन नरपति नमसकारै।।

जो धरती के मनुष्यों का स्वामी है, उसके चरणों में प्रणाम है।

ऐसे गुर कउ बलि बलि जाईऐ आपि मुकतु मोहि तारै।।

(अंग १३०१)

आप मुक्त हैं और जो जिज्ञासु गुरु के चरणों से जुड़ता है, उसका भी कल्याण कर देते हैं। तीसरा वचन गुरु ने स्वयं भक्ति की और जो भंडार हमारे पास है, वास्तव में यह बाबा नानक जी द्वारा किए हुए अटूट परिश्रम के कारण है।

मंनै पावहि मोखु दुआरु।।
मंनै परवारै साधारु।।
मंनै तरै तारे गुरु सिख।।

SIKHBOOKCLUB.COM

सतिगुरु स्वयं पार हुआ है और जो जीव उनके चरणों को स्पर्श करते हैं, उनका कल्याण करने में समर्थ है।

मंनै नानक भवहि न भिख।।
ऐसा नामु निरंजनु होइ।।
जे को मंनि जाणै मनि कोइ।। *(अंग ३)*

गुरु नानक साहिब कृपालु जी ने स्वयं नाम को माना, स्वयं नाम की प्राप्ति की और उस बाबा नानक के परिश्रम के कारण गुरु रामदास कृपालु जी की जय-जयकार हो रही है। मारू राग के दो शब्द हैं, विशेष तौर पर बाबा नानक जी के उद्यम संबंधी और इसमें उन्होंने अपने जीवन से संबंधित वचन उच्चारण किए हैं। वे शबद हम पढ़ते हैं कि :

तेरे लाले किआ चतुराई।।

हे परिपूर्ण परमेश्वर वाहिगुरु जी! तेरे इस सेवक के पास कैसी समझदारी है? यहां चतुराई का अर्थ है, मेरे मालिक जी! तेरे इस सेवक के पास कोई बुद्धि नहीं। क्यों? कहने लगे, जो तेरा आदेश है मेरी समझ में नहीं आता।

साहिब का हुकमु न करणा जाई।।

भक्ति करने पर यह शब्द इस्तेमाल किए कि :

मुल खरीदी लाला गोला मेरा नाउ सभागा।।

हे प्रभु! मैं तेरे दर पर बिक चुका एक गुलाम हूं, परंतु मैं इस गुलामी में भी अपना भला देखता हूं। खरीदा किसने है? कौन-सा स्थान था जहां मुझे बेचा गया या तुम्हें खरीदा गया? बाबा जी ने वहां वचन किया, कहने लगे :

गुर की बचनी हाटि बिकाना

गुरु के वचनों से मैं बिक गया हूं, गुरु के दर पर मैंने स्वयं को बेच दिया है। प्यारिओ! यहां बेचने का भाव हम समझें। कई

SIKHBOOKCLUB.COM

बार मैं अर्ज़ करता हूं कि जो तन, मन, धन देना है वास्तव में यह अपने आप को गुरु के दर पर बेच देना है। जो खरीद लेता है फिर उसका ही उस पर अधिकार है, जिसने बेचा है उसका कोई अधिकार नहीं। जो गुरु के दर पर बिक चुके हैं वे कभी अपनी मर्ज़ी नहीं करते। बिके हुए केवल वही बात स्वीकार करते हैं जो उनको खरीदने वाला कहता है। साहिब ने कहा, भाग्यवान हूं, गुरु ने मुझे अपने दर पर खरीद लिया है।

प्यारिओ! कहीं गुरु के दर पर बिकने का ढंग आ जाए। समाज में मनुष्य बिकता है किसी के हुस्न पर। कई बार अपनी ज़मीर को मार कर इंसान को प्रसन्न करने के लिए स्वयं को उसके लिए बेच देना है परंतु कितना अच्छा हो अगर अपना भीतर गुरु के दर पर बेच दे।

मुल खरीदी लाला गोला मेरा नाउ सभागा।।
गुर की बचनी हाटि बिकाना जितु लाइआ तितु लागा।।

SIKHBOOKCLUB.COM

(अंग ९९१)

तुमने जहां खड़ा कर दिया मैं वहां ही खड़ा हूं। परमात्मा मेरी कोई बुद्धि नहीं कि तेरे हुक्म का मैं अंत पा सकूं। विचार और धीरज भी तेरे गुलाम हैं। मेरे विचार अब अपनी मर्ज़ी नहीं करते। तेरे चरणों पर मैं पूर्ण रूप से स्वयं को समर्पित करता हूं। तन, मन, धन गोबिंद जी को देकर भी, इतनी प्राप्ति करके भी बाबा नानक कह रहे हैं :

लूण हरामी नानकु लाला बखसिहि तुधु वडिआई।।
आदि जुगादि दइआपति दाता तुधु विणु मुकति न पाई।।

(अंग ९९१)

तू आदि जुगादि दया का भंडार है। मैं तेरे दर पर चाहे बिका हूं पर यकीन करो परमात्मा! तूने अपने वचनों से मुझे खरीद लिया है और मैंने तेरे द्वारा खरीदे हुए की कीमत नहीं जानी। तेरे दर का नमक खाकर भी योग्यता नहीं जानी। तेरे दर का नमक खाकर भी हराम कर दिया है, तू कृपा करके मुझे अपने चरणों में निवास दे दे।

बाबा नानक का जो परिश्रम है, उसका कोई विशेष आधार है। हज़ूर अपनी ज़िन्दगी में जिन-जिन को मिले, बस एक ही आवाज़ दी कि नाम के बिना, सिमरन के बिना भीतर का पार उतारा नहीं। भाई गुरदास जी ने अपनी रचना में मेरे बाबा नानक जी द्वारा किए हुए परिश्रम का वर्णन किया है। वह वचन है कि **पहिला बाबे पाया बखसु दरि** पहले बख्शिश प्राप्त की और फिर उन्होंने गोबिंद की कितनी प्राप्ति की?

पहिला बाबे पाया बखसु दरि पिछोदे फिरि घालि कमाई।
रेतु अक्कु आहारु करि रोड़ा की गुर कीअ विछाई।
भारी करी तपसिआ वडे भागि हरि सिउ बणि आई।

(वार १ : २४)

तपस्या की, परिश्रम किया तो ही उस हरि-परमात्मा के साथ बाबा नानक की बन गई, उसका ही रूप हो गए। गुरु नानक देव जी उस परमात्मा की सेवा करने वाले हैं। भक्ति कर-कर के बाबा नानक उसके दर पर स्वीकृत होकर परमात्मा जैसे हो गए। हमारी एक जुबान उस गोबिंद के भक्त की क्या प्रशंसा कर सकती है? बस, इतना ही कह सकती है, बाबा नानक! तुझ पर कुर्बान जाऊं, जो इतना परिश्रम करके ब्रह्म के समान हो गए। गुरु नानक के संबंधी बहुत प्यारे वचन कहते हैं कि प्रभु की दरगाह में आदेश अनुसार अमृत का प्याला मिला है। इस घटना को वेईं नदी में स्नान करने वाली घटना के समान बताते हैं। भाई गुरदास जी कहते हैं कि बाबा के नाम का प्याला लिया और उस नाम के प्याले को स्वयं पिया। मैं कहता हूं कि सिक्खा! जो तू नाम की बूंद का रस लेता है। ये वे प्याले हैं जो परमात्मा के घर में से बाबा नानक ने स्वयं गटगट करके पीए और यही नाम के प्याले हमारे लिए अपने दर पर, घर पर दे गए। झट से कहा, तू नाम जप, सिमरन कर, दृढ़ सेवा-सिमरन कर, संसार में पवित्र रहने वाले गृहस्थी-उदासी सिक्खों को पैदा कर। उस समय बाबा नानक जी ने प्रणाम किया। उस साखीकार

SIKHBOOKCLUB.COM

ने दो वचन आगे कहे। कहता है कि बाबा नानक को परमेश्वर ने इसका परिश्रम देखकर यह शब्द कहे थे, कहने लगे— नानक! जिस ऊपर तेरी नदरि तिस ऊपर मेरी नदरि। इतनी प्राप्ति की कि जिस पर आप दया करोगे उस पर मेरी कृपा हो जाएगी। नानक जिस पर तेरा करम और जो गुरु रामदास पर गुरु नानक का करम है तो गुरु रामदास की जय-जयकार होगी। साथ में वचन कहे—**मेरा नाउ पारब्रहम परमेसर, तेरा नाम गुर परमेसर।** यह तो पदवी मिली क्योंकि :

सतिगुरि नानकि भगति करी इक मनि
तनु मनु धनु गोबिंद दीअउ।। *(अंग १४०५)*

अगर नाम जप-जप कर पूछें कि दाता, क्या अब तृप्ति हो गई? अब नहीं जपना? बाबा नानक जी कहते हैं, जिसको प्यास लग जाए यह अंतिम श्वास तक भी मांग करता रहता है। परमात्मा रहमत करे कि किसी के अंदर नाम जपने की प्यास पैदा हो जाए।

हज़ूर ने पूछा, बाबा जी! जो आप तपस्या करते हो, जप करते हो, क्या इसकी कोई अवधि है? सतिगुरु नानक फिर उत्तर देते हैं कि जितनी भी वर्षा हो जाए, कभी मारुस्थल के टीले संतुष्ट होकर कहेंगे कि आज के बाद हमें वर्षा की ज़रूरत नहीं। मारुस्थल के टीले कभी संतुष्ट नहीं। इंसान मृत्यु के किनारे आया हो, परंतु अपनी पदवी को छोड़ने के लिए कभी तैयार नहीं। पदवी की प्यास उसकी नहीं मिटती। सच मानो, जिसके अंदर परमात्मा को जपने की इच्छा पैदा हो गई और अगर कहे कि वह तृप्त हो गया तो सवाल ही नहीं पैदा होता, वे तो अखिरी श्वास तक कह रहे हैं कि :

करि बंदे तू बंदगी जिचरु घट महि साहु।।

(अंग ७२४)

वे आखिरी श्वास तक भी शब्द प्रयोग कर रहे हैं कि :

ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस।।

(अंग १३८२)

अंतिम समय तक भी वे क्या नाम को छोड़ देते हैं? सतिगुरु कहने लगे :

मारू मीहि न त्रिपतिआ अगी लहै न भुख।।
राजा राजि न त्रिपतिआ साइर भरे किसुक।।
नानक सचे नाम की केती पुछा पुछ।। *(अंग १४८)*

नाम जपा और कहने लगे, सब कुछ भूल जाए परंतु मेरा वाहिगुरु मुझे न भूले और वचन किया :

साचे नाम की लागै भूख।।
उतु भूखै खाइ चलीअहि दूख।। *(अंग ९)*

हम शब्द एक मन इस्तेमाल करते हैं, परंतु एक मन का पता नहीं, एक अनुभव में कितने टुकड़े हो जाते हैं। एक अनुभव में कोई टुकड़ा पुत्र की तरफ चला जाता है, कोई पुत्रियों की तरफ चला जाता है, कोई टुकड़ा ज़मीन-जायदाद की तरफ चला जाता है, कोई टुकड़ा दुश्मन की तरफ चला जाता है। हम कीर्तन के उपरांत बातें कर सकते हैं, कथा के उपरांत हंस-खेल सकते हैं, परंतु सच मानो, अगर अंदर से रस आना शुरू हो जाए। क्या गुरु नानक साहिब जी कीर्तन के उपरांत अंदर का विस्तार बना बैठते थे? कीर्तन उनकी साधना थी और नेत्र बंद करके जुड़ जाना उनकी प्राप्ति थी। जब कोई भीतर का रस मानता है और घंटा-दो घंटे नेत्र बंद करके बैठता है तो उसकी आंखें परत कर यत्न करे खोलने के लिए, खुलती नहीं।

प्यारिओ! पाखंड करने वाला पाखंड करके नेत्रों को बंद करता है, उसकी बंद आंखें भी खुली हैं। परंतु यकीन करो, जो भीतर के रस में जुड़ जाता है, वह खोलने का प्रयास भी करे तो जबरदस्ती नेत्र स्वयं ही बंद हो जाते हैं। कहते हैं, इस ढंग से ज़िन्दगी जीओ कि परमात्मा की तरफ से तुम्हारी हार न हो। लोग सोचते हैं कि हमने परमात्मा की तरफ से, संसार की तरफ से जीत कर जाना है। वास्तव में लोग संसार से भी पराजित हो जाते हैं और भगवान

SIKHBOOKCLUB.COM

से भी पराजित हो जाते हैं। मूर्खों को गुरु नानक के आत्मिक रस का ज्ञान नहीं। उन्होंने फिर हजूर के लिए कुछ शब्द प्रयोग किए पर परमात्मा की भक्ति एक मन करने वाले धन्य गुरु नानक साहिब जी ने अपनी जुबान से तीन बार शब्द कहे भूत, बेताल और साधारण इंसान। बाबा नानक ने तीनों का उत्तर दिया। कहने लगे, कोई कहे शैतान, गुरु नानक भक्ति करते हैं। मूर्ख इंसान को समझ नहीं कि गुरु नानक साहिब जी किस जगह पर किस अवस्था में से निकल पड़े हैं। समझदार ही गुणवान की विशेषता जानता है। जिसको कोई समझ नहीं उसके लिए जितनी मूल्यवान वस्तु हो, उसकी कोई विशेषता नहीं। बाबा जी कहने लगे :

तउ देवाना जाणीऐ जा भै देवाना होइ।।
एकी साहिब बाहरा दूजा अवरु न जाणै कोइ।। २।।
तउ देवाना जाणीऐ जा एका कार कमाइ।।
हुकमु पछाणै खसम का दूजी अवर सिआणप काइ।। ३।।
तउ देवाना जाणीऐ जा साहिब धरे पिआरु।।
मंदा जाणै आप कउ अवरु भला संसारु।।

(अंग ९९१)

गुरु नानक के संबंधी भाई गुरदास जी ने एक वचन कहा कि :

बाबे कीती सिधि गोसटि सबदि सांति सिधां विचि आई।

प्राप्ति स्वयं की। जो शब्द को प्राप्त करने वाले थे, उनके साथ बातचीत की। क्या हुआ ? सिद्धों के भीतर टिकाव मिल गया। उनको शांति मिली।

जिणि मेला सिवराति दा खट दरसनि आदेसि कराई।

बाबा नानक ने शिवरात्रि के मेले को विजय किया। मेला जीतने के उपरांत जितनी प्राप्ति बाबा नानक ने की थी, चर्चा हुई, सारा मेला बाबा लूट कर ले गया, क्योंकि जहां बाबा नानक के चरण पड़ते हैं, सारी की सारी दुनिया ही उधर मुड़ जाती है। आज इन सिद्धों ने बाबा नानक के चरण पकड़ कर कह दिया :

SIKHBOOKCLUB.COM

सिधि बोलनि सुभि बचनि धनु नानक तेरी वडी कमाई।

(वार १ : ४४)

जो तेरा जाप है, जो तेरी प्राप्ति है, साधना है बाबा नानक! तू धन्य है, तेरी प्राप्ति का कोई अंत नहीं।

अंगदि अनंत मूरति निज धारी

धन्य गुरु अंगद साहिब कृपालु जी ने उस अनंत परमात्मा की तस्वीर को अपने भीतर धारण कर लिया।

अगम ग्यानि रसि रस्यउ हीअउ।। *(अंग १४०५)*

असीम ज्ञान के द्वारा उस नाम के रस को अपने हृदय में धारण कर लिया।

रात्रि का चौथा पहर आता है, जिसको हम प्रातःकाल कह लें। प्रातःकाल में तारे चमकते हैं। जो रस बाबा नानक ने माना, वह गुरु अंगद साहिब की झोली में दे गए। बाबा नानक जी ने मारू राग को आरम्भ करते हुए श्लोक कहा कि :

SIKHBOOKCLUB.COM

साजन तेरे चरन की होइ रहा सद धूरि।।
नानक सरणि तुहारीआ पेखत सदा हजूरि।।
पिछहु राती सदड़ा नामु खमस का लेहि।।

(अंग ९८९)

नाम जपने वालों को गुरु पुकार-पुकार कर उठा रहा है।

खेमे छत्र सराइचे दिसनि रथ पीड़े।। *(अंग ९८९)*

जिन्होंने रात बंदगी की उनके लिए परमात्मा ने छत्र, रथ, स्थान, घोड़े, उनके लिए संसार का प्रत्येक सुख पैदा कर दिया। कहने लगे, प्यारिओ!

जिनी तेरा नामु धिआइआ

जिसने प्रातःकाल तेरे नाम का ध्यान किया :

तिन कउ सदि मिले।। *(अंग ९८९)*

उनको बुला कर बाबा नानक यह दात दे रहा है। जब पूछा है कि :

मुहौ कि बोलणु बोलीऐ जितु सुणि धरे पिआरु।।

तो बाबा जी उत्तर देते हैं :

अंम्रित वेला सचु नाउ वडिआई वीचारु।। *(अंग २)*

जब गुरु अंगद साहिब के भीतर परमात्मा की छाप ठहर गई तो वे इस रात्रि रस में जाकर ठहरे। कहने लगे :

चउथै पहरि सबाह कै सुरतिआ उपजै चाउ।।

गुरु अंगद साहिब भीतर से नाम को सुनते हैं, ध्यान स्थिर है।

तिना दरीआवा सिउ दोसती मनि मुखि सचा नाउ।।

प्रातःकाल स्नान नदियों में करके उनके मन में भी जाप है, मुंह में भी जाप है। वहां गुरु अंगद साहिब कहते हैं कि जो इस जाप को करता है :

SIKHBOOKCLUB.COM

ओथै अंम्रितु वंडीऐ करमी होइ पसाउ।। *(अंग १४६)*

उस वक्त परमात्मा का नाम अमृत-बांटा जाता है। जिन पर परमात्मा की देन हो जाए, उनको यह प्रसाद रूप में अमृत मिलता है। गुरु अंगद साहिब इस नाम को मान कर कहते हैं कि परमात्मा को आंखों के बिना देखा जाता है, कानों के बिना उसको भीतर से सुना जाता है। जिसने आत्मिक सफ़र पर चलना है, उसको स्थूल पांव की ज़रूरत नहीं, जिसने भीतर से यात्रा करते चलना है, वह बाहर के सूक्ष्म हाथों की जगह भीतर वाले हाथों से सेवा कर रहा है। नेत्रों के बिना, इस नेत्रों के रस से ऊपर उठ कर भीतर का नेत्र खोलें जिससे प्यारे के दर्शन किए जाते हैं। तेरे भीतर एक श्रोत है जिससे तू सुन सकता है। तेरे भीतर नाम की गूंज उठेगी, तुझे सुनाई देगी, साथ बैठकर हो सकता है इसकी न समझ आए। यह पांव चाहे यहां बैठे हैं, तन यहां बैठा है, परंतु भीतर के ज्ञान की यात्रा

इन पैरों के बिना होती है। जो जाप तपस्या की तरफ जाता है, वह अंदर के हाथों से परमात्मा की सेवा करता है।

हज़ूर अंगद साहिब ने इस रस को माना है कि इस ढंग से परमात्मा की प्राप्ति है। करतारपुर बाबा लहणा जी गए। जिस दिन गए थे, एक चटाई, एक नमक की पोटली लेकर गए। आप सामान रखकर खेतों में गुरु नानक साहिब के पास पहुंचे थे। घास तोड़ते हुए बाबा जी को देखकर खेतों में घुस गए भाई साहिब भाई लहणा जी। एक दम ही धान के पौधे को उखाड़ने लगे। मेरे बाबा नानक ने आवाज़ दी, पुरखा! यह क्या कर रहा है? हंस कर कहने लगे, मैं भी उखाड़ने लगा हूं। हाथ पकड़ कर कह दिया, कहने लगे, तुझे हमने उखाड़ने नहीं, तुझे तो हमने लगाने के लिए बुलाया है। गुरु जी ने उनको नाम दिया था 'अंगद'। 'अंगद' का शाब्दिक अर्थ है अपने शरीर का अंग। करतारपुर से रवाना होते हुए गुरु जी ने कुछ भेंट उसकी झोली में डाली। केवल एक बार माथा टेका कि पुरखा! तू लहणा और मैं देना भइआ। तू लेने आया, मैंने तुझे देना है। बाबा नानक ने स्वयं द्वारा की हुई प्राप्ति गुरु अंगद साहिब को दे दी।

SIKHBOOKCLUB.COM

खडूर साहिब आए हैं गुरु अंगद साहिब और भीतर आनंद की छाप है। कोई वस्त्र नहीं लेकर आए। क्या लेकर आए? एक जाप लेकर आए, दूसरा बंदगी, सेवा लेकर आए, तीसरा संयम लेकर आए। हे धन्य गुरु अंगद देव सच्चे पातशाह! लोग तेरे पास क्रोधित हुए आते हैं, तू अति शीतल है, तेरे पास बैठकर शीतल हो जाता है। धन्य गुरु अंगद साहिब! तेरे पास नाम के भरपूर भंडार हैं। गुरु नानक साहिब ने एक मन होकर भक्ति की, गुरु अंगद साहिब ने हृदय को रस में टिकाया और बाबा अमरदास जी ने परमात्मा को काबू कर लिया।

गुरि अमरदासि करतारु कीअउ
वसि वाहु वाहु वाहु करि ध्याइयउ।। *(अंग १४०५)*

उसको धन्य-धन्य कह कर उसका सिमरन किया और जब बाबा अमरदास बैठे, अब यह क्या लेकर आए? भंडार आगे बढ़ा है, कम

नहीं हुआ। गुरु अमरदास गोइंदवाल साहिब में बैठे हैं। वहां भट्टों ने एक वचन कहा है, कहते हैं कि गुरु अंगद साहिब सच्चे पातशााह से यह दया मिली कि सतिगुरु अमरदास के दाएं हाथ में पदम चमक रहा है। संसार की शक्तियां गुरु अमरदास जी के दाएं हाथ में हैं। जो रिद्धियां हैं वे गुरु अमरदास जी के बाएं हाथ में हैं, जो सिद्धियां हैं, वे सामने खड़े होकर गुरु अंगद साहिब के पवित्र मुख से जीव को देखते हैं कि हमें आदेश दो तो सही ताकि हम आपकी क्या सेवा कर सकें। गुरु अमरदास जिस धरती पर चरण रखते हैं उस धरती पर से पाप भी नाश हो जाते हैं। वाहिगुरु-वाहिगुरु कह कर उसने परमात्मा को काबू कर लिया। इस चार अक्षर के मंत्र में इतनी शक्ति है कि करोड़ों ब्रह्मंडों का ठाकुर इसके जप से हृदय में रहता है। अब आए भाई जेठा जी, गुरु रामदास बनने लगे। जब जो भंडार करतारपुर से खडूर और खडूर से गोइंदवाल आया था, वह भंडार कम नहीं हुआ, वह भंडार बढ़ा था। आज भाई जेठा जी जिन्होंने अपने घर में कभी इकट्ठे बीस रुपए नहीं देखे, जिन्होंने अपने घर के भीतर चार कपड़े हर वर्ष नये नहीं लिए होंगे, वही पुराने वस्त्र धोने, वहीं पहन लेने, सूखी रोटी खा लेनी। एक बच्चा है। मान लो गुरुद्वारा है। उस बच्चे की न बहन है, न भाई, न माँ, न बाप, न सखा, न संबंधी, गुरुद्वारे बैठा है, बर्तन साफ करता है, नंगे पांव रहता है, कभी सिर पर टोकरी उठाकर चने बेचता है। प्यारिओ! जब कितनी बातें सुनी होंगी? यह अनाथ है, इसका कोई नहीं। आज गुरु रामदास सच्चे पातशाह जिनके बारे में सारे लोग अनाथ शब्द प्रयोग कर रहे थे, बाबा अमरदास सांसारिक तौर पर 74 वर्ष की आयु के हुए, 22 वर्ष उनको गद्दी पर विराजमान हुए हो गए। आज उस बच्चे के लिए शब्द प्रयोग किए थे, बाबा बुड्ढा जी! भाई जेठा को स्नान कराकर वस्त्र पहनाओ। आज बाबा नानक का भंडार हमने इनको सौंप देना है। अब वह बच्चा इतने बड़े भंडार का मालिक बन गया। इस वक्त भट्ट कहने लगे :

SIKHBOOKCLUB.COM

स्री गुर रामदास जयो जय जग महि
तै हरि परम पदु पाइयउ।। *(अंग १४०५)*

धन्य गुरु रामदास तुम्हारी प्रसिद्धि हो रही है दुनिया में, क्योंकि जो भंडार तीन पातशाहियों ने इकट्ठे किए, वे तुम्हें मिल गए। आप आज परम पदवी के मालिक बन गए। सतिगुरु कृपा करो, हमारे हृदय में स्वयं आओ।

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

SIKHBOOKCLUB.COM

नानक की प्रभ बेनती

धुरि हरि प्रभि करतै लिखिआ सु मेटणा न जाइ।।
जीउ पिंडु सभु तिस दा प्रतिपालि करे हरि राइ।।
चुगल निंदक भुखे रुलि मुए एना हथु न किथाऊ पाइ।।
बाहरि पाखंड सभ करम करहि मनि हिरदै कपटु कमाइ।।
खेति सरीरि जो बीजीऐ सो अंति खलोआ आइ।।
नानक की प्रभ बेनती हरि भावै बखसि मिलाइ।।४१।।

(अंग १४१७)

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

SIKHBOOKCLUB.COM

साहिब सतिगुरु जी की पावन पवित्र हजूरी में शोभायमान गुरु-संवारे सतसंगी-जनो! धन्य गुरु अमरदास तृतीय पातशाह, उनकी भाग्यशाली रसना से श्लोक वारां ते वधीक में से श्लोक नंबर ४१ का पाठ आप जी ने श्रवण किया है। आज के श्लोक का जो केंद्रीय भाव है इसमें हजूर ने दो वचन हमें समझाए हैं। पहला वचन है :

धुरि हरि प्रभि करतै लिखिआ सु मेटणा न जाइ।।

जो परमात्मा ने मूल इंसान के मस्तक पर लिख दिया है उसको कोई इंसान अपनी बुद्धि से नहीं मिटा सकता। फिर साथ वचन किए :

जीउ पिंडु सभु तिस दा प्रतिपालि करे हरि राइ।।

क्योंकि यह तन, यह जान सब कुछ उस परमात्मा की देन है और सभी जीवों की पालना भी वह अन्नदाता दयावान प्रभु कर रहा है, परंतु यह मूल मिटाने वाली जो बात है, इसको कोई नहीं मिटा सकता।

निंदा करने वाले, बिना मतलब के निंदा करने वाले, साहिब कहते हैं यह इंसान भूखे मरते हैं, एक दिन ये बुरी तरह मरते हैं। जब इनके भीतर की ईर्ष्या, चुगली, निंदा का प्रस्ताव घटित होता है तो जहां भी हाथ डालने का प्रयास करते हैं, कोई भी वस्तु इनके हाथ नहीं आती। अगला वचन किया कि यह चुगल, निंदक बाहर से भेष बनाएंगे परंतु भीतर से कभी भी किसी के साथी नहीं होंगे। जितनी देर तक इंसान उनके सामने बैठा है, उतनी देर तक बार-बार कहेंगे, हम तेरे हैं, हम तुम्हें बहुत प्यार करते हैं और बापू गुरु अमरदास कृपा करते हैं कि कभी इनको पीठ पीछे सुनो और यही इंसान मुंह पर तारीफ़ करने वाले और पीठ पीछे छुरा घोंपते हैं। जो कुछ तन-खेत में बोया है वह अंतिम वक्त ज़रूर प्रकट होगा, परंतु कहते हैं, अगर इसको संगत मिल जाए, वितनी करने का ढंग आ जाए और अरदास करे, सच्चे पातशाह! हमारी, सेवक की यह विनती है, गुनाह हमने बड़े-बड़े किए हैं, तू दयावान हमदर्द है, कृपा करके हमारे गुनाहों को ढक दे, हम पर दया कर।

SIKHBOOKCLUB.COM

गुरु ग्रंथ साहिब जी की अमृत बाणी के ज्ञान के अनुसार जो भी जीव इस धरती पर जन्म लेता है, स्त्री है चाहे वो पुरुष है, उसकी यात्रा केवल उस दिन से आरंभ नहीं हुई जिस दिन उसने माता के गर्भ में निवास करके और कुछ महीने के बाद उसका जन्म हुआ। हमारी दृष्टि से, हमारे परिवार में, हमारे घर में हम बच्चे का जन्म-दिन लिखते हैं और साथ कहते हैं, इस दिन बच्चा धरती पर आया, इस वक्त इसने जन्म लिया। प्यारिओ! यह हम देखने वाले सांसारिक लोगों को पता है कि हमारे घर में बच्चे का जन्म इस वक्त हुआ परंतु हमें यह पता नहीं कि जो भीतर की जान है इस बच्चे में, प्रवेश करने से पहले कितने जन्मों की यात्रा तय करके आई है। अब वह जो की हुई यात्रा है, परमात्मा ने देखो कैसी लीला बनाई है कि इसको जन्म तक यह समझ है कि मैं कहां से आया हूं। जन्म के उपरांत ऐसी तेज़ पवन उसने चलाई कि जन्म लेने वाले

को भूल गया कि मैंने कहां से यात्रा आरंभ की है। यह अकेला नहीं आया। हर जन्म में जो इसने कर्म किए हैं वे संस्कार बन कर इसके मन में वैसे रहे और पिछले जन्मों द्वारा किए हुए जो कर्म संस्कार बने वे संस्कार इसके अगले संसार के भी आ गए।

जो परमात्मा की बंदगी करने वाले हैं उनको अपनी अंतरात्मा समझ आ जाती है कि मैं किस जगह से आया हूं। पिछले जन्म के बारे में उनको जानकारी मिल जाती है। जो परमात्मा की प्यारी बंदगी करने वाले सज्जन हैं, उन्होंने परमात्मा के चरणों में इस जन्म की प्राप्ति करके इस बात की पुष्टि कर दी कि हे प्रभु! मेरा और तेरा संबंध केवल इस जन्म का नहीं, तेरा और मेरा प्रेम-झूला कई जन्मों से झूल रहा है। कबीर जी का एक वचन आता है :

पूरब जनम हम तुम्हरे सेवक

पूरब जन्म का अर्थ पहले जन्म में। जो पहले जन्म में तेरा सेवक है।

SIKHBOOKCLUB.COM

अब तउ मिटिआ न जाई।। *(अंग ९७०)*

हे प्यारे प्रभु! पहले जन्म से भी तेरी आराधना की और इस जन्म में इस खेल को मिटाया नहीं जा सकता। भाई नंद लाल जी कहते हैं कि जब यह नीला आसमान भी नहीं था, जब धरती पर समुद्र का पानी भी नहीं था, जब सूर्य, चांद, तारे, कोई पक्षी, कोई जीव नहीं था तब मेरे परमात्मा! तेरी और मेरी बात तो उस वक्त भी थी। रविदास जी कहते हैं कि हम पिछले जन्म से ही तेरी भक्ति करते आए हैं तेरे साथ। हजूर के अमृत-वचनों में से जब हम यह वचन पढ़ते हैं कि :

हम सरि दीनु दइआलु न तुम सरि

हमारे जैसा गरीब कोई नहीं और तुम्हारे जैसा इस संसार में दयालु कोई नहीं।

अब पतीआरु किआ कीजै।।
बचनी तोर मोर मनु मानै जन कउ पूरनु दीजै।।१।।

हउ बलि बलि जाउ रमईआ कारने
कारन कवन अबोल।। रहाउ।।
बहुत जनम बिछुरे थे माधउ

बिछड़ा शब्द पैदा ही तब होता है जब कहीं मिलन वाले खेल में दूरी आ जाए।

बहुत जनम बिछुरे थे माधउ इहु जनमु तुम्हारे लेखे।।
कहि रविदास आस लगि जीवउ चिर भइओ दरसनु देखे।। २।।

(अंग ६९४)

हे प्रभु! कई जन्मों से तुझसे दूर हूं और यह जन्म पूरे का पूरा तुम पर छोड़ दिया है। तुम पर छोड़कर फिर इस आशा पर जीते हैं कि इस जन्म में दर्शन-दीदारे तो होंगे।

आज का वचन है कि हर वस्तु जिसका जन्म हुआ है, उसके मस्तक पर परमात्मा ने लिखकर भेजा है। कई बार शायद आप जी ने देखा हो, कोई प्राणी मर जाए, लोग अस्थियां चुनते हैं। कई बार इंसान का ऊपर वाला मस्तक मिले तो उसकी भौंहों पर मस्तक के बिलकुल नीचे एक लाईन बनी हुई ऐसे लगेगी। पता नहीं, इन्होंने कौन-से निशान बना कर ऐसा रूप इस पर बनाया है। बाबा जी ने बाणी में कहा है :

जीअ जाति रंगा के नाव।। सभना लिखिआ वुड़ी कलाम।।

(अंग ३)

वुड़ी कलाम का अर्थ होता है न रुकने वाली। अनेक तरह के जीव परमात्मा ने पैदा किए और अनेक तरह के उनको रंग दिए। सभी के तन पांच तत्वों के हैं, भीतर के सारे अंग एक समान हैं, परंतु उनके चेहरे की बनावट एक दूसरे से भिन्न होगी।

अगर हम अफ्रीका की तरफ दृष्टि डालें तो वे लोग शारीरिक बनावट से भी हमसे ताकत वाले दिखते हैं। इनकी चमड़ी का रंग भी हमसे अलग है। उनके पांच ज्ञान-इंद्रिय, कर्म-इंद्रिय हमारे जैसे हैं, परंतु उन अंगों की बनावट आकार से हमसे बड़ी लगती है।

SIKHBOOKCLUB.COM

यूरोप की तरफ देखें तो उन लोगों का रंग हमसे अलग है। परंतु एक कार्य सभी का एक समान है, सभी के मस्तक पर भाग्य तूने अपने आदेश की कलम से लिखे हैं। हम कहेंगे, अगर अक्षर लिखे हैं तो इसको कौन पढ़ सकता है? बंदगी करने वाले सच मानो, उस माथे के भाग्य भी पढ़ सकते हैं । उसके पास कौन-सा यंत्र है? आज से कई वर्ष पहले अपने हाथ की हथेली पर कुछ पैसे रखे हों, जो कुछ हाथ की हथेली पर रखा है और उसको सामने हाथ की हथेली पर रखकर लोगों को दिखाएं, मूर्ख से मूर्ख इंसान देखकर कह देता है कि इंसान ने अपने हाथ की हथेली पर एक पैसा रखा है।

हे प्रभु! जिस प्रकार कुआं मेंढकों से भरा है। एक मेंढक कुएं में रहता है और उसको जाकर आप सतलुज नदी की बातें सुनाएं तो उसने क्या विश्वास करना है। आप उसको कहो कि ब्यास का पानी बहुत बढ़ गया है। उसके लिए ब्यास है ही नहीं, क्योंकि मेंढक इस कुएं को अपनी अंतिम हद बनाए बैठा है। इसी कारण बाबा नानक कहते हैं कि परमार्थ की प्राप्ति करते हुए अपनी हद को अंतिम हद न समझो, क्योंकि यहां :

SIKHBOOKCLUB.COM

इक दू इकि चड़ंदीआ कउणु जाणै मेरा नाउ जीउ।।

(अंग ७६२)

यहां एक से बढ़कर एक मिलेंगे। जिस वक्त पीर दस्तगीर ने कहा था कि आपने दुख भरा समाचार सुना दिया कि यहां लाखों पाताल और लाखों आकाश हैं परंतु हम परमात्मा पर विश्वास कर बैठे हैं, 14 लोक हम मान बैठे हैं। मेरे हजूर ने बहुत सुंदर उत्तर दिया था। कहने लगे, झगड़ा किस चीज़ का है? एक ज़िन्दगी को हर पक्ष से नकारात्मक न सोचें, क्योंकि अपने लोगों का स्वभाव है कि कोई भी बात हो पहले नकारात्मक सोचने लग पड़ना है। जब इंसान नकारात्मक सोचने लग पड़े तो तब निराशावादी हो जाता है। निराशावादी इंसान कभी भी ज़िन्दगी में तरक्की नहीं कर सकते। सकारात्मक सोच और नकारात्मक सोच में अंतर है।

अर्ज़ किया था, एक दिन एक इंसान को बहुत प्यास लगी है। पानी की मांग करता है। किसी ने अपने कलश में से आधा गिलास पानी का भर कर रखा, कहने लगे, ले भाई, यह पानी का गिलास है, आधा तू पी ले। अगर वह नकारात्मक सोच वाला है तो कहेगा कि तुमने मुझे क्या दिया? आधा गिलास तो खाली है। यदि सकारात्मक सोच वाला है, वह कहेगा, तेरा धन्यवाद है, पानी का एक चम्मच भी बहुत था, तूने तो कम से कम मुझे आधा गिलास दे दिया है। हर इंसान की अपनी सोच है। यही कारण है कि परमात्मा की दात लेकर नकारात्मक सोचने वाले, जो नहीं मिला उसके लिए वे परमात्मा को दोष देते हैं और सकारात्मक सोचने वाले जो कुछ मिला, उसमें वे परमात्मा का धन्यवाद करते हैं। केवल इंसान इतनी बात समझ जाए तो आधी कलह-झगड़े भीतर के वैसे ही खत्म हो जाते हैं, क्योंकि हम सोचते ही गलत हैं।

डाक्टर वणजारा बेदी कहते हैं कि इंसान की कैसी सोच है? कहते हैं, लोग इकट्ठे हो गए। घर से सब कुछ खा-पी चुके थे। अपनी ज़मीन, भूमि, बर्तन बेच चुके थे, खत्म हो गया। जब इकट्ठे हुए, कहने लगे कि अब तो पल्ले कुछ भी नहीं रह गया, कुछ न कुछ उद्यम हम करें। कहने लगे, परिश्रम क्या करें? एक ने कहा, अपनी ज़मीन कोई नहीं, यह ग्राम सभा की ज़मीन पड़ी है इसमें हल चलाओ और गन्ना बोओ। बैठे-बैठे बात बन गई। किससे हल मांगेंगे? फलां का हल मैं मांगूंगा। कहां से बीज लाएंगे? किसी रिश्तेदार से मैं बीज लाऊंगा। बातों बातों में मैंने ज़मीन भी ले ली, हल भी चला दिए, गन्ना लाकर काट कर बो भी दिया और जो एक नशे में चूर था, कहने लगा कि बो तो दिया है, लोगों ने उजाड़ देना है। गांव के बच्चों ने हमारे गन्ने उखाड़ कर ले जाने हैं। कहने लगे, बात तो बहुत समझदारी की है, फिर क्या करें? सबसे पहले गांव को आग लगाकर जलाओ, कम से कम हमारी ईख तो कोई न उजाड़े। देखो, न बोया, ना हल चलाया, कैसी नकारात्मक सोच है। जो बातें हमारी ज़िन्दगी में होनी ही नहीं, उन बातों का विचार

SIKHBOOKCLUB.COM

कर-करके अपने रस संसार को आग स्वयं लगा रहे हैं। सकारात्मक सोच से चलें।

यह उचित है कि हम मृत्यु को याद रखते हैं। लाभ के अलावा हानि को ज़रूर याद रखते हैं, परंतु अगर कोई विचार करे कि मैंने कामयाब होना ही नहीं तो वह इंसान ज़िन्दगी में कभी कामयाब नहीं होता।

अब परमात्मा को पाने के लिए हम घर से सब जाते हैं गुरुद्वारे, मंदिर, मस्जिद। वास्तव में तो घर से ज्यादा यही सोच कर चलते हैं कि चलो परमात्मा के घर जाकर दर्शन-दीदार करते हैं, कोई परमात्मा की बात समझ आएगी। हम में से 99 प्रतिशत लोग ऐसे हैं जो नकारात्मक सोच लेकर जाते हैं। केवल गुरुद्वारे आकर चले गए परंतु कभी यह सोच कर नहीं चले कि मैं आज गुरुद्वारे चला हूं। मैंने आज शीश गुरु के सामने रख देना है। आज के बाद रखा हुआ शीश गुरु के दर पर स्वीकार हो जाना है। क्योंकि सोच है कि मेरे कर्मों में कहां? जो माथे पर लिखे हैं, चाहे कोई काला था, गोरा था, तुर्की था, अरबी था, कोई भी था, उसने माथे के लेख लिख दिए हैं।

SIKHBOOKCLUB.COM

हम काफी प्रसन्न होते हैं कि अगर परमात्मा का लिखा नहीं मिटना तो फिर धर्म-कर्म प्राप्त करने का क्या लाथ? हम बाणी में पढ़ते हैं :

लेखु न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतारि।।

(अंग १३७)

जो परमात्मा ने लिख दिया, उसने नहीं मिटना। अगर नहीं मिटना हो फिर इतने पुण्य, इतने जाप, इतनी साधना क्यों?

आखणि जोरु चुपै नह जोरु।।
जोरु न मंगणि देणि न जोरु।।
जोरु न जीवणि मरणि नह जोरु।।
जोरु न राजि मालि मनि सोरु।।

जोरु न सुरती गिआनि वीचारि।।
जोरु न जुगती छुटै संसारु।। *(अंग ७)*

हमारी कोई शक्ति भी नहीं, न हमारे कहने में ताकत, न हमारे चुप रहने में ताकत, न हमारे मांगने में ताकत, न हमारे बोलने में ताकत। जब ताकत ही उसकी है तो फिर जो कुछ उसने लिखा है हमने सहना ही सहना है। परंतु प्यारिओ! अगर लिख दिया है तो याद रखना।

जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ।।

जो अपने हाथ के बल से लिख देता है, वह मिटा भी सकता है। जिसने अपने हाथ में कलम स्वयं पकड़ी है।

जिसु हथि जोरु करि वेखै सोइ।।
नानक उतमु नीचु न कोइ।। *(अंग ७)*

गुरु जी कहते हैं कि उसने लिख दिया, हमारा कोई बल नहीं। हज़ूर कहते हैं :

करमी आपो आपणी

जो लिखा था हमने अपने कर्मों से उसका अंत कर दिया।

के नेड़ै के दूरि।। *(जपु जी साहिब)*

हज़ूर ने कहा परमात्मा ने 'वुड़ी कलाम' लिखा है। यह कैसे मिटेगा?

भाई साहिब भाई कल्याणा जी, जब गुरु रामदास कृपालु जी के पवित्र दरबार श्री हरिमंदर साहिब की तैयारी हो रही थी और लकड़ी लेने के लिए मंडी गए थे, तब भाई कल्याणा जी ने व्रत के दिन थे और व्रत नहीं रखा। गुरु के भय में जो थोड़ा खाए और थोड़ा सोए वाली मर्यादा को पाला। राजा ने कह दिया कि मेरी हद से बाहर निकाल कर इसकी टांग काट दो। भाई साहिब भाई कल्याणा जी साईं के संतोष में चरणों का सहारा लेकर चल पड़े। परंतु भाई

SIKHBOOKCLUB.COM

साहिब को ले जाने की देर थी कि राजा बेहोश हो गया। मन में आया, फ़कीर का मैंने तिरस्कार किया है और भाई कल्याणा जी के जीवन से अत्यधिक प्रभावित हुआ हूं। उस राजा का नाम था हरीसैन। इस राजा के पुत्र का नाम था सुधरसैन। हरीसैन के पुत्र सुधरसैन ने साहिब गुरु गोबिंद सिंघ सच्चे पातशाह और बाबा बंदा सिंघ बहादुर की बहुत सेवा की थी। यह आ गया गुरु-दरबार में। गुरु अरजन देव सच्चे पातशाह का दरबार सजा हुआ था। वह संगत में बैठा, दर्शन किए। इसको भीतर से स्थिरता मिली। हजूर उस वक्त ओअंकार की बाणी पढ़ रहे थे। जब ये पंक्तियां आईं कि :

लेखु न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतारि।।

तो मन में आया अगर लिखा नहीं मिटा तो फिर हमारे यहां आने का क्या लाभ हुआ ? हजूर के पाठ संपूर्ण करने के बाद हरीसैन ने प्रश्न किया—सच्चे पातशाह ! आप अपनी पवित्र रसना से जो पढ़ रहे थे कि :

SIKHBOOKCLUB.COM

लेखु न मिटई हे सखी जो लिखिआ करतारि।।

(अंग १३७)

फिर इतना आडंबर किस लिए ? हजूर ने तीन वचन कहे। कहने लगे—लिखा हुआ नहीं मिटता। सहन भी करते हैं। संकट मिट जाते हैं और अगर गुरु दया करे तो यह मिटने के बाद प्रसन्नता भी प्राप्त होती है। राजा के समझ न पड़ी, क्योंकि मूर्खता से समझ नहीं आती। कहने लगा, यह कैसे हो सकता है ? संकट भी नहीं आता, गुरु प्रसन्नता भी दे देता है। कहता है कि मुझे समझ नहीं आई। सच्चे पातशाह कहने लगे, यह प्रश्न का उत्तर तुझे ज़रूर दिया जाएगा। तू कुछ वक्त टिक कर काम कर, तू थोड़ी-सी भावना बना, तर्क में मत जी। भावना बना कर कह दे कि मैंने सब कुछ प्रभु को समर्पित कर दिया है। संगत में तू भावना से सेवा कर और तेरे सवाल का उत्तर हम देंगे।

राजा के मन को ठेस लगी। हरीसैन सेवा करने लग पड़ा। सेवा करते, सिमरन करते भीतर से थोड़ा-सा सचेत हुआ और एक दिन

जब विश्राम कर रहा है तो इसको सपना आया। सपना आया कि इसका चंडालों के घर जन्म हो गया, विवाह हो गया, पुत्र हो गए, पौत्र हो गए, परिवार बढ़ गया। वहां आयु समाप्ति के उपरांत इस चंडाल की मृत्यु हो गई। जब यह मरा इसकी पत्नी, इसके बच्चे, इसका परिवार इसके चारों ओर खड़े होकर रोने लगे। जब रोने की आवाज़ सुनी तो एक कम सपने से जाग उठा।

इन बातों को मत भूलना। गुरु दया करे तो सपने में इतने बड़े दुख को स्वप्न का दुख बना दिया। जो विरोधी होते हैं, परमात्मा की दया से वे मित्र बन जाते हैं। हजूर कहते थे कि कर्म से बिछड़े हैं। अगर कर्मों से मिलना चाहेंगे तो कर्मों से कभी मिलाप नहीं। मिलोगे उसकी दया से। पशु और भूतों जैसे जो इंसान थे, जिनके कर्म बुरे थे, गुरु ने देखा, उसने मनुष्य बनाए और मनुष्य से ही उसने देवता बना दिए।

आज चुगल और निंदक दो शब्द आए हैं। चुगल और निंदक का थोड़ा-सा अंतर है। निंदक ईर्ष्या से संबंधित है और चुगली करने वाला कोई बात है नहीं, ऐसे बिना मतलब से किसी इंसान के अच्छे-भले जीवन को दागी किए जाना। हजूर कहते हैं जब चुगल और निंदक अपना कार्य आरंभ करते हैं, देखो यह इंसान चुगली न करे, जिनको आदत हो गई है तो उनको खाना हज़म नहीं होता। फिर चुगली-निंदा करके यह भी कहते हैं विशेष करके औरतों को आदत होती है कि ले बहन, मैंने तुझे यह बात बताई है अपना मान कर, तू आगे किसी को न बताना। अब तूने जिसको बताया है, उसकी कोई और अपनी नहीं। निंदक इंसान की ज़िन्दगी में कभी सुख नहीं और निंदक इंसान को गुरु की संगत भी कभी नहीं भाती। परमात्मा की बंदगी करने वालों की जो निंदा करता है, सच्चे पातशाह कहते हैं :

चुगल निंदक भुखे रुलि मुए एना हथु न किथाऊ पाइ ।।

बुरी तरह मरते हैं। उनका कोई हाल नहीं पूछता। परमात्मा दया करे, हमें विवेक बुद्धि दे। अगर गुरु-शब्द हमारे पास है तो फिर

SIKHBOOKCLUB.COM

समझ आ जाएगी कि यह भक्ति प्राप्त करने वाला है। अगर शब्द नहीं तो अंधेरे में सारी दुनिया टक्करें मार रही है। गुरु पर विश्वास करके शब्द की प्राप्ति हो जाती है और प्राप्ति करने वाले की संगत हो तो ही हमारी रोज़ की अरदास है :

सेई पिआरे मेल जिन्हां मिलिआं तेरा नाम चित्त आवे।

गुरु के आगे अरदास करते हैं। यह नहीं कहते कि तू मिल, कहते हैं वह मिला, जिनको मिलते तू याद आ जाए। हजूर कहते हैं निंदक पता कैसे रुलता है? किसी इंसान को बोन कैंसर हो जाए, वह अपने अंदर से जलना शुरू हो जाता है। गुरु साहिब ने कहा, प्यारिओ! जो इंसान प्राप्ति करने वालों की निंदा करता है, देखा नहीं और सुनी-सुनाई ईर्ष्यावश होकर इल्ज़ाम लगाते हैं, सच जानना, उसको रोग लग जाता है। कैसे? निंदक ऐसे झड़ता है। कैसे? जैसे कलराठी दीवार धीरे-धीरे झड़ती जाती है। जब किसी की गलती देखता है तो निंदक बहुत प्रसन्न होता है। निंदक को परमात्मा ने भुला दिया। कहते हैं, मृत्यु सामने आ गई। अगर निंदक इंसान सोने को हाथ लगाए तो गुरु ग्रंथ साहिब कहते हैं वह भी भस्म हो जाता है। महाराज! ये बाहर से बहुत दावे करते हैं।

बाहरि पाखंड सभ करम करहि

बाहर से पाखंड किए जाता है, मैं ऊंचा हूं। मैं विनती करता हूं, बस अंतर है कि कइयों के भीतर के कारनामे प्रकट हो जाते हैं। जिनके प्रकट हो जाएं उनको पापी बना देते हैं और जिनके कारनामों पर पर्दा आ जाए, वे प्रदर्शनी करने वालों के सहायक बन जाते हैं। हजूर कहते हैं कि निंदक बाहर से दिखावा करते हैं धर्म का। चुगल बाहर से दिखावा करते हैं पंथ के हितैशी होने का, परंतु भीतर दृष्टि डाल कर देखो, भीतर स्वार्थ है। कोई इंसान गलती वाला मिल गया, इसको तंग करके कैसे रुपए इकट्ठे करने हैं? सच्चे पातशाह कहते हैं यह सिक्खी नहीं। मन में कपट है तो कितने दिन तू बाहर का दिखावा करेगा?

SIKHBOOKCLUB.COM

बाहरि पाखंड सभ करम करहि मनि हिरदै कपटु कमाइ।।
खेति सरीरि जो बीजीऐ सो अंति खलोआ आइ।।

अपने शरीर-खेत में जो बीज डाला है, प्यारिओ! अंतिम समय इस बीज ने दुनिया में फसल बनना है। अब यहां सारी बात का सार यह है कि जो किस्मत लिखी है वह नहीं मिटेगी।

नानक की प्रभ बेनती हरि भावै बखसि मिलाइ।।

गुरु अमरदास कृपालु जी कहते हैं, प्रभु के चरणों में हमारी विनती है, अगर तुझे पसंद है तो हमारे कर्म न विचारना, हमें अपने चरणों से जोड़ ले। धन्य गुरु ग्रंथ साहिब कृपा करें, जो लिखाकर आए हैं, अगर भजन-सिमरन-बंदगी करते रहे तो गुरु का शब्द करोड़ों कर्म अवश्य काट सकता है। साहिब रहमत करें।

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

SIKHBOOKCLUB.COM

बिनु सतिगुर भगति न होवई

बिनु सतिगुर भगति न होवई नामि न लगै पिआरु।।
जन नानक नामु अराधिआ गुर कै हेति पिआरि।। ३९।।

(अंग १४१७)

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब सच्चे पातशाह जी की पावन पवित्र हजूरी में विराजमान गुरु-संवारे सतसंगी-जनो! धन्य गुरु अमरदास जी की रसना से उच्चारण किया हुआ श्लोक आप जी ने श्रवण किया है। आज के श्लोक में हजूर ने दो वचन दृढ़ कराए हैं। पहला वचन कि सतिगुरु के बिना पारब्रह्म परमेश्वर की भक्ति नहीं हो सकती। दूसरा, अगर कोई सतिगुरु के चरणों की टेक ले, वह प्रेमा-भक्ति में लीन हो सकता है और जिसने भी परमात्मा को पाया है, सतिगुरु के प्रेम के द्वारा प्राप्ति हुई है।

SIKHBOOKCLUB.COM

बिनु सतिगुर भगति न होवई नामि न लगै पिआरु।।

सतिगुरु के घर का यह नियम है कि जिसने भी परमात्मा तक पहुंचना है, उसके लिए ज़रूरी है कि पूर्ण सतिगुरु जी की दया उस मनुष्य पर बरसती हो। जैसे हम कोई सांसारिक कार्य सीखते हैं तो प्रत्येक कार्य सीखने से पूर्व अपने जीवन में किसी को अपना गुरु समझ कर उसके द्वारा दी हुई शिक्षा के अनुसार चलें ताकि कोई संसार का कार्य सीख सकें। जिसने परमात्मा के द्वार जाना है, उसके लिए ज़रूरी है कि उसके सामने पूर्ण मुरशिद हो। पूर्ण गुरु की दया से उसको परमात्मा के दर की प्राप्ति है। क्योंकि गुरमति ने इस संबंधी

अनेक वचन अमृत बाणी में बख़्शिश किए हैं। अब एक पूर्ण सतिगुरु हो और दूसरा जिज्ञासु उस पूर्ण सतिगुरु के वचनों को ग्रहण करके अपनी ज़िन्दगी में अमली जामा भी पहनाता है। सतिगुरु तो पूर्ण है और अगर सिक्ख ही पूर्ण के वचनों को न माने तो बात नहीं बनती। पूरे के वचन तब ही असर करेंगे अगर उन वचनों को अपनी ज़िन्दगी में हम कमा लेते हैं। अमृत बाणी में इस संबंध में एक शब्द उन्होंने विशेष रूप से उन जिज्ञासुओं के लिए दर्ज किया है जो जिज्ञासु परमात्मा को पाने की तीव्र इच्छा रखकर प्रभु के चरणों में अभेदता की कामना लेकर जिज्ञासु बनकर जुड़े हुओं के चरणों में अरदास करते हैं।

साहिब जी ने उस अमृत वचन में स्वयं ही पहले प्रश्न किया और उस किए हुए प्रश्न का उत्तर भी स्वयं ही दिया है। पहला प्रश्न है कि परमात्मा के दर पर कैसे पहुंचा जाए? दूसरा प्रश्न है कि इस भटकते हुए मन को कैसे एकाग्र किया जाए? तीसरा प्रश्न है कि गुरु के दर पर जाने वाली पगडंडी की प्राप्ति कैसे हो? हम यह अमृत वचन पढ़ते हैं कि **सोई दसि उपदेसड़ा** एक जिज्ञासु मनुष्य से जो गुरु के चरणों से अभेद हुआ है, उसके चरणों में बैठकर विनती कर रहा है। ये विनती के शब्द हैं :

सोई दसि उपदेसड़ा मेरा मनु अनत न काहू जाइ जीउ।।

मेरा मन एक गुरु के बिना किसी दूसरी तरफ न जाए।

इहु मनु तै कूं डेवसा मै मारगु देहु बताइ जीउ।।

अगर मेरे मन को एकाग्र कर दे तो मैं अपना मन तेरे चरणों में भेंट कर दूं। मुझे प्रभु के दर पर जाने वाला मार्ग आज बता दो। आगे जिसने इसकी प्राप्ति की थी और उसने उत्तर बहुत सुंदर भावपूर्ण दिया है। कहने लगे :

इतु मारगि चले भाईअड़े

अगर तू मुझसे पूछना चाहता है कि मार्ग बता। कहते हैं हे भाई! अगर इस मार्ग पर चलना है तो अपनी बुद्धि से नहीं, अगर

तू सचमुच प्रभु के दर की जिज्ञासा रखकर आया है तो गुरु द्वारा बताए मार्ग पर चलना आरंभ कर दे।

इतु मारगि चले भाईअड़े गुरु कहै सु कार कमाइ जीउ।।

(अंग ७६३)

जो गुरु कहता है, उस कार्य को कर।

तिआगे मन की मतड़ी विसारे दूजा भाउ जीउ।।

अगर गुरु के मार्ग पर चलना है तो अपने मन की विचार को छोड़ दे। जो एक परमात्मा को छोड़कर तेरा मन दिन रात दूसरे स्नेह में लगा है, इस बुराई को अपने अंदर से निकाल दे।

इउ पावहि हरि दरसावड़ा नह लगै तती वाउ जीउ।।

(अंग ७६३)

इस मार्ग पर चलेगा तो तुझे वाहिगुरु के दर्शन होंगे। इसका मतलब कि गुरु के वचन मानने के बिना प्रभु के घर की प्राप्ति नहीं होगी।

SIKHBOOKCLUB.COM

आवहु संत पिआरिहो अकथ की करह कहाणी।।

(अंग ९१८)

हे प्रभु के संत-जनो! आओ, उस अकथ परमात्मा की हम कहानी करें। मेरे कृपालु दाता जी ने अमृत बाणी में कृपालता की है।

कथना कथी न आवै तोटि।।
कथि कथि कथी कोटी कोटि कोटि।। *(जपु जी साहिब)*

अगर कोई कथन करने का यत्न करे, उसको कितना कह सकता है? बाबा जी ने कहा :

कथनी कहि भरमु न जाई।।
सभ कथि कथि रही लुकाई।। *(अंग ६५५)*

संसार के लोग प्रयास करते हैं उसको वर्णन करने का, परंतु जो अकथ है, जिसको कोई कह नहीं सकता। हजूर ने दया की

कि जो वर्णन करने वाले थे, यह संसार पर अनेक आए। अपने समय अनुसार वह प्रभु के बारे में बहुत कुछ कह कर भी गए। परंतु सारी ज़िन्दगी वह परमात्मा को कहा, अंत वे भी इस बात पर मोहर लगा कर चले गए कि सारा जीवन परमात्मा को कहा है, परंतु इतना कहने के बावजूद भी उसको पूर्ण रूप से कहा नहीं जा सकता।

केते आखहि आखणि पाहि।। *(जपु जी साहिब)*

'आखहि' का शाब्दिक अर्थ 'कहना' है और 'कहने' का अर्थ है 'बोलना'। यह अनेकों ऐसे हैं जो उसे कह रहे हैं, अनेकों ऐसे हैं जो कहने का यत्न करते हैं और अनेक ऐसे हैं जो उसको कह-कह कर दुनिया से चले गए। जितने भी परमात्मा ने आज तक प्रशंसा करने वाले पैदा किए हैं, अगर इतने परमात्मा को वर्णन करने वाले एक दम और भी पैदा हो जाएं तो बाबा नानक जी कहते हैं कि उस प्रिय प्रभु को तिल मात्र भी तू नहीं कह सकता। साहिब ने कहा :

किआ हउ कथी कथे कथि देखा
मै अकथु न कथना जाई।। *(अंग ७९५)*

कहते हैं, मैं तुझे कितना कहूं, मेरे पास शक्ति भी नहीं। गुरु को पाने का एक ही साधन है अपना तन, मन, धन गुरु को सौंप दिया जाए। यहां ही बस नहीं, अगर ये तीनों बातें परमात्मा को दे दीं तो फिर अपनी इच्छा नहीं पूर्ण होगी, चलेगी तो गुरु की कामना ही। देखो, हम कोई ज़मीन का टुकड़ा बेच देते हैं किसी को। चाहे वह खेती वाली ज़मीन हो चाहे वह रिहायश वाली ज़मीन हो, जो ज़मीन हमने रुपए लेकर किसी को बेच दी और खरीदने वाला उस ज़मीन की दौलत देकर ज़मीन को खरीद ले और वापिस जिस धरती को हमने बेचा था और दो वर्ष बाद हम कहें कि तूने यहां क्यों घर बना लिया? तूने इस खेत में फसल क्यों उगाई? जिसने खरीदी है वह पूछेगा, तू कौन है मुझसे प्रश्न करने वाला? अगर हम कहें

कि साल पहले मेरी ज़मीन थी तो खरीदने वाले का उत्तर होगा पहले तेरी ज़रूर थी परंतु प्रिय, जब तूने मुझे बेच दी, इसकी जगह तूने मूल्य ले लिया। जो वस्तु बेच दी जाए, जिसने खरीदी है उसकी मर्ज़ी है खेत में कांटे बोए या फल बोए। बेचने वाले का अब उस धरती पर कोई अधिकार नहीं।

मेरे धन्य गुरु अमरदास के वचन हैं कि सब कुछ गुरु के चरणों में सौंप दे और अब जिस गुरु के चरणों में तूने तन, मन, धन सौंपा है, उस गुरु की मर्ज़ी भी तन पर चलेगी, मन पर चलेगी और गुरु की इच्छा से ही धन का प्रयोग होगा। गुरु के आदेश को मानो तो उसकी प्राप्ति होती है। जिज्ञासु का कार्य केवल गुरु के आगे शीश झुका कर आदेश मानना है। जिज्ञासु का कार्य केवल गुरु के दिए हुए आदेश पर आनाकानी करना नहीं। यकीन मानो, गुरु के पास ही ढंग है जो हमारे अंदर को स्थिर कर सकता है।

आज तक जितने भी महापुरुष, अवतार हुए हैं, लगभग बहुत ने इस संसार में आकर कोई न कोई गुरु धारण किया है। नारद जी प्रतिदिन सभा में पहुंचते और जब वे देवताओं की सभा से बाहर होते हैं तो जिस स्थान पर नारद बैठते थे उस स्थान से मिट्टी उखाड़ कर उस मिट्टी को बाहर फेंकते हैं। जब सभा में आते हैं तो उनका अति सम्मान और जब सभा से जाने लगते हैं तो उनकी पीठ पीछे जहां वे बैठते थे, उस स्थान से ज़मीन को खोद कर मिट्टी बाहर फेंक देते हैं। एक दिन जब वे सभा से उठकर गए और किसी सज्जन ने रास्ते में यह शब्द कह दिए कि नारद जी! आपका सभा में अति सम्मान होता है, परंतु याद रखो जब आप सभा से बाहर निकलते हो उसके उपरांत जिस धरती पर जाकर आप बैठते हो, उस धरती की मिट्टी को खोद कर सभा से बाहर फेंका जाता है। नारद जी के मन में आया कि एक ओर इतना सम्मान करते हैं और जब मैं चला जाता हूं तो जिस धरती पर मैं बैठता हूं उस ज़मीन की मिट्टी को निकाल कर फेंक देना, मुझमें क्या अवगुण है?

SIKHBOOKCLUB.COM

दूसरे दिन आए, सभा में बैठे हैं, ज्ञान की बातचीत उसी तरह हुई, परंतु जब वे जाने लगे, उन्होंने सभा की तरफ पीठ की और पीछे जिस स्थान पर बैठे थे, उसकी मिट्टी को निकाल कर सभा के बाहर फेंक दिया गया। जब मिट्टी सभा से बाहर फेंकी, उस वक्त नारद जी फिर पीछे मुड़ आए। मिट्टी फेंक कर अभी आ ही रहे थे कि उन्होंने प्रश्न किया—क्या मैं शूद्र हूं? सभी देवताओं ने सभा में खड़े होकर कहा, नहीं। कहने लगे, आप विद्वान हो, प्रभु की भक्ति की बात करते हो, मिट्टी तो इसलिए फेंकते हैं, क्योंकि अभी तक आप गुरु के नहीं बने। आपका गुरु कौन है? अगर गुरु नहीं तो समझ और बुद्धि जितनी भी हो, परमात्मा के द्वार का नियम है कि गुरु के बिना परमात्मा के द्वार की प्राप्ति नहीं। कहने लगे, आपका कोई गुरु नहीं। समझदार थे, तुरंत बात समझ गए। यह नहीं कि कोई गुरु धारण करने वाली बात करे और हम गुस्से में आकर बोलने लग पड़ें। कहने लगे, किसको गुरु धारण करें? उन्होंने कहा यह आपने निर्णय लेना है कि किसको अपनी ज़िन्दगी की लगाम देनी है।

SIKHBOOKCLUB.COM

नारद जी यह सुनकर चले गए। मन में आया कि जो आज सुबह मिल गया उसको ही गुरु धारण कर लेना है। चलते रहे और सुबह उनकी पहली मुलाकात कालू झीवर से हुई। शिकारी था,जाल फैलाकर पक्षी पकड़ता था। नारद जी ने उसके चरणों में प्रणाम किया। प्रणाम करके उस शिकारी को यह शब्द कहे कि आज के बाद आप मेरे गुरु हो। सभा में वापिस आए। आज उनका बहुत आदर किया गया। सभा में आज किसी ने मिट्टी नहीं निकाली, परंतु जब देव सभा में यह पूछा गया कि गुरु धारण कर लिया है तो मुस्करा कर कहने लगे, गुरु तो धारण कर लिया है परंतु क्या करें, हिंसक मिला है। हिंसक का अर्थ है हिंसा करने वाला। देव सभा में से आवाज़ आई—एक तो गुरु धारण किया और दूसरा गुरु पर ही तर्क करने लग पड़ा, जा तुझे चौरासी भुगतनी पड़ेगी।

नारद का मन कांप गया कि यह कैसा भाग्य है, अब चौरासी के घेरे में आना होगा। कहने लगे, इससे कैसे छुटकारा पाएं? और उस वक्त आगे से आवाज़ आई कि अगर इससे छुटकारा चाहते हो तो जिसको गुरु धारण किया है, उससे पूछ कर आ कि यह चौरासी से बचने का क्या ढंग है? नारद जी चले गए। जिसको आज गुरु धारण किया था, दोबारा फिर मिले। उसने गुरु वाली भूमिका निभाई और नारद जी ने उसके चरणों में झुककर नत्मस्तक होकर विनती की, हे प्रभु! श्राप दिया गया है कि तुझे दोबारा चौरासी भुगतनी होगी। पूछा, किसका? चरण पकड़ कर कहने लगे, आप पर शंका कर बैठा। जिसको शिकारी समझता था, वह ब्रह्मनिष्टी, वह ब्रह्म तक पहुंचा हुआ गुरु था। केवल शिकारी वाला भेष था कि मनुष्य के भीतर कितनी दृढ़ता है। कहने लगे कि जिसने तुम्हें चौरासी के चक्कर की बात कही है, मर कर भुगतने की ज़रूरत नहीं, हम जीते-जी सहन कर लेंगे इस तन में।

SIKHBOOKCLUB.COM

अब यह तरीका गुरु के पास है। नारद समझदार अवश्य है परंतु जिस दिन चौरासी की समस्या आ गई तो उसका हल उनके पास नहीं। पूछा, कैसे सहन करें? गुरु का उत्तर था कि जिसने आपको कहा है कि चौरासी सहन करनी पड़ेगी, उसको आप कहो कि मुझे चौरासी की रूप-रेखा धरती पर बना कर दिखाओ। कहने लगे, जब धरती पर रूप-रेखा बना दे तो दूसरा कार्य एक और कर, तू पूर्ण तौर पर इस रूप-रेखा पर लेट जाना। लेट-लेट कर अपने तन से रूप-रेखा को मिटा देना और सच मानो, अगर रूपरेखा मिट गई तो चौरासी स्वयं ही मिट जाएगी।

दूसरे दिन आए तो आज नारद के नेत्रों में चमक थी। कहने लगे, आप चौरासी की रूप-रेखा बनाओ। जब उन्होंने चौरासी की रूप-रेखा बनाई तो नारद जी ने झट से ज़मीन पर लेट कर सारी रूप-रेखा को अपने हाथों पैरों से मिटा दिया और कहा, लो, आप मृत्यु के उपरांत चौरासी की बात करते हो, जो चौरासी सहन करनी

पड़ेगी, हमने कुछ मिनटों में चौरासी का नक्शा ही मिटा दिया है। उन्होंने कहा कि कल तक आप नाखुश थे और आज इतने प्रसन्न, यह चौरासी मिटाने का ढंग किसने बताया? कहने लगे, उस गुरु ने जिसके चरणों में मैंने नत्मस्तक किया। आगे से आवाज़ आई कि आप उसके जाल को देखकर शंका कर रहे थे कि शिकारी है। तेरे पास समझदारी तो अत्यधिक थी किंतु चौरासी मिटाने का ढंग तेरे पास नहीं, तुझे उससे यह कला मिली है जिसको तूने अपनी ज़िन्दगी समर्पित कर दी है।

गुरु के बिना चौरासी मिटाने की कला किसी के पास नहीं। इंसान के पास बुद्धि हो, ज्ञान हो, परंतु ज्ञान होने के बावजूद भी गुरु के बिना धार्मिकता की मंज़िल नहीं तय हो सकती। पहली बात, गुरु का बन, दूसरी बात, गुरु पर शंका मत कर और तीसरी बात, जिस समस्या को तू बहुत विशाल कहता है अगर गुरु पूर्ण दया करें तो उस समस्या को एक मिनट में हल कर सकता है। गुरु का आदेश है कि सच्ची बाणी गाओ। गुरु की दया के बिना परमात्मा की प्राप्ति नहीं, चाहे परमात्मा सर्वव्यापक है। गुरु अरजन देव जी का एक शब्द है :

SIKHBOOKCLUB.COM

साजनड़ा मेरा साजनड़ा निकटि खलोइअड़ा मेरा साजनड़ा।।

मेरा प्रिय सज्जन वाहिगुरु बिलकुल मेरे अंग-संग खड़ा है।

जानीअड़ा हरि जानीअड़ा नैण अलोइअड़ा हरि जानीअड़ा।।

कहते हैं, उस प्रिय वाहिगुरु को मैंने अपने नेत्रों से भी देखा है।

नैण अलोइआ घटि घटि सोइआ अति अंम्रित प्रिअ गूड़ा।।

वह प्रिय बिलकुल नेत्रों से दिखाई देता है, रोम-रोम में समाया हुआ है। उस प्रिय के अत्यधिक मिठास भरपूर वचन हैं।

नालि होवंदा लहि न सकंदा सुआउ न जाणै मूड़ा।।

अगर परमात्मा साथ है तो फिर उसका रस क्यों नहीं आता? जो नेत्रों से दिखता है तो पूर्ण संसार अपनी आंखों से उसको क्यों

नहीं देख सकता? गुरु ने वचन किया है कि उससे उसकी प्राप्ति नहीं हो रही। इसका कारण है कि :

माइआ मदि माता होछी बाता मिलणु न जाई भरम धड़ा।।

अपने भीतर से पूछकर देख, तेरा भीतर माया के नशे में चूर हुआ है। जितनी भी बातें तेरा मन करता है, केवल नीच, बेरस है।

कहु नानक गुर बिनु नाही सूझै
हरि साजनु सभ कै निकटि खड़ा।। *(अंग १२४)*

हरि-सज्जन हरेक के समीप है, किंतु गुरु के बिना उसकी प्राप्ति नहीं। गुरु धारण करना क्यों आवश्यक है? परमात्मा की दरगाह में से परमात्मा ने यह आदेश दिया है कि सतिगुरु के बिना मेरा विचार कोई नहीं कर सकता। जिसको योग्य गुरु मिल जाए और उसके भीतर परमात्मा टिक गया। जिसके भीतर परमात्मा टिक गया उसकी लगन दिन-रात प्रभु के चरणों में लगी रही। जो लगन में रहता है उसका कैसा स्वभाव है? वह एक-एक श्वास प्रिय के नाम को अर्पण करता है। जिस पर साईं की कृपा हो, वह सतिगुरु के चरणों में रहता है। उसका जन्म-मृत्यु का भय दूर हो जाता है अगर समर्थ गुरु की कृपा उस पर हो जाए। कहने लगे, सिक्खो! तू गुरु का बन तो सही, तेरे लिए कोई रुकावट नहीं बनेगा। एक मर्यादा है कि गुरु का बनकर गुरु को भीतर स्थान देने से फिर गुरु का घर सिक्ख का घर हो जाता है। भीतर स्थान न दे और हजूर को कहे कि बाहर कुछ मात्र स्थान दे दे।

SIKHBOOKCLUB.COM

जिन्होंने गुरु की शरण ली, चाहे कितना भटकते थे, गुरु ने उनको भक्ति से जोड़ दिया। भक्ति की स्थिरता गुरु के बिना नहीं। कहने लगे, प्रिय अगर तूने पार होना है तो सिमरन की नैया में बैठ। पत्थर पार हो जाता है अगर नाव में बैठा हो। आज के अमृत वचन हैं गुरु अमरंदास जी के :

बिनु सतिगुर भगति न होवई

सतिगुरु के बिना परमात्मा की भक्ति नहीं। हम कहेंगे कि गुरु के बिना सीधी भक्ति क्यों नहीं? मैं उदाहरण दूं, समुद्र में बहुत पानी है, परंतु अगर कोई इंसान सीधा जाकर समुद्र का पानी पीना शुरू करे तो उस इंसान की प्यास नहीं बुझेगी। एक दिन उसके भीतर को खारा बना सकता है। उस पानी में जितनी चाहे डुबकियां लगाए किंतु जितनी देर तक दुबारा स्नान नहीं करता, उसके भीतर शांति नहीं आती। बादल बनकर आए और वही पानी बरसे, तो जो खारा था वही मीठा लगने लगता है। गुरु क्या है? हम वाहिगुरु-वाहिगुरु करते हैं। इसका मतलब हम सीधा समुद्र की ओर जा रहे हैं। प्यारिओ! अभेद समुद्र में ही होना है पर याद रखना जो रस तुझे बादल ने देना है, वह रस तुझे स्वयं जाकर नहीं मिलेगा।

नामि न लगै पिआरु।।

नाम से गुरु के बिना प्यार भी नहीं बनता। अगर गुरु से प्रेम करे तो भीतर से प्रेम बनता है। हजूर ने अंतिम वचन कहे, प्यारिओ! अगर गुरु मिल जाए।

SIKHBOOKCLUB.COM

जन नानक नामु अराधिआ गुर कै हेति पिआरि।। ३९।।

(अंग १४१७)

हे भाई! जिसने गुरु से प्रेम किया, उन्होंने परमात्मा के नाम की आराधना की है। परमात्मा को पाना है तो गुरु के चरणों की शरण ले। गुरु के बिना परमात्मा की प्राप्ति नहीं। हुई बेअंत भूलें कृपालु साधसंगत जी कृपा करके बख़्श देनी।

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

मनमुखु बालकु बिरधि समानि है

मनमुखु बालकु बिरधि समानि है जिन्हा अंतरि हरि सुरति नाही।।
विचि हउमै करम कमावदे सभ धरम राइ कै जांही।।
गुरमुखि हछे निरमले गुर कै सबदि सुभाइ।।
ओना मैलु पतंगु न लगई जि चलनि सतिगुर भाइ।।
मनमुख जूठि न उतरै जे सउ धोवण पाइ।।
नानक गुरमुखि मेलिअनु गुर कै अंकि समाइ।।४५।।

(अंग १४१८)

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

SIKHBOOKCLUB.COM

परम सम्मानयोग्य साधसंगत जी! धन्य गुरु अमरदास सच्चे पातशाह जी की अमृत रसना से उच्चारण किए गए अमृत वचन में साहिब कहते हैं कि मनमुख इंसान बच्चा होकर भी बुज़ुर्ग की तरह कमज़ोर है। मनमुख के शारीरिक जीवन के तीन पड़ाव हैं—बचपन, जवानी और बुढ़ापा। मनुष्य अपने बचपन में जवानी की आस पर जीता है। जवानी में पहुंच कर वह बुढ़ापे के दिनों की बात करता है। परंतु जिस वक्त मनुष्य के सामने बुढ़ापा आता है, उस वक्त मृत्यु की बात करने के अलावा वह अपने बीते वक्त को याद कर अपने बुढ़ापे के दिन व्यतीत करने लग जाता है।

साहिब धन्य गुरु ग्रंथ साहिब जी ने बुज़ुर्ग अवस्था का वर्णन भी किया है और कृपा करके यह भी कहा है कि कौन-से सज्जन हैं जो बुढ़ापे में भी भीतर से कायम रहते हैं और कौन से सज्जन हैं जिनकी बाल्यावस्था, जवानी में भी भीतर ज्ञान नहीं स्थिर रहता।

गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी में से कुछ प्रमाण आप से साझे करने हैं। बाबा फ़रीद साहिब जी, गुरु तेग बहादर साहिब जी, साहिब श्री गुरु नानक साहिब जी की रसना से उच्चारण किए हुए वचन। गुरु तेग बहादर जी का एक वचन पढ़ते हैं :

तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति।।
कहु नानक भजु हरि मना अउध जातु है बीति।।

(अंग १४२६)

तरनापो तरन अवस्था का शाब्दिक अर्थ कहेंगे, तरन का अर्थ है जवान। तरनापो जो जवानी का समय था, जो यौवन का समय था। जिस वक्त तेरे शरीर में शक्ति थी, वह ऐसे ही चली गई। गुरु तेग बहादर साहिब कह रहे हैं :

तरनापो इउ ही गइओ लीओ जरा तनु जीति।।

'जरा' का अर्थ है 'बुढ़ापा' और बुढ़ापे ने तुझ पर विजय हासिल की। तेरे शरीर को इसने जीत लिया है। तेरे शरीर को बुढ़ापे ने काबू कर लिया है। ऐसे ही चला गया जवानी का वक्त।

SIKHBOOKCLUB.COM

कहु नानक भजु हरि मना

तेग बहादर जी कह रहे हैं, मैं तुझे कह रहा हूं कि हे मेरे मन! तू हरि प्रभु को, उस राम को, वाहिगुरु को जप, क्योंकि :

अउध जातु है बीति।।

जो परमात्मा ने तुझे आयु दी। देख बुढ़ापा आ गया। तेरी ज़िन्दगी का जो ज्यादा वक्त है, व्यर्थ चला गया। और अगला वचन है :

बिरधि भइओ सूझै नही

बुढ़ापा आ गया, अब किसी बात की समझ नहीं आती। इंसान को कुछ पता नहीं चलता कि वह क्या करे, क्योंकि गया हुआ समय, बीता हुआ वक्त, गुज़रे हुए दिन, बीत गई आयु दुबारा कभी भी किसी को नसीब नहीं हुई। एक समझदार विद्वान ने बहुत सुंदर शब्द कहे हैं :

हे मेरे मौला! तेरी दुनिया फ़ानी देखी।
हर चीज़ जहां की आनी जानी देखी।
जो आ के न जाए वो बुढ़ापा देखा,
जो जा के न आए वो जवानी देखी।

हैं तो सभी वस्तुएं ही आने-जाने के खेल पर, परंतु हे मेरे परमात्मा! बुढ़ापा आ जाए तो इंसान को साथ लेकर जाता है और जवानी चली जाए तो यह फिर दुबारा नहीं आती। हजूर वचन करते हैं :

बिरधि भइओ सूझै नही कालु पहूचिओ आनि।।

कुछ समझ नहीं आ रही, सामने मृत्यु दिखाई दे रही है। गुरु तेग बहादर साहिब जी कह रहे हैं :

कहु नानक नर बावरे

'बावरे' का शब्दिक अर्थ होता है 'पागल, बेवकूफ, नासमझ'। कहते हैं, हे बावरे इंसान! आज भी तू परमात्मा को याद क्यों नहीं करता।

SIKHBOOKCLUB.COM

किउ न भजै भगवानु।। *(अंग १४२६)*

तू क्यों नहीं परमात्मा का जाप करता और जब बुढ़ापा आया तो उस अवस्था को बहुत सुंदर बाबा फ़रीद जी ने अपनी रचना में कहा है :

बुढा होआ सेख फरीदु

कहने लगे, बुढ़ापा आ गया है, पर याद रखो उनकी बुढ़ापे में भी एकाग्रता जुड़ी हुई है। अगर भीतर की एकाग्रता नहीं है तो इंसान जवानी में भी बुढ़ापे को निगल लिया। और प्यारिओ! अगर भीतर प्रभु के चरणों में सुरति जुड़ी है तो बुढ़ापे में भी इंसान का अंदर जवान है। भीतर बिलकुल नया है। परंतु बाबा जी ने बाहर के बुढ़ापे की करुणामयी जो अवस्था है, उसका वर्णन करते बख्शिश की है :

बुढा होआ सेख फरीदु कंबणि लगी देह।। *(अंग १३८०)*

तन कांपने लग पड़ा। हाथ-पैर कांपने लग पड़े। गुरु ग्रंथ साहिब में हजूर ने वचन भी कहे हैं :

चरन सीसु कर कंपन लागे

पैर कांप रहे हैं, हाथ कांप रहे हैं, सिर भी कांप रहा है। बिना हिलने से ही अंग हिल रहे हैं।

चरन सीसु कर कंपन लागे नैनी नीरु असार बहै।।

(अंग ४७९)

और नेत्रों से इतना पानी बह रहा है कि उस पानी का कोई अंत नहीं।

जिहवा बचनु सुधु नही निकसै

मनुष्य बोलने का प्रयास करता है, बहुत विद्वान है, परंतु आश्चर्य की बात है कि बुढ़ापे ने इसके लफ़्ज़, इसके शब्द, इसके अक्षरों का उच्चारण ही बदल दिया। शुद्ध बोलने का प्रयास करता है, परंतु कंठ से ही आवाज़ नहीं निकलती। फिर कहने लगे :

तब रे धरम की आस करै।। *(अंग ४७९)*

अब इस इंसान से क्या उम्मीद कर सकते हो। अभी फ़रमान केवल बुढ़ापे के संबंध में गुरबाणी में से आया है। फिर विनती करनी है कि जो वक्त निकल चुका है, उसको पछता कर वर्तमान को तबाह न करे। क्योंकि हमारा एक स्वभाव है कि वर्तमान में जीने वाला इंसान अपनी ज़िन्दगी का भविष्य भी सुनहरा बना लेता है। साधारण रूप से हम कहते हैं कि ज़िन्दगी में इतने वर्ष व्यर्थ गंवा दिए। भाई साहिब भाई वीर सिंघ जी ने बहुत प्यारे शब्द कहे हैं। कहने लगे :

कल्ल चुकी है बीत वस तों दूर नसाई।

कल बीत चुका है और हर पल इंसान की बात बनती है। अगर हम कहें कि भई 24 घंटों के बाद कल बनता है। हमारे बनाए शब्द

हैं। जो श्वास मेरा निकल गया, वह कल है। जो श्वास मेरे भीतर से निकल रहा है, वह मेरा आज है और दूसरे की अभी कोई उम्मीद नहीं, वह आने वाला कल है। हर वक्त तीनों कालों में जीते हैं। भाई साहिब कहते हैं :

कल्ल चुकी है बीत, वस तों दूर नसाई।
भलक अजे है दूर, नहीं विच हत्थां आई।
अज्ज असाडे कोल है, पर विच फिकरां लाई।
कल्ल भलक नूं सोच, अज्ज इह मुफत गवाई।

अगर संभाल सकता है तो इस आज को, वर्तमान को संभाल ले। फिर यहां अब बाबा फरीद जी कहने लगे :

देखु फरीदा जु थीआ दाड़ी होई भूर।।

'भूर' का शाब्दिक अर्थ है 'बिलकुल सफ़ेद हो गई'। सफ़ेद हो गई। कहने लगे, हे फ़रीद! यह देख, अपने चेहरे पर दृष्टि डाल, जो तुझे परमात्मा ने काले केश दिए थे, वे केश बिलकुल सफ़ेद हो चुके हैं।

अगहु नेड़ा आइआ पिछा रहिआ दूरि।। *(अंग १३७८)*

मृत्यु का वक्त बिलकुल नज़दीक आ गया है और जो दिन दूर चले गए हैं, उन्होंने वापिस नहीं आना। वहां उन्होंने फिर एक प्रमाण दिया :

देखु फरीदा जि थीआ सकर होई विसु।।

'सकर' का शाब्दिक अर्थ है 'मीठा'। 'विसु' का अर्थ है 'ज़हर'। इसका भाव है, देख फ़रीद! वह वक्त था जिस समय हर वस्तु को अपने दांतों से चबा कर इस पेट में डालकर हज़म कर लेता था। प्यारिओ! आज वक्त आ गया है जो शक्कर अत्यधिक मीठी थी, देख आज वह मीठी शक्कर भी ज़हर बन गई है। यह वास्तव में बुढ़ापे ने तुझ पर असर कर दिया है।

देखु फरीदा जि थीआ सकर होई विसु।।
सांई बाझहु आपणे वेदण कहीऐ किसु।। *(अंग १३७८)*

बिरधि भइओ सूझै नही...।। *(अंग १४२६)*

बाबा जी ने तीसरा प्रमाण बख्शिश किया :

फरीदा अखी देखि पतीणीआं

देख-देख कर 'पतीणीआं' का अर्थ है 'कमज़ोर हो गईं'। कमज़ोर का शाब्दिक अर्थ है कि भीतर का प्रकाश कमज़ोर हो गया।

फरीदा अखी देखि पतीणीआं सुणि सुणि रीणे कंन।।

सुन सुन कर कान थक गए हैं।

साख पकंदी आईआ

'साख' का शाब्दिक अर्थ है 'शाखाएं, तन की शाखाएं'। जब तन पकना आरंभ हुआ तो बुढ़ापा आया। तब प्राकृतिक तौर पर केशों का रंग सफ़ेद हो गया, इंद्रियों की शक्ति कम हो गई। साहिब कहते हैं :

SIKHBOOKCLUB.COM

फरीदा अखी देखि पतीणीआं सुणि सुणि रीणे कंन।।
साख पकंदी आईआ होर करेंदी वंन।। *(अंग १३७८)*

कहते हैं गुरमुख पर तन के बुढ़ापे का कभी प्रभाव नहीं पड़ता, अगर परमात्मा के चरणों में उसका ध्यान जुड़ा है। अगर ध्यान नहीं है तो बचपन का भी कोई मतलब नहीं। जिन गुरमुखों का मन अपने परमात्मा में है, उनके संबंध में अमृत बाणी के वचन कहे। आज प्राकृतिक तौर पर ये वचन भी गुरु अमरदास जी के हैं। अगर उनका जीवन देखें तो सच मानो, इन श्लोकों की व्याख्या बापू गुरु अमरदास जी का पवित्र जीवन भी कर रहा है। गुरु ग्रंथ साहिब में आया है :

...सठी के बोढेपा आवै।। *(अंग १३८)*

जिस वक्त बाबा अमरदास जी अपने भीतर को सुचेत करके गुरु नानक के दर पर आए हैं तो दुनिया की दृष्टि में गुरु अमरदास

जी के तन को बुढ़ापे ने जीतने का प्रयास किया है। तन पर बुढ़ापा है। अब साठ वर्ष का बुजुर्ग आया है, परंतु उसके भीतर का ध्यान कायम है। उस पर निर्बलता नहीं, भीतर का ध्यान बाबा जी का कमज़ोर नहीं। भीतर वाला जो चाव वह पुराना नहीं, वह नया है। भीतर का चाव ही सब कुछ है। बाबा जी साठ साल की आयु में आए हैं और जिस दिन वे आए हैं उस दिन उन्होंने यह नहीं कहा कि मुझे आयु के लिहाज़ से आप किसी अलग स्थान पर बिठा दो। मैं हाथों से कोई कार्य नहीं कर सकता। मैं कहीं कोई कार्य नहीं कर सकता। उनके पहले वचन थे, जो इतिहास ने संभाल कर रखे हैं। हे गुरु अंगद देव सच्चे पातशाह! मैं आप जी के पावन पवित्र दरबार में समधी की हैसियत से नहीं, संसार के किसी रिश्ते के बंधन में बंध कर नहीं, मैं आप जी के दरबार में एक मामूली-सा सेवक आया हूं। आप रहम करो और मुझे अपने घर से सिक्खी की दात दो और धन्य गुरु अंगद साहिब जी ने बारह वर्ष की सेवा के बाद बख्शिश की। बुढ़ापा है। 72 वर्ष की आयु है प्यारिओ!

गुरमुखि बुढे कदे नाही जिन्हा अंतरि सुरति गिआनु।।

(अंग १४१८)

72 वर्ष का बुजुर्ग खड़ा है और बारह वर्ष तक गागर ढोई है। गुरु ग्रंथ साहिब जी ने एक वचन कहा है कि जब गुरु अमरदास जी खड़े हैं तो जो नेत्रवान हैं उनको गुरु अमरदास के पास कुछ रूहानियत की दातें और संसार की शक्तियां सामने खड़ी दिखीं। गुरु अमरदास जी के बाएं हाथ में रिद्धियां और दाएं हाथ में कमल का फूल है, कमल का निशान है और कहने लगे, जितनी शक्तियां हैं गुरु अमरदास जी की रसना को देखती हैं। इसलिए तू अपनी रसना से बोल तो सही कि बापू अमरदास, हम तेरे आदेश को मानें। 72 वर्ष की आयु, उनका ध्यान कहां स्थिर है। गुरु अंगद साहिब जी ने वहां वचन कहे, कहने लगे :

तुम हो निथावन के थान।

SIKHBOOKCLUB.COM

जब कह दिया कि इसका कोई स्थान नहीं, यह बेचारा टुकड़ों की खातिर भटक रहा है, तो मेरे गुरु अंगद साहिब ने बारह बख्शिशें कीं :

तुम हो निथावन के थान, तुम हो निमाणन के माण।

फिर वहां शब्द प्रयोग किए थे कि :
'निताणिआं दे ताण' और तीसरा वचन :

निओटिआं दी ओट निआसरिआं दा आसरा।
निधरिआं दी धिर निधीरन के धीर।
पीरन के पीर दिआल गई बहोड़।
जगत बंदी छोड़, भंनण घड़न समरत्थ।
सभी जीवका जिस हथ।

यह बारह वरदान हैं। उस बुज़ुर्ग ने बरह वर्ष गागर ढोई बुढ़ापे में और एक-एक बख्शिश का संक्षेप में ज़िक्र करना ज़रूरी है।

तुम हो निथावन के थान।

SIKHBOOKCLUB.COM

कहने लगे, बाबा अमरदास जिस इंसान का कोई स्थान नहीं, पहली बख्शिश यह है कि आपके शीश पर गुरु नानक की रहमत है। आप बेसहारों का सहारा बनोगे।

तुम हो निमाणन के माण।

जिन गरीबों का कोई मान नहीं करेगा, हे बाबा अमरदास! दूसरी बख्शिश यह है कि आप उन गरीबों के मान बन जाओगे।

निआसरिआं दे आसरे

जिसका कोई सहारा नहीं, आप उसका सहारा बनोगे।

निओटिआं दी ओट, निधरिआं दी धिर।

जिस इंसान का कोई साथ नहीं, कोई स्थान नहीं, उसका साथ आप बन जाओगे, उसका आप सहारा बन जाओगे।

निधीरन के धीर।

जिसको कोई धीरज देने वाला नहीं, उसको धीरज देने वाले आप होवोगे।

पीरन के पीर।

तेरे सामने बड़े-बड़े अज़मतों वाले झुक जाएंगे।

दिआल गई बहोड़।

हमेशा दयालु हो। गई बहोड़ का अर्थ है इंसान की जो आत्मिक अवस्था कई जन्मों की चली गई है, हे गुरु अमरदास! तेरा नाम लिया वह आध्यात्मिकता की देन फिर मिल जाती है। बीती हुई अवस्था आप फिर लाते हो। बीते हुए वक्त को वापिस ले आते हो। अगली पंक्ति थी :

भंनण घड़न समरत्थ।

तू चाहे बिगाड़ ले, तू चाहे बना ले। जिस हाथ में बारह बख्शिशें दीं उसको सारे संसार की जीविका पकड़ा दी। सब को तू रिज़क देने वाला है, उनके पास बुढ़ापा है और उन पर भी बुढ़ापा आया है, परंतु उनका भीतर ध्यान यहां स्थिर था।

SIKHBOOKCLUB.COM

तै पढिअउ इकु मनि धरिअउ इकु करि इकु पछाणिओ।।
नयणि बयणि मुहि इकु इकु दुहु ठांइ न जाणिओ।।
सुपनि इकु परतखि इकु इकस महि लीणउ।।
तीस इकु अरु पंजि सिधु पैतीस न खीणउ।।
इकहु जि लाखु लखहु अलखु है इकु इकु करि वरनिअउ।।
गुर अमरदास जालपु भणै तू इकु लोड़हि इकु मंनिअउ।। ३।।

(अंग १३९४)

भीतर का मन ऐसा कि बापू अमरदास को एक के बिना कोई दूसरा याद ही नहीं। हजूर कृपालु जी ने आज पहला वचन किया :

गुरमुख बुढे कदे नाही जिन्हा अंतरि सुरति गिआनु।।

(अंग १४१८)

और बाबा फरीद जी ने जब कहा :

फरीदा कालीं जिनी न राविआ धउली रावै कोइ।।
करि सांई सिउ पिरहड़ी रंगु नवेला होइ।।

(अंग १३७८)

और जिसने किशोरावस्था में परमात्मा को याद नहीं किया तो उसने बुढ़ापे में कहां याद करना है! बाबा जी का विचार भी उचित है। अब जो किशोरावस्था में पाप किए हैं, कोई पूर्ण गुरु हो तो पिछले पाप धोता है नहीं तो बुढ़ापे में अपने किए हुए पाप भी दानव बन कर इंसान को खाते हैं। अपने पापों से मनुष्य को भय लगता है और जैसे-जैसे मृत्यु का दिन समीप आता है, बच्चों की तरह रोना आरंभ कर देता है, क्योंकि उसके द्वारा किए हुए गुनाह उस के सामने खड़े हैं। हजून ने कहा :

फरीदा कालीं जिनी न राविआ धउली रावै कोइ।।
करि सांई सिउ पिरहड़ी रंगु नवेला होइ।।

SIKHBOOKCLUB.COM

बापू अमरदास बुज़ुर्गों की अगुवाई करते हैं।

फरीदा काली धउली साहिबु सदा है

तू एक कदम चल तो सही :

फरीदा काली धउली साहिबु सदा है जे को चिति करे।।
आपणा लाइआ पिरमु न लगई जे लोचै सभु कोइ।।
एहु पिरमु पिआला खसम का जै भावै तै देइ।।

(अंग १३७८)

यह तो उसकी बख़्शिश है। जो गुरु के सामने रहने वाले हैं, उनको बुढ़ापे का दुख कभी तंग नहीं करता और उनका ध्यान कभी नहीं खिन्न होता, क्योंकि उनके पास परमात्मा का स्नेह है। गुरु-घर में एक नहीं कई उदाहरणें हैं। सबसे पहले बाबा बुड्ढा को देखो। बुढ़ापा आयु का नाम नहीं। भाई नंद लाल जी ने कहा कि अगर तू सचमुच बाबा बुड्ढा बनना चाहता है, बुज़ुर्ग बनना चाहता है तो

भक्ति कर, क्योंकि भक्ति वाला ही बुज़ुर्ग है। जिसके पास बंदगी नहीं, वह **मनमुखु बालकु बिरधि समानि है**। वह तो जवान भी बूढ़ा है और जो बूढ़ा भी है, वह ख्वार है। बाबा बुड्ढा जी 125 वर्ष की आयु में भी कह रहे हैं, अंतिम समय भी यह कह रहे हैं कि जाप करो, ध्यान करो, सिमरन करो, सेवा करो। सभी सिक्खी के वचन ग्रहण करो। परंतु ज़िन्दगी में अपनी मित्रता को न जानो। अगर कुछ लेना है तो कृपा गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के चरणों की लो।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर और उनका चार वर्षों का पुत्र बाबा अजय सिंघ भी बाबा है। पिता भी बाबा, पुत्र भी बाबा, अब बाबा शब्द हम दादा के लिए प्रयोग करते हैं।

बाबा फ़तह सिंघ की आयु, बाबा ज़ोरावर सिंघ की आयु देखो, परंतु उनका ध्यान इतना स्थिर था कि ज्यादा आयु वाले तो हो सकता है शायद डगमगा जाएं, परंतु उनके भीतर बैठा हुआ बुज़ुर्ग कह रहा था कि :

SIKHBOOKCLUB.COM

सच को मिटाओगे तो मिटोगे जहान से।

किसी बुज़ुर्ग के शब्द हैं। उनके भीतर बुढ़ापा बोल रहा था।

डरता नहीं है अकाल किसी शहंशाह की शान से।
उपदेश अपना सुन लो ज़रा दिल के कान से।
कह रहे हैं हम तुमको ख़ुदा की ज़ुबान से।

तुम्हें हम परमात्मा की ज़ुबान से बोल कर कहते हैं। परमात्मा, सत्य को मिटाने वाले मिट गए। वह बुनियाद पर केवल बच्चे नहीं खड़े, बुज़ुर्ग बोल रहे हैं कि :

हम जान दे के औरों की जानें बचा चले।
सिक्खी की नींव हम हैं सरों पर उठा चले।
गुरिआई का हैं किस्सा जहां में बना चले।
सिंघों की सलतनत का पौधा लगा चले।

गद्दी से ताजो-तख़्त बस अब कौम पाएगी।
दुनिया में ज़ालिमों का निशां तक मिटाएगी। १०९।

(शहीदानि-वफ़ा)

आयु बच्चों वाली थी, परंतु भीतर स्थिर ध्यान बुज़ुर्गों वाला था।

हम बाबा दीप सिंघ जी का नाम लेते हैं तो बहुत प्रसन्न होते हैं। मैं कहता हूं कि बाबा दीप सिंघ जी का नाम आप आज खुले मैदान में लेकर बैठ जाओ तो संगतों की भीड़ लग जाती है। दूसरी तरफ गुरु रामदास जी के दर की सेवा करने वाले, शहीद होने वाले जिंदा शहीद बाबा दीप सिंघ जी का स्थान है और मैं कहता हूं कि हरेक इंसान को पता लग जाना चाहिए कि अगर गुरु बेअंत, बड़ा है पर गुरु के चरणों में जो सिक्ख लीन हो जाए, मेरा गुरु उस सिक्ख की भी जय-जयकार करा देता है। इस महापुरुष की क्या आयु थी, जिस आयु में उन्होंने खण्डा पकड़ा। बहुत ही वृद्ध आयु है। 75 वर्ष के समीप पहुंच जाना। अब इस आयु में उस बुज़ुर्ग ने खण्डा पकड़ा और अकेला खण्डा पकड़ कर पीछे नहीं चला, उसने बाकायदा रेखा खींची और रेखा खींच कर कहा कि मेरे पीछे वह आए जिसने शीश हथेली पर रख कर आना है। जिसको अपने तन का मोह है वह वापिस चला जाए, क्योंकि मैं उतनी देर तक मरना नहीं चाहता जितनी देर तक हरिमंदर साहिब में शहीद न हो जाऊं। अद्‌भुत प्रण कर बैठे हैं।

अब दूसरी उदाहरण एक 80 वर्ष का बुज़ुर्ग चौराहे पर बैठा है। लकड़ी का टुकड़ा लेकर आए, जब उसका हाथ काटने लगे तो उसने एक दम हाथ खींच लिये। जल्लाद ने समझा कि डर गया है। कहने लगे कि तुझे पता नहीं कि बंद-बंद कहां से बनता है। यह देख उंगलियों के चार-चार बंद बनते हैं। सत्रह बंद बनते हैं। इस कलाई को काटने से पहले 8-10 बंद बनते हैं। तू इनको क्यों काट रहा है? अब 80 वर्ष का बुज़ुर्ग काटने वाले को कह रहा है कि नहीं, बंद इस हिस्से से आरंभ होता है। हिस्से-हिस्से से काट। साथ ऊंची-ऊंची कह रहा था :

SIKHBOOKCLUB.COM

अंग-अंग 'ते मेरे तूं कातल, खंजर जदों चलाएंगा।
कट्ट-कट्ट के बंद खून तूं, धरती मेरे वगाएंगा।
उह दरद पिआले भर-भर के, असीं जाम वांग पी जावांगे।
सुण कातल असीं रल-मिल दोवें, अजब तमाशा लावांगे।

तीसरा बुजुर्ग है, आपके समीप गांव कुक्कड़ खेड़ी का मैदान है। 30 हज़ार के बड़े घल्लूघारे में एक दिन में सिक्ख काट दिए गए। 30 हज़ार बुज़ुर्ग, बच्चे जब सभी मर गए तो संध्या काल अब्दाली प्रसन्न था कि सिक्ख खत्म हो गए। एक बुजुर्ग जिसका सारा तन घावों से भरा था, उसके कैंप के सामने खड़ा होकर कहता है कि अभी मूल बाकी है, कैसा जश्न मना रहा है! आ तू, मेरे सामने आ। बुज़ुर्गी नाम आयु का नहीं, बुज़ुर्गी तो भीतर के ध्यान का नाम है। हजूर कहते हैं कि वे हमेशा आत्मिक प्रसन्नता में रहते हैं। आनंद का अर्थ है आत्मिक प्रसन्नता। विवेक, जिनको अच्छे-बुरे की पहचान हो गई। बुज़ुर्ग वह है जो दुख में और सुख में एक समान रहता है।

जो नरु दुख मै दुखु नही मानै।।
सुख सनेहु अरु भै नही जा कै कंचन माटी मानै।।

(अंग ६३३)

जो इस बात को समझ गया, वह हमेशा के लिए सुखी है। उन गुरमुखों को केवल एक परमात्मा ही नज़र आया है। आत्मिक तल पर जीने वाले हरेक के भीतर से उस आत्म राम प्रभु को पहचान गए। गुरमुख वह है जिसका ध्यान खिन्न न हो। अब अगला श्लोक साहिब कहते हैं :

मनमुखु बालकु बिरधि समानि है

जो मनमुख मनुष्य है, चाहे वह बच्चा हो चाहे बुज़ुर्ग हो, एक समान है। जैसे बच्चे का भीतर नहीं टिकता, बच्चे के भीतर को कभी भी टिकाव नहीं आता। हकीकत यह है कि उस वृद्ध को, उस बुज़ुर्ग को कैसे बुज़ुर्ग कहोगे जिसका अपना भीतर ही बेसहारों की तरह सदा खिन्न हुआ रहता है। कारण यह है कि :

जिन्हा अंतरि हरि सुरति नाही।।

क्योंकि उनके अंदर प्रभु का ध्यान नहीं। परमात्मा का ध्यान नहीं, वाहिगुरु का विचार नहीं।

विचि हउमै करम कमावदे

वे आयु बीतने के बावजूद भी भीतर के अहंकार को छोड़ने के लिए तैयार नहीं। सच्चे पातशाह कहने लगे :

सभ धरम राइ कै जांही।।

ऐसे मनुष्य, ऐसी खिन्न हुई सुरति वाले मनुष्य बापू अमरदास कहते हैं कि सभी यमराज की सेना हैं। यमराज की सेना का मतलब ये यमदूतों के अधीन हैं। यह परमात्मा के द्वार जाने वाला खेल नहीं, यह यमराज के सामने पेश होंगे। हजूर कृपालु जी कृपा करते हैं :

गुरमुखि हछे निरमले

जिनका ज्ञान स्थिर है वे अच्छे हैं, निर्मल हैं, उनके भीतर कोई मैल नहीं, किसी किस्म का रंचक मात्र भी मैल का कोई अंश नहीं। वास्तव में निर्मल को जप-जप कर निर्मल हो गए।

SIKHBOOKCLUB.COM

गुर कै सबदि सुभाइ।।

गुरु के शब्दों में अपने आप उनके अंदर को पवित्रता मिली। गुरमुखो! मैल उतारने का प्रयास करेंगे तो ही मैल उतरेगी। जिस दिन मन निर्मल हो जाएगा, उस महापुरुष ने कहा :

कबीर मनु निरमलु भइआ जैसा गंगा नीरु।।
पाछै लागो हरि फिरै कहत कबीर कबीर।।

(अंग १३६७)

गुरमुखि हछे निरमले गुर कै सबदि सुभाइ।।
ओना मैलु पतंगु न लगई

मतलब ज़रा-सी भी मैल, रंचक मात्र भी मैल नहीं लगती।

ओना मैलु पतंगु न लगई जि चलनि सतिगुर भाइ।।

जो गुरु के हुक्म में चलें उनको मैल कहां लगनी है।

मनमुख जूठि न उतरै

मनमुख मनुष्य के भीतर की मैल, भीतर की अपवित्रता नहीं उतरती।

जे सउ धोवण पाइ॥

अगर बाहर से सौ बार नहाता है।

नानक गुरमुखि मेलिअनु

धन्य गुरु अमरदास जी कहते हैं कि गुरु जी ने दया करके गुरमुखों को मिलाया है :

गुर कै अंकि समाइ॥४५॥ *(अंग १४१८)*

'अंक' का शाब्दिक अर्थ होता है 'गोदी'। जो निर्मल होते हैं उनको गुरु जी अपनी गोदी में बिठा लेते हैं, उनको अपने सीने से लगा लेते हैं। प्यारिओ! मैंने अर्ज़ किया था कि ज़िन्दगी का अर्थ गुरु की गोद ही बनाएं। ज़िन्दगी का उद्देश्य दुनिया का सिंहासन न बनाएं। गुरु की गोद में बहुत आनंद है जो गद्दी की तरफ चल पड़ते हैं उनके गिरने के भी चांस हैं और जो गोद में बैठ गया, उसके चारों ओर गुरु की बांहें होती हैं। उसको :

ताती वाउ न लगई पारब्रहम सरणाई॥ *(अंग ८१९)*

अउखी घड़ी न देखण देई अपना बिरदु समाले॥

(अंग ६८२)

जब हमने गुरु के समीप आना है तो हम गोदी मांगते हैं। हजूर कहते हैं कि गुरु ने अपने अंक में बिठा लिया, गोदी में बिठा लिया और जिनको गोदी में बिठा लिया, उन्होंने एक दिन अपना रूप भी दे दिया, तो ही अरदास में हम रोज़ पढ़ते हैं—सच्चे पातशाह! कोई वह वक्त आएगा कि :

प्रभ कीजै क्रिपा निधान हम हरि गुन गावहगे॥

गुरु रामदास जी!

हउ तुमरी करउ नित आस प्रभ मोहि कब गलि लावहिगे।।

(अंग १३२१)

हे सच्चे पातशाह! वह वक्त कब आएगा जब मेरे जैसे गिरे हुए को अपनी गोदी में ले लोगे? जो गोदी में बैठ गया, वह शब्द-ज्ञान में लीन हो गया। अब गोदी में बैठना भी अपने ज्ञान को शब्द में स्थिर कर बैठना है।

नानक गुरमुखि मेलिअनु गुर कै अंकि समाइ।।४५।।

वह गुरु की गोदी में भी लीन हो गए। इतनी विनतियां प्रवान करना। हुई भूल-चूक की क्षमा!

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

SIKHBOOKCLUB.COM

एको नामु धिआइ

सिरीरागु महला ५।।
जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ से पूरा परधान।।
जिन कउ आपि दइआलु होइ तिन उपजै मनि गिआनु।।
जिन कउ मसतकि लिखिआ तिन पाइआ हरि नामु।। १।।
मन मेरे एको नामु धिआइ।।
सरब सुखा सुख ऊपजहि दरगह पैधा जाइ।। १।। रहाउ।।
जनम मरण का भउ गइआ भाउ भगति गोपाल।।
साधू संगति निरमला आपि करे प्रतिपाल।।
जनम मरण की मलु कटीऐ गुर दरसनु देखि निहाल।। २।।
थान थनंतरि रवि रहिआ पारब्रहमु प्रभु सोइ।।
सभना दाता एकु है दूजा नाही कोइ।।
तिसु सरणाई छुटीऐ कीता लोड़े सु होइ।। ३।।
जिन मनि वसिआ पारब्रहमु से पूरे परधान।।
तिन की सोभा निरमली परगटु भई जहान।।
जिनी मेरा प्रभु धिआइआ नानक तिन कुरबान।। ४।। १०।। ८०।।

(अंग ४५)

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

परम सम्मानयोग्य साधसंगत जी! आप साहिब सतिगुरु गुरु ग्रंथ साहिब सच्चे पातशाह जी की पावन पवित्र चरण-शरण में मीरी-पीरी के मालिक, श्री अकाल तख़्त के सृजनहार, बंदी छोड़ धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब छठम पीर का आप जी आगमन-पर्व मनाने के लिए

एकत्रित हुए हो। अमृत वचन कीर्तन आप जी ने गुरमुख प्यारों से श्रवण किया है। आओ! जो क्रमवार इस स्थान पर गुरु-शब्द विचार चल रहा है, आज धन्य गुरु अरजन साहिब जी के द्वारा उच्चारण किए हुए अमृत वचन आप जी ने श्रवण किए हैं। इस शब्द का विचार हम दो दिनों में समाप्त करेंगे ताकि आज धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब सच्चे पातशाह हज़ूर के पवित्र जीवन पर सिक्ख जगत को उनके द्वारा दी हुई भेंटों का संक्षेप विचार आप संगत से किया जा सके।

इस शब्द के रहाउ का उद्देश्य केवल हमने विचार करना है। भाव कि इस शब्द की जो आरंभता है, उसमें प्रभु के दर पर कौन मुख्य है। गुरु-घर में किसको मुख्य माना गया है, वास्तव में उसकी व्याख्या है। प्रथम अमृत वचन है :

जिना सतिगुर सिउ चितु लाइआ से पूरे परधान।।

जिन मनुष्यों ने अपने मन को सतिगुरु के शब्द में लगा दिया है, असल में वे ही मुख्य हैं। गुरु-दर पर, परमात्मा के दर पर, परमेश्वर के दर पर उसकी मुख्यता स्वीकार की जाती है। फिर इस शब्द के अंत में हज़ूर ने फ़रमाया है :

SIKHBOOKCLUB.COM

जिन मनि वसिआ पारब्रहमु से पूरे परधान।।

जिन्होंने मन को गुरु-शब्द में लगाया, जिनके मन में पारब्रह्म परमेश्वर बस गया, वे पूर्ण मुखिया हैं, वे पथ-प्रदर्शक हैं, जिनको हम पूर्ण पुरुष कहते हैं।

आज मीरी-पीरी के मालिक के चरणों की शरण का सहारा लें। **दल भंजन गुर सूरमा** दया करे। हमें सभी कहने-सुनने वालों को भीतर की स्थिरता दे और अपने पवित्र जीवन और गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी का विचार करा ले। आशीर्वाद दो और उच्चारण करो जी वाहिगुरु!

साहिब सतिगुरु गुरु पंचम पातशाह महाराज जी ने इस पवित्र शब्द के जो रहाउ के वचन हैं, इसके पवित्र वचन के आधे हिस्से में साधाना का, परिश्रम का और वचन की प्राप्ति का विचार किया

है और उसके अगले हिस्से में किया हुआ परिश्रम, की हुई साधना, की हुई प्राप्ति का क्या फल मिलेगा, धन्य गुरु अरजन साहिब ने वह वर्णन किया है। शब्द की रहाउ की अमृत पंक्तियां हैं :

मन मेरे एको नामु धिआइ।।

हे मेरे मन! तू एक ही परिपूर्ण परमात्मा वाहिगुरु जी के नाम का ध्यान कर और एक के ध्यान में ही मन को जपने से क्या मिलेगा?

सरब सुखा सुख ऊपजहि दरगह पैधा जाइ।।

याद रख, सभी सुखों से श्रेष्ठ सुख तेरे भीतर पैदा होंगे। परमात्मा की दरगाह में तुझे सम्मान के वस्त्र के साथ तेरी आत्मा ढक दी जाएगी। तू सम्मान से जाएगा। सभी मानवता के भीतर कामना है, वह केवल इतना कह कर कि मुझे सुख की प्राप्ति हो जाए, परंतु यह बात अलग है कि हर इंसान के सुख की परिभाषा अपनी-अपनी है। गुरु ग्रंथ साहिब जी की अमृत बाणी ने उस सुख का वर्णन किया है जिस सुख की ख़्वाहिश करोड़ों में से कोई एक-आध परमात्मा की भक्ति करने वाला सेवकजन पूर्ति करता है। साधारण रूप से हम सुख की परिभाषा देते हैं कि अगर धन बहुत अधिक होगा, घर, दुकान, मकान, दुनिया की सहूलतें आ जाने से मैं दोबारा सुखी हूं। यह हमारे भीतर के सुख की परिभाषा है। जो आत्मिक सुख धन्य गुरु ग्रंथ साहिब जी की बाणी में दर्ज है, वह आत्मिक सुख शायद हमारे द्वारा प्राप्त किए हुए प्रकाश में से नहीं मिले। साहिब कृपालु जी दया करते हैं कि सही सुख है भीतर को शांति मिल जाना, भीतर को स्थिरता मिल जानी।

धन्य गुरु अरजन साहिब जी ने अमृत बाणी में एक वचन किया है। आप कई बार उस सुख की बात बाणी में पढ़ते हो, परंतू हजूर उसको आत्मिक सुख नहीं मानते परंतु उसको दुनिसा की सहूलतों के साथ ज़रूर दर्जा देंगे। हजूर ने फ़रमाया है कि अगर हम धन एकत्र करके सोचते हैं कि इसमें सुख है तो यह कार्य सिद्धि के लिए तो अवश्य कार्य करेगा परंतु अगर आत्मिक सुख की ख़्वाहिश

रखकर चलें तो शायद हर अरबपति इनता दुखी न होता, अगर उसको धन के बदले कहीं आत्मिक सुख, आत्मिक शांति मिल जाती। साहिब ने वचन किए :

सुखु नाही बहुतै धनि खाटे।।

बहुत अत्यधिक धन एकत्र करके भी आत्मिक सुख नहीं।

सुखु नाही पेखे निरति नाटे।।

क्या यह बाहर के नाटक, यह बाहर की मौज-मस्ती देख कर, नेत्रों को चैन मिलता है? न तो इसमें आत्मिक सुख है, न तो बाहर का धन इकट्ठा करके सुख है।

सुखु नाही बहु देस कमाए।।

सभी सुखों से श्रेष्ठ कौन-सा सुख है? साहिब वचन करते हैं :

सरब सुखा हरि हरि गुण गाए।।१।।

जिसने हरि के गुणों का गायन किया, उसको सभी सुखों का मूल सुख आत्मिक सुख मिला। यह शब्द की रहाउ के विचार हैं।

SIKHBOOKCLUB.COM

सूख सहज आनंद लहहु।।

हे मनुष्य! तू आत्मिक सुख, भीतर का सहज, अगर भीतर का आनंद प्राप्त करना चाहता है तो :

सूख सहज आनंद लहहु।।
साधसंगति पाईऐ वडभागी
गुरमुखि हरि हरि नामु कहहु।। *(अंग ११४७)*

गुरु के सामने होकर उस परिपूर्ण परमात्मा सुख-निधान सुखों के भंडार को अपनी जुबान से कह। फिर तुझे आत्मिक सुख की प्राप्ति होगी। धन्य गुरु अरजन साहिब कह रहे हैं कि इस बाहर की सहूलतों में सुख नहीं। हजूर कृपालु जी के हम अमृत वचन पढ़ते हैं। परमात्मा जी के वचन हैं। सुखमनी साहिब जी का पाठ आप जी करते हो। मेरे सतिगुरु जी ने सुखमनी साहिब जी की पवित्र

बाणी की प्रथम असटपदी सुख की प्राप्ति से शुरू की है और उसके साथ ही सुख प्राप्त होने का ढंग। सुख प्राप्त होने का तरीका भी परमात्मा जी ने फ़रमाया है और साहिब जी के वचन हैं :

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ।।

हज़ूर कहते हैं कि मैं परमात्मा जी के नाम का सिमरन करता हूं और उसको सिमरन करके, उसको जप-जप कर, उसका ध्यान करके आत्मिक सुख मानता हूं। जिन वस्तुओं से दुखी हैं सिमरन करने से वह दुख स्वयं चला गया।

सिमरउ सिमरि सिमरि सुखु पावउ।।
कलि कलेस तन माहि मिटावउ।।
सिमरउ जासु बिसुंभर एकै।।
नामु जपत अगनत अनेकै।।
बेद पुरान सिंम्रिति सुधाख्यर।।
कीने राम नाम इक आख्यर।।
किनका एक जिसु जीअ बसावै।।
ता की महिमा गनी न आवै।।
कांखी एकै दरस तुहारो।।
नानक उन संगि मोहि उधारो।।१।।

SIKHBOOKCLUB.COM

सही सुख क्या है? सुख सही में है :

सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु।।

परमामा के नाम में ही आत्मिक सुख है।

सुखमनी सुख अंम्रित प्रभ नामु।।

धन्य गुरु अरजन साहिब कहते हैं कि यह सुख बाहर नहीं।

भगत जना कै मनि बिस्राम।। रहाउ।। *(अंग २६२)*

परमात्मा की भक्ति करने वाले, सिमरन करने वालों के भीतर एक आत्मिक सुख का स्थान है, विश्राम है। उनके भीतर को सुख

है। धन्य गुरु अरजन साहिब आज कह रहे हैं कि मेरे मन! एक नाम का ध्यान कर, इस नाम में से तुझे सुख मिलेगा, जिस सुख का मुकाबला दुनिया की कोई सहूलत नहीं कर सकती। साहिब धन्य गुरु अजरन देव जी का एक वचन है। जैतसरी की वार की यह पउड़ी है। यह ठीक है कि सहूलतों या ज़रूरतों के बिना भी इंसान का भीतर कभी नहीं टिकता। जिस इंसान को पेट भर कर रोटी नहीं मिलती, ज्यादा वे इंसान धर्म की दुनिया में प्रवेश करते केवल एक ध्यान को लेकर आगे चलते हैं कि मैं अगर धर्म प्राप्त करूं, शायद मुझे पेट भर कर भोजन मिल जाए। उनको पेट भर भोजन मिलना ही अंतिम सुख है। अगर किसी इंसान का तन रोगी है तो वह सोचता है कि धर्म में प्रवेश करूं तो शायद मेरे दुख की समाप्ति हो जाए। शारीरिक दुखों की समाप्ति ही उनके लिए सुख की परिभाषा है। अगर किसी इंसान को संसार की किसी पदवी की आवश्यकता है तो वह इस एकाग्रता को लेकर धर्म प्राप्त करता है और उस पदवी की प्राप्ति ही उसके लिए अंतिम सुख है। मेरे सतिगुरु जी वचन करते हैं कि नहीं, वास्तव में जैसे-जैसे तू उस वस्तु को प्राप्त करेगा, उसके बाद तेरे भीतर व्याकुलता पैदा होगी। उससे तेरे भीतर को शांति नहीं मिलेगी। जितना तू भरेगा उतना और खाली हो जाएगा। भीतर संतुष्ट नहीं होगा।

सतिगुरु को प्यारिओ! समझदार लोग उदाहरण देते थे। फिर मैं विनती करूं, सुविधाओं से शारीरिक आराम मिल सकता है, परंतु आत्मिक सुख सहूलतों से नहीं प्राप्त होगा। मेरे सतिगुरु के भीतर के सुख की बात करते बाणी में कुछ प्रमाण दिए हैं। कई बार हम देखते हैं कि पुरातन समय में तीन वस्तुओं को बहुत शीतल माना जाता था। चाहे गर्मी में भी हम सर्दी पैदा कर लेते हैं। चंद्रमा की किरणें मनुष्य की चमड़ी को अवश्य चैन देती हैं, परंतु जिस इंसान का भीतर गर्म हो वह पूर्णमाशी की रात्रि, सारी रात चंद्रमा के सामने बैठा रहे, परंतु प्यारिओ! चंद्रमा की किरणें उसकी चमड़ी को अवश्य

SIKHBOOKCLUB.COM

सुख देंगी, परंतु उसके मन को पूर्णमाशी की रात्रि का चंद्रमा भी कभी सुख नहीं दे सकता।

पुरातन समय एक और तरीका था कि जब किसी का तन गर्म होता था तो लोग चंदन का लेप अपने तन पर लगाते थे ताकि उसकी गर्मी से बचा जाए। उसका प्रभाव शीतल है, सही कारण है जब सांप दुखी होकर विष पर क्रोधित होता है, चिल्लाता है, गर्मी से, गर्माहट से भटकता है तो फिर सांप चंदन के पेड़ की तरफ जाता है, क्योंकि चंदन को जीभ से चाट कर भीतर का चैन, भीतर से शीत मिलती है। चंद्रमा भी शीतल है, चंदन की लकड़ी भी शीतल है, परंतु सतिगुरु ने बाणी में कहा है कि मैंने वे लोग देखे हैं जो अपने मस्तक पर चंदन का तिलक लगाते हैं और तन के कई हिस्सों पर चंदन का लेप करते हैं, परंतु इतने आश्चर्य की बात है कि चंदन का लेप करने, चंदन में रहकर भी उनके भीतर शांति नहीं, क्यों? क्योंकि चंदन केवल चमड़ी को शीतलता दे सकता है, चंदन इस चमड़ी के भीतर मन को कभी भी शीतलता नहीं दे सकता। न तो चंद्रमा की चांदनी में शीतलता है, न चंदन की लकड़ी में, उसके लेप में आत्मिक शीतलता है।

SIKHBOOKCLUB.COM

साहिब कहते हैं कि अगर कोई इंसान बर्फ की चोटी और ऊंचे पर्वत के शिखर पर जा बैठे और सोचे शायद मुझे इस बर्फ में से आत्मिक ठंड मिल जाए। बर्फ में जम तो सकता है परंतु प्यारिओ! भीतर की शीतलता बर्फ में से भी, ऊंचे पहाड़ों की ठंडी पवन में से भी नहीं मिलती। धन्य गुरु अरजन देव सच्चे पातशाह! वो भीतर की शीतलता कहां से मिलेगी? भीतर की शांति कहां से मिलेगी? बाबा जी ने बाणी में से दो बातें कहीं। साहिब के वचन हैं—यह 52 उंगलियां चंदन को अगर तू रगड़-रगड़ कर तन पर लेप कर ले तो इसमें से भी तुझे शांति नहीं मिलेगी। अगर कहीं कोई परमात्मा की बंदगी करने वाले गुरमुख-जन परमात्मा के नाम में ओत-प्रोत हुए शीतलता के पुतले गुरमुख प्यारे मिल जाएं। गुरु की संगत में

तो शीतलता मिल सकेगी। चंदन से, चंद्रमा से और सर्द इलाके में से कहीं आत्मिक शांति नहीं।

धन्य गुरु अरजन देव सच्चे पातशाह का 400 साला शहादत वाला दिन था, क्योंकि आज हमने हरिगोबिंद साहिब जी का विचार भी अवश्य करना है। 400 वर्ष हो गए धन्य गुरु अरजन साहिब जी को शहीद हुए। वे शीतलता के पुतले, वे शीतलता के द्वार जिनके पास केवल है ही शांति और चैन। धन्य गुरु अरजन देव जी के अंदर की शीतलता की एक बात याद रखो कि वे गर्म तवे पर भी नहीं जले थे। भीतर की शीतलता उबलती देग में भी नहीं अलग हुई थी। गुरु अरजन देव जी की शीतलता शीश पर पड़ी गर्म रेत से भी नहीं जली थी। अगर हम देखें कि वह जो शीतलता गुरु अरजन देव जी के भीतर है, उस ठंड से वह हरिमंदर साहिब बैठ कर साईं की स्तुति करते थे, जिस शीतलता से वह अपने बड़े भाई के कुबोल भी सह लेते थे। इस शीतलता से वह सुलही ख़ान की परवाह भी नहीं करते थे। धन्य गुरु अरजन साहिब वह कौन-सी शीतलता है? वह कौन-से स्थान पर स्थिर है? गुरमुखो! तन अवश्य लाहौर गया, परंतु भीतर की शीतलता धन्य गुरु अरजन देव हमें गुरु ग्रंथ साहिब जी की अमृत बाणी में देकर गए।

SIKHBOOKCLUB.COM

आज भी गुरु अरजन साहिब जी का कोई शब्द पढ़ कर देखो, 30 रागों में मेरे कृपालु का कोई शब्द पढ़ कर देखो, हरेक शबद में अंदर की शीतलता मिलेगी। हरेक शब्द में से भीतर का चैन मिलेगा। धन्य गुरु अरजन देव सच्चे पातशाह ने कहा कि अगर भीतर की शीतलता लेना चाहते हो तो नाम के बिना कहीं और शीतलता नहीं। भीतर का सुख केवल नाम में ही है, क्योंकि जिसे हम याद करते हैं उसका प्रभाव हमारे तन पर स्वयं हो जाता है। सतिगुरु गुरु ग्रंथ साहिब जी ने वचन किए हैं। मैं प्रमाण दे रहा हूं कि परमात्मा के नाम में सुख है। हम कहेंगे कि याद करने में कैसा सुख? बाकी तो बाहर कही सुविधाएं हैं। पैसा कमाया तो हमारे पास बाहर का

सुख आया। अब भीतर का सुख केवल याद करके कैसे आ जाएगा? मेरे सतिगुरु कहते हैं कि हम जो कुछ भी याद करेंगे वैसा प्रभाव हमारे मन पर होगा। दुखांत को याद करके दुख मिलेगा। सुखांत को याद करके भीतर को सुख मिलेगा। काम को याद करके भीतर कामना पैदा होगी। शत्रु को याद करके भीतर क्रोध पैदा होगा। धन को याद करके भीतर लोभ पैदा होगा। अहंकार को याद करके भीतर अहंकार पैदा होगा। अगर यह सोचने से तन पर कुछ बीतता है तो जिसने सुख-निधान वाहिगुरु को याद किया, याद रखो गुरमुखो! उसके भीतर को परमात्मा का सुख स्वयं ही मिलेगा।

प्यारिओ! परमात्मा से मिलना तो हो सकता है अगर कई जन्मों का परिश्रम हो, परंतु जैसे-जैसे उसके समीप तू कदम बढ़ाएगा, सच मानो, तेरे मन को नाम की हवाएं अपने आप लगने लग जाएंगी। शिखर तो दूर है परंतु हवा तो पहले ही पहुंच जाती है। बाबा जी ने बाणी में कहा है :

SIKHBOOKCLUB.COM

सोइ सुणंदड़ी मेरा तनु मनु मउला

अभी समाचार ही सुना है, मैं तुझ तक पहुंचा नहीं कि गुरु शीतलता का घर है। नाम के बिना प्यारिओ! कभी कोई शीतल नहीं हुआ। इंसान अत्यधिक क्रोध में दुखी हो, मैं गुरु ग्रंथ साहिब पर विश्वास से कहता हूं कि शांत होकर किसी पर लड़ाई के बजाए अगर इंसान सुखमनी साहिब का गुटका लेकर प्रथम असटपदी स्थिर होकर पढ़ ले तो मेरा ख़्याल है इंसान क्रोधित नहीं रह जाएगा। गुरु अरजन देव जी की प्रथम असटपदी में भी इंसान के भीतर को शीतल कर देते हैं। कोई तजुर्बा करके देख तो सही, सुकून मिलता है :

सोइ सुणंदड़ी मेरा तनु मनु मउला नामु जपंदड़ी लाली।।
पंधि जुलंदड़ी मेरा अंदरु ठंढा

'पंध जुलंदड़ी' का अर्थ है 'यात्रा पर चलना'। अभी मंज़िल नहीं मिली। अभी चल रहा है। हे प्रभु जी! तेरे द्वार तक अभी नहीं

पहुंचा। केवल चलने से ही मेरा भीतर शीतल हो गया है और जिस दिन तेरे दर्शन होंगे उस दिन कितनी दातें देगा?

पंधि जुलंदड़ी मेरा अंदरु ठंढा गुर दरसनु देखि निहाली।।

(अंग ९६४)

धन्य गुरु अरजन साहिब ने आज वचन कहा है—

मन मेरे एको नामु धिआइ।।
सरब सुखा सुख ऊपजहि दरगह पैधा जाइ।।

(अंग ४५)

तू परमात्मा की दरगाह में जाएगा, तुझे सुख मिलेगा, कहां से?

रसना गुण गोपाल निधि गाइण।।
सांति सहजु रहसु मनि उपजिओ सगले दूख पलाइण।।

(अंग ७१३)

सुख मिलेगा :

जउ सुख कउ चाहै सदा सरनि राम की लेह।।
कहु नानक सुनि रे मना दुरलभ मानुख देह।।

(अंग १४२७)

SIKHBOOKCLUB.COM

साहिब बाणी में दया करते हैं कि अगर सुख चाहता है प्यारे, फिर परमात्मा के नाम की शरण में आ। धन्य गुरु अरजन साहिब ने वचन किए, तुझे सुख मिलेगा। सत्य है कि गुरु अरजन देव जी ने नहीं कहा, उन्होंने सुख को महसूस किया है। भट्टों ने दो वचन गुरु अरजन साहिब के लिए प्रथम सवय्ये में कहे थे। यह दो वचन शिखर के वचन हैं। धार्मिकता में वह पदवी शिखर की पदवी है। वे दो पदवियां कौन-सी हैं, गुरु पदवी तो है ही, परंतु जब उनका जन्म हुआ उनके जन्म के लिए दो शब्द भट्टों ने कहे। एक शब्द कहा कि गुरु अरजन देव जन्म से ब्रह्मज्ञानी हैं और दूसरा वचन कहा कि गुरु अरजन देव गुरु रामदास के घर आए, उस दिन भक्त ही बन कर आए। गुरु अरजन देव जी कहते हैं कि ब्रह्मज्ञानी किसी

एक विशेष प्रकार के पहने हुए परिधान का नाम नहीं। प्यारिओ! ब्रह्मज्ञानी वह गुण है जो गुरु अरजन साहिब जी ने बाणी में कहे और आप जी ने अपने जीवन में उन गुणों की व्याख्या भी की। साहिब गुरु अरजन देव जी ने वचन भी किया कि ब्रह्मज्ञानी के मन में नफ़रत नहीं। ब्रह्मज्ञानी के सामने शत्रु आ जाए, चाहे ब्रह्मज्ञानी के सामने मित्र आ जाए, उसके अंदर की अवस्था दोनों के लिए एक समान है और गुरु साहिब ने बाणी में फ़रमाया :

ब्रहम गिआनी कै द्रिसटि समानि।।
जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान।।

कहने लगे, ब्रह्मज्ञानी की दृष्टि इस तरह है। ब्रह्मज्ञानी पवन के समान है। उनके पास शत्रु आया। उनके पास मित्र आया, गुरु अरजन देव जी के भीतर की समदृष्टि समान है। दूसरा वचन उन्होंने किया कि इतने धैर्यवान हैं ब्रह्मज्ञानी। साहिब जी ने वचन किया :

SIKHBOOKCLUB.COM

ब्रहम गिआनी कै धीरजु एक।।
जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप।। *(अंग २७२)*

एक तो उन्होंने ब्रह्म को पहचाना और दूसरी बात कि :

गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास भगत उतरि आयउ।।

(अंग १४०७)

धन्य गुरु अरजन देव परमात्मा के भक्त हैं, अकेले ब्रह्म को पहचानने वाले नहीं, अकेले भक्त-शब्द नहीं। भट्टों ने शिखर पर जाकर अंतिम वचन कहे। कहने लगे :

इह पधति ते मत चूकहि रे मन
भेदु बिभेदु न जान बीअउ।।
परतछि रिदै गुर अरजुन कै
हरि पूरन ब्रहमि निवासु लीअउ।। *(अंग १४०९)*

उन्होंने अंतिम वचन कहे :

जग अउरु न याहि महा तम मै
अवतारु उजागरु आनि कीअउ।।
तिन के दुख कोटिक दूरि गए
मथुरा जिन्ह अंम्रित नामु पीअउ।।
इह पधति ते मत चूकहि रे मन
भेदु बिभेदु न जान बीअउ।।
परतछि रिदै गुर अरजुन कै
हरि पूरन ब्रहमि निवासु लीअउ।।

साहिब कृपालु जी के बारे में उन्होंने कहा :

जब लउ नही भाग लिलार उदै
तब लउ भ्रमते फिरते बहु धायउ।।
कलि घोर समुद्र मै बूडत थे
कबहू मिटि है नही रे पछुतायउ।।
ततु बिचारु यहै मथुरा
जग तारन कउ अवतारु बनायउ।।

SIKHBOOKCLUB.COM

केवल ब्रह्म और भक्ति ही नहीं :

जप्यउ जिन्ह अरजुन देव गुरू
फिरि संकट जोनि गरभ न आयउ।। *(अंग १४०९)*

धन्य गुरु अरजन देव जी तख़्त-सिंहासन पर विराजमान हुए। चाहे आज हम अकाल तख़्त साहिब जी का विचार अवश्य करेंगे, धन्य गुरु अरजन साहिब के बारे में तो गुरु साहिब की अमृत बाणी में जिन्होंने देखा उन समकालीन महापुरुषों ने अमृत बाणी में यह वचन कह दिये :

तखति बैठा अरजन गुरू सतिगुर का खिवै चंदोआ।।
उगवणहु तै आथवणहु चहु चकी कीअनु लोआ।।

(अंग ९६८)

भट्टों ने जो अंतिम पंक्ति भट्टों के सवय्यों की है :

छत्रु सिंघासनु पिरथमी गुर अरजुन कउ दे आइअउ।।

(अंग १४०९)

धन्य गुरु अरजन साहिब जी को छत्र, सिंहासन, धार्मिकता का राज देकर आए। गुरु अरजन साहिब को गुरुता-गद्दी पर विराजमान हुए कई वर्ष गुज़र गए हैं। अभी घर के भीतर कोई संतान नहीं। देखो कई बार छोटी घटनाएं बहुत बड़े इतिहास को जन्म दे जाती हैं। धन्य गुरु अरजन साहिब के बारे में इतिहास कहता है कि अपने बड़े भाई पृथिए के अन्याय के बावजूद भी उनके पुत्र मेहरबान को बहुत प्रेम करते थे और आप सबको पता है कि गुरु ग्रंथ साहिब जी की अमृत बाणी में एक ऐसा शब्द है जो गुरु रामदास जी ने अपनी जुबान से अपने बड़े पुत्र को संबोधित करके कहा और उस शब्द में से दो-तीन बातें कमाल की कहीं। एक बात कही, पुत्र पापों को इकट्ठा कर रहा है। दूसरी बात कही, जिस दिन धन का मान करके माँ-बाप के सामने बोलता है, यह धन कभी किसी का नहीं हुआ। तीसरी बात कही, पुत्र मेरे, अभी भी भीतर की अग्नि को नाम से बुझाकर जो वचन गुरु नानक साहिब कहते हैं, मान ले। इससे तेरे अंदर को शांति मिलेगी। हम शब्द पढ़ते हैं :

काहे पूत झगरत हउ संगि बाप।।

पुत्र पिता से क्यों झगड़ा करता है?

जिन के जणे बडीरे तुम हउ तिन सिउ झगरत पाप।।

(अंग १२००)

धन्य गुरु अरजन साहिब तख़्त पर बैठे हैं। उन्होंने अपने भतीजे को खूब प्यार किया और पास बिठाया और जब गुरु अरजन साहिब की उपमा हुई और एक दिन बाबा प्रिथिए की पत्नी, जिसका इतिहास में करमो नाम बताया है, उसने एक ही शब्द कहा कि अगर आपने आदेश माना होता, पिता-गुरु जी के वचन संभाल कर रखे होते तो आज आप तख़्त पर बैठे होते। जिस तरह गंगा जी को लोग प्रेम करते

हैं और प्यारिओ! इस बात पर ध्यान देना। ईर्ष्या एक इतनी बुरी बीमारी है जिससे आज तक शायद कोई ही बच सका हो। हम शायद कथा करते कहते हैं, परंतु तुच्छता तो हमारे भीतर है। दो वस्तुओं ने इंसान को कभी सुख नहीं दिया। एक बेगानी आशा और दूसरा बेगाना सहारा। जो इंसान बेगानी आशा पर जीता है वह इंसान हमेशा दूसरों की तरफ और दूसरों की थाली पर दृष्टि रखता है। जो इंसान बेगाने सहारे पर जीता है, उस इंसान को भीतर से शांति नहीं मिल सकती। उस ईर्ष्यावश हुई ने कहा, देख उनके पास इतने सुख हैं, संगत माथा टेक रही है, धन-पदार्थ आते हैं। प्रिथिया समझता है कि गद्दी रुपयों का साधन है, माथा टेकने का एक साधन है। शायद उसको पता नहीं कि जिस गुरु अरजन देव जी को आज सिंहासन पर बिठा कर संगत माथा टेकती है, याद रखो, इस गुरु अरजन देव जी ने कल को गर्म तवी पर भी बैठना है। अकेला सुख का ही साधन नहीं। धन्य गुरु अरजन देव सच्चे पातशाह के प्रति करमो ने शब्द कहे। वहां दासी यह सुन रही थी। उनका न कोई पुत्र-पुत्री, उन्होंने एक दिन दुनिया से चले जाना है। जो कुछ उनके पास है वह एक दिन हमारे पास ही आएगा। दासी ने शब्द सुने, जाकर माता गंगा को ये शब्द कहे। आज के समय में जो कहा जाता है कि बाबा बुड्ढा साहिब जी के पास क्यों अरदास करने गए? गुरु अरजन देव समरथ थे। गुरु हरिक्रिशन साहिब समरथ थे। वे एक पल में गीता के अर्थ कर सकते थे परंतु जब अपनी दया से सम्मान करना हो तो गुरु समरथ गुरु प्राप्ति वालों को, गिरे हुओं को भी सम्मान देते हैं। माता गंगा जी के पास जाकर दासी ने ये शब्द कहे कि माता जी, आज मैं उनके घर में सुनकर आई हूं। उन्होंने कहा है कि उनके घर न पुत्र, न पुत्री, कोई सदस्य नहीं होगा। अब जो कुछ है हमारे घर में आएगा।

माता गंगा जी ने सुना और चुप कर गए। फिर गुरु अरजन देव सच्चे पातशाह आए तो विनती की। इससे एक घटना और घटित हुई है। सिक्ख इतिहास कहता है, एक दिन माता गंगा जी केश स्नान करके केश सुखा रही हैं। केशों में से जल की कुछ बूंदें बाबा

SIKHBOOKCLUB.COM

प्रिथिया की पत्नी के तन पर पड़ीं तो उसने शब्द कहे थे कि अपनी तो गोद सूनी है, मेरे परिवार को भी खत्म करना चाहती है, मेरे परिवार को भी तबाह करना चाहती है। आज गंगा जी ने दोनों बातें सुन लीं। धन्य गुरु अरजन साहिब घर आए। हाथ जोड़ कर विनती की, सच्चे पातशाह! एक कृपा करो। आप परमात्मा हो, सब कुछ बनाने-बिगाड़ने में समर्थ हो, हरन-भरन आप जी का नेत्र-फोर का काम है, आप दया करके मेरी गोद भर दो। धन्य गुरु अरजन साहिब जी का उत्तर था, गंगा! अगर संतान-प्राप्ति की इच्छा है तो एक काम करो। धन्य गुरु नानक साहिब जी का अनन्य सिक्ख है। उसको हम बाबा बुड्ढा साहिब कहते हैं। कहने लगे, जाओ, उनसे अरदास कराओ। साईं वाले हैं, अरदास करेंगे। उनकी अरदास कबूल होगी।

●

SIKHBOOKCLUB.COM

पंजि पिआले पंजि पीर

माता गंगा जी चल पड़े हैं। उन्होंने अपने हाथ में मिस्से प्रसादे लिए हैं। दहीं बनाया, मक्खन लिया, लस्सी ली, सिर पर भोजन रखा। प्यारिओ! उस वक्त आषाढ़ का महीना था। जब माता जी गए उस वक्त धान की फसल लहलहा रही थी और बाबा बुड्ढा साहिब जी की आयु उस वक्त नौ दहाकों से ऊपर निकल चुकी थी। बाबा जी बीड़ में गुरु के खेत थे, उन खेतों में काम करते हैं। आज सुबह थोड़ी-सी धूप निकली तो आकाश में बादल बनने आरंभ हुए। दूर से देखा कि माता गंगा जी चले आ रहे हैं। जब आए तो बाबा बुड्ढा जी धान के खेत की मेढ़ पर बैठे थे। माता जी को देखकर उठकर खड़े हुए, शब्द कहे, माँ! माता गंगा जी ने देखा कि गुरु नानक साहिब का अनन्य सिक्ख है। कहने लगे, माँ! आज सुबह से बहुत भूख लग रही थी, सोचता था आज कहां से खाने को मिले, परंतु देखो पुत्र की भूख केवल माँ जानती है। लाओ माँ, आज जो कुछ बना कर लाई हो, अपने बच्चे को खिलाओ। माता गंगा जी प्रसन्न हैं। गुरु नानक का सिक्ख आज इतना प्रसन्न है। प्यारिओ! अपने हाथों से माता जी के सिर से वे बर्तन नीचे रखे। रोटी पर आचार और प्याज रखकर दिया और एक प्याला लस्सी का दिया। जब बाबा जी ग्रास तोड़ कर मुंह में डालने लगे तो हाथ जोड़कर कहा, परमात्मा वालो! आप जी के वचन सत्य हों, कृपा करो। पूछा, माँ! आपने हाथ जोड़े। कहने लगे, हां, एक अरदास करो कि गुरु नानक साहिब के द्वार से पुत्र की दात मांगने आई हूं।

इतिहास कहता है कि आकाश में बने बादलों में से बिजली चमकी, बादल गरजे। अपने हाथ से उस प्याज को तोड़ा और ठहाका लगाकर हंस कर कहा, मां!

तुमरे ग्रहि प्रगटे हंउ जोधा।

तेरे घर के अंदर शूरवीर आएगा। जैसे हमने हाथ से प्याज तोड़ा है, वह दुष्टों के सिर को तोड़ने वाला आ रहा है।

माता गंगा जी वापिस आए और आज प्रसन्न थे। धन्य गुरु अरजन देव जी ने पूछा तो आगे से उत्तर मिला कि आज बाबा जी ने ये वचन कहे हैं। धन्य गुरु अरजन साहिब ने कहा, याद रखो गंगा जी कि साधू के वचन, हर वस्तु काल के अधीन है, इसको काल खा जाएगा, परंतु याद रखो, साधू के वचन को कभी काल नहीं खाता।

इस वक्त के दौरान एक घटना हुई। गुरु अरजन साहिब अमृतसर की धरती पर हैं और प्रिथिया सुलही ख़ान को चढ़ा कर लाया था। गुरु अरजन साहिब गुरु की वडाली हैं और आज धन्य गुरु अरजन साहिब के गृह में माता गंगा जी के उदर से धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब जी का अवतार हुआ। धन्य गुरु अरजन साहिब जी ने गुरु नानक का, गुरु रामदास का धन्यवाद करते ये शब्द कहे थे :

सतिगुर साचै दीआ भेजि।।
चिरु जीवनु उपजिआ संजोगि।।
उदरै माहि आइ कीआ निवासु।।
माता कै मनि बहुतु बिगासु।।
जंमिआ पूतु भगतु गोविंद का।।
प्रगटिआ सभ महि लिखिआ धुर का।। *(अंग ३९६)*

गुरु अरजन देव जी आए और भट्टों ने कहा कि :

तै जनमत गुरमति ब्रहमु पछाणिओ।।

भट्टों ने कहा :

गुरु अरजुनु घरि गुर रामदास भगत उतरि आयउ।।

(अंग १४०७)

जो पुत्र पैदा हुआ, यह गोबिंद का भक्त पैदा हुआ है। साथ एक बात कही कि लोग कहते थे कि इस पीढ़ी ने गुरु अरजन देव के बाद खत्म हो जाना है, परंतु नहीं, आज :

SIKHBOOKCLUB.COM

वधी वेलि बहु पीड़ी चाली।।
धरम कला हरि बंधि बहाली।। *(अंग ३९६)*

अब यह पीढ़ी आगे बढ़ी। धन्य गुरु अरजन साहिब के घर गुरु हरिगोबिंद साहिब प्रगटे हैं। सबसे पहले समाचार बाबा बुड्ढा साहिब जी को दिया गया। बाबा बुड्ढा साहिब आए, उन्होंने बालक के दर्शन किए। धन्य गुरु अरजन साहिब ने जब अपने बालक को बाबा बुड्ढा जी की गोदी में डाला तो उस वक्त बाबा बुड्ढा जी के मुख से नाम रखा गया था हरिगोबिंद, क्योंकि गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ बाद में एक जगह पर एकत्रित की गई थी। बाबा बुड्ढा साहिब ने नाम रखा हरिगोबिंद। बाबा जी बहुत प्रसन्न हैं। गुरु अरजन साहिब ने प्रसन्नता में एक कुआं बनवाया, जिस कुएं में छः हरट हैं और उसका नाम रखा गया छेहरटा। उस गुरुद्वारे को हम छेहरटा साहिब कहते हैं। पुत्र आने की खुशी में लोगों में पानी बांटा।

प्रिथिए के घर में आज खाना नहीं बना, चूल्हा नहीं जला; इसके घर में आज दीया नहीं जला। गुरु हरिगोबिंद साहिब के जन्म के वक्त इसकी पत्नी ने फिर ताना मारा, न आपने गुरु-पिता की सेवा की। कहते थे, इसके घर संतान नहीं होनी। तेरे वचन भी निष्फल चले गए। तो आगे कहने लगे कि चल, मेरे वचन निष्फल चले गए तो क्या बात है, मैंने बालक को वडाली से अमृतसर तक आने ही नहीं देना। कैसे? कहने लगा, मैं इसकी मृत्यु का प्रबंध किए बैठा हूं। उस दाई का नाम इतिहास में फत्तो लिखा है। फत्तो दाई को पैसे दिए कि तू इस बच्चे को विष दे। कहते हैं, दाई विष देने के लिए गई। गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने दूध नहीं पिया। परंतु कहते हैं उसके द्वारा लगाया हुआ विष उसके तन पर प्रभाव कर गया। अकड़ कर दाई फत्तो मरने से पहले बता गई कि मुझे क्षमा करना, मुझे विष देने के लिए आपके बड़े भाई बाबा प्रिथीए ने भेजा है।

धन्य गुरु अरजन साहिब ने अकाल पुरख का धन्यवाद किया है, परंतु बाबा प्रिथिए के लिए कोई बुरा शब्द न कहा। उसके बाद प्रिथिए ने दूसरा खेल रचाया। इसने सपेरा भेजा था कि बालक

SIKHBOOKCLUB.COM

हरिगोबिंद खेलता होगा तो सांप से डंस कर मरवा देना। उसकी मृत्यु हो जाए और गद्दी मेरे घर आ जाए। गुरु हरिगोबिंद साहिब ने सांप को पटका-पटका कर मार दिया परंतु सपेरे का सांप गुरु हरिगोबिंद साहिब को डस नहीं सका। इसने तीसरा यत्न किया, उसका वचन बाणी में भी है :

लेपु ना लागो तिल का मूलि।।
दुसटु ब्राहमणु मूआ होइ कै सूल।। *(अंग ३७१)*

उस ब्राह्मण को भेजा था कि दही में विष मिला कर दे, परंतु प्यारिओ! कुत्ते को दही डाला गया, कुत्ता तो मर गया, परंतु दुष्ट ब्राह्मण के अंदर से पीड़ा उठी। गुरु हरिगोबिंद साहिब को मारने वाला पीड़ा से वह स्वयं मरा और मरने से पूर्व सब कुछ बता गया। गुरु अरजन साहिब तो एक ही बात कह रहे थे कि :

मै सभु किछु छोडि प्रभ तुही धिआइआ।। *(अंग ३७१)*

गुरु अरजन साहिब कह रहे थे :

ताती वाउ न लगई पारब्रहम सरणाई।।
चउगिरद हमारै राम कार दुखु लगै न भाई।।

(अंग ८१९)

धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब की पढ़ाई की बात चली। उस वक्त बाबा बुड्ढा साहिब जी को बुलाया गया। बाबा बुड्ढा साहिब ने पूछा, सतिगुरु इस सिक्ख सेवक को आदेश, किस लिए बुलाया गया? कहने लगे, बालक हरिगोबिंद जी को आप ज्ञान दोगे। बाबा जी का उत्तर था—सच्चे पातशाह! मैं खेती में हल चलाने वाला हूं, तेरे घर में पशु चराने वाला हूं, कोई विद्वान पंडित ढूंढो जो बालक को विद्या दे। गुरु अरजन साहिब जी के वचन थे—बाबा जी! जिस दिन आप जी गुरु नानक साहिब को मिले, आप जी को उन्होंने बाल उम्र में आशीश दी। गुण देखकर आपको बालक से 'बुड्ढे' की पदवी दी गई। जिन गुणों से आप 'बुड्ढे' बने, बस वही गुण-विद्या मेरे पुत्र को दे दो।

धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब को १ੴ तालीम बाबा बुड्ढा साहिब ने दी। अकेली विद्या नहीं, घुड़सवारी, शस्त्र विद्या, तैराकी, अनेक प्रकार के जो गुण हैं, वे बाबा बुड्ढा साहिब जी ने बालक हरिगोबिंद साहिब को सिखाए। अंत में चेचक ने हमला किया और धन्य गुरु अरजन साहिब ने चेचक के हमले के वक्त भी परमात्मा का धन्यवाद करते एक शब्द उच्चारण किया और यह शब्द गुरु ग्रंथ साहिब में है। जब पुत्र पर चेचक ने हमला किया तो उस वक्त लोग कहते थे, शीतला आई है, परंतु गुरु साहिब ने कोई देवी-पूजन नहीं किया। वचन किए :

नेत्र प्रगासु कीआ गुरदेव।।
भरम गए पूरन भई सेव।। १ ।। रहाउ।।

देवी-पूजन नहीं कया। कहते हैं, मेरे सारे भ्रम खत्म हो गए।

सीतला ते रखिआ बिहारी।।
पारब्रहम प्रभ किरपा धारी।। १ ।।
नानक नामु जपै सो जीवै।।
साधसंगि हरि अंम्रित पीवै।। *(अंग २००)*

धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब अरोग्य हुए हैं। धन्य गुरु अरजन साहिब शहीद होने के लिए लाहौर गए हैं। धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब को एक शब्द कहा—बेटा! ये आदि सिक्ख हैं। इनका कहा हुआ गुरु नानक साहिब का वचन समझना। धन्य गुरु अरजन साहिब के सामने दो सिक्ख आए थे। एक भाई जैता दूसरा भाई शिंगारू। ये शस्त्र लाए और कहा गुरु जी यह शस्त्र आप जी की भेंट हैं और भाई मनी सिंघ जी लिखते हैं कि गुरु अरजन साहिब ने कहा हमने शस्त्र पकड़ने हैं। हरिगोबिंद का रूप धारण करके हमने मीरी-पीरी के दो शस्त्र धारण करने हैं। कहने लगे, हम शस्त्र की प्रीति से मीर की मीरी को खींचेंगे और शस्त्र की प्रीति करके पीर की पीरी को खींचेंगे।

धन्य गुरु अरजन साहिब पांच सिक्ख साथ लेकर गए। ये पांच हैं—भाई बिधी चंद, भाई जेठा, भाई लंगाह, भाई पैड़ा और भाई पिराणा। धन्य गुरु अरजन साहिब लाहौर चले गए। हजूर को पांच दिन

तक गर्म तवे पर कष्ट दिया गया। 22 मई 1606 को धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब अमृतसर साहिब की धरती से चलते हैं। 30 मई 1606 को धन्य गुरु अरजन देव जी शहीदी का जाम पीते हैं। धन्य गुरु अरजन साहिब की शहीदी के बाद आज पांच सिक्ख अमृतसर की धरती पर वापिस आए हैं। संगत और गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को आकर बताया। सभी अत्याचारों का वर्णन किया गया। धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने पिता जी की शहीदी के संबंध में सुना और हज़ूर ने एक दया भरा वचन कहा। सतिगुरु ने अपने हाथ में ईंट पकड़ी। इतिहास कहता है कि सतिगुरु ने, जो अकाल तख़्त का स्थान है, तख़्त की पहली ईंट अपने हाथ से रखी। फिर दो और सिक्ख बाबा बुड्ढा जी और भाई गुरदास जी को अपनी रखी हुई ईंटें चुनने के लिए कहा और गुर बिलास के वचन हैं कि :

किसी राज नहि हाथ लगायो। बुड्ढा औ गुरदास बनायो।

(गुर बिलास पा: ६)

SIKHBOOKCLUB.COM

बाबा बुड्ढा और भाई गुरदास ने बनाया और इस तख़्त का नाम अकाल बुंगा भी था परंतु आज हम जो नाम लेते हैं, गुर बिलास से शब्द तख़्त भी है, इसका नाम रखा गया अकाल तख़्त। अकाल शब्द सबसे पहले गुरु नानक जी ने अपनी जुबान से उच्चारण किया। हज़ूर ने शब्द कहा अकाल, बाकी हर वस्तु काल के अधीन है। परंतु गुरु हरिगोबिंद साहिब ने कहा परमात्मा का तख़्त काल के अधीन नहीं। गुरमुखो! काल का अर्थ है समय और काल का अर्थ है मृत्यु।

दिल्ली का तख़्त जहां जहांगीर बैठता था, वह काल का तख़्त था, अकाल का नहीं। गुरु अरजन देव जी की बाणी का आदेश आज भी सिक्ख सत्कार से मानते हैं, परंतु जिस तख़्त पर जहांगीर बैठता था, काल का ग्रास जहांगीर को भी खा गया और वक्त का ग्रास तख़्त को भी खा गया। वह काल के, मृत्यु के अधीन है। गुरु जी ने नाम रखा अकाल। गुरु ग्रंथ साहिब जी की जो बाणी है, इसने इंसान को हर प्रकार की गुलामी से उसको मुक्ति दिलाई है। धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने आवाज़ दी। कहने लगे, हरिमंदर साहिब के अंदर अमृत

वेले आसा दी वार का कीर्तन होगा। यह नहीं कहा, मुसल्ला फूंक दो, कीर्तन बंद कर दो, क्योंकि बाणी सिक्ख के अंदर की धार्मिकता की रीढ़ की हड्डी है। जो इंसान बाणी से, नाम से, सिमरन से टूट गया, वह चाहे जितनी मर्ज़ी राज की बातें करे तो क्षमा करना, वह राज भी कल को आएगा तो ज़ुल्म की इंतहा करेगा। जिस इंसान के भीतर धर्म नहीं वह राज भी केवल माया की कामना है। पहले धर्म है। भाई गुरदास जी को आप जी ने पढ़ा-सुना है। ध्रुव का कई बार विचार हुआ। ध्रुव माँ के पास आया। उसको उस दिन ठोकर लगी, क्योंकि उसको तख़्त से नीचे उतारा गया था। पिता तख़्त पर बैठा था। ध्रुव पिता की गोद में बैठा था और सौतेली माँ ने आते ही ध्रुव को बांह से पकड़कर पिता की गोद से नीचे उतार कर कहा कि तू इस गोद में नहीं बैठ सकता। उसने माँ को आते ही यह कहा था कि जब तख़्त से धक्के पड़े तो तख़्त कैसे हासिल किया जाए। उसने पूछा :

किसु उदम ते राजु मिलि सत्रू ते सभि होवनि मीता?

मेरी माँ! राज कैसे मिल सकता है? तो समझदार माँ ने कहा कि अगर पुत्र अकेले राज की मांग लेकर चला है तो ज़ालिम भी बन सकता है। पहली बात यह धर्म की प्राप्ति करे। कहने लगी, पुत्र!

परमेसरु आराधीऐ जिदू होइऐ पतित पुनीता।

(वार १०, पउड़ी १)

पुत्र धर्म की प्राप्ति कर तो तुझे राज मिलेगा और अकेले राज की बातें करते रहे तो गुरु जी ने बाणी में कहा :

दानं परा पूरबेण भुंचंते महीपते।।

पूरबले दान से तुझे पदवी मिल गई। गुरु अरजन देव साहिब कहने लगे :

बिपरीत बुध्यं मारत लोकह नानक चिरंकाल दुख भोगते।।

(अंग १३५६)

ऐसे राजा मृत्यु के बाद दुख सहते हैं। गुरु हरिगोबिंद साहिब ने आज दो कृपाणें मंगवाईं। बाबा बुड्ढा जी ने जिस वक्त कृपाणें पहनाईं

थीं, गुरमुखो, उस दिन बाबा बुड्ढा साहिब जी की आयु 100 वर्ष के करीब थी। 99 वर्ष और 7 माह की हम कह लें। बाबा बुड्ढा जी ने दो कृपाणें आज पहनाई हैं, क्योंकि बाबा बुड्ढा जी एक वो इतिहास का ग्रंथ हैं। मैंने शब्द ग्रंथ प्रयोग किया है, जिसने अपनी आंखों से गुरबाणी का कीर्तन रबाब से भी सुना, आंखों से देखा और कानों से सुना। जिसने अपनी आंखों से गुरबाणी कहते गुरबाणी का युग भी देखा, उस बाबा ने आज तीसरा पड़ाव भी दिया। अपने हाथों से और उसने शस्त्रों का भी युग आरंभ किया। बाबा बुड्ढा जी ने दो कृपाणें पहनाईं।

धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने तख़्त से पहले आदेश दिया। आदेश सारे सिक्खों के लिए था, वह था कि आज के बाद मेरे पास सुंदर घोड़े लाए जाएं, सुंदर जवानियां भेंट की जाएं, सुंदर शस्त्र लाए जाएं और साथ जो कथन के शब्द थे, क्योंकि बहुत संगत थी, गद्दी-नशीनी थी, मीरी-पीरी की कृपाणें पहनी गईं, तख़्त रचाया गया। आवाज़ दी गई, मत घबराओ कि हम मुट्ठी भर सिक्ख हैं। जितनी भी आप निकलती हुई नदियां देखते हो, ये सभी पर्वतों के छोटे-छोटे स्रोतों से निकलती हैं। एक बार स्रोत निकल जाए तो नदियों को कभी पर्वतों की चट्टानें भी नहीं रोक सकतीं। एक छोटी सी माचिस की तीली पूरे जंगल को जला कर राख कर सकती है। ढाढियों को कहा कि आज के आद आप जवानों का खून गर्माने वाली वारें गाओ। आपकी सारंगी की तार में से जवानों के खून को गर्माने के लिए वारें निकलें।

उस वक्त सुर सिंघ गांव के नौजवान उठे। प्यारिओ! उन्होंने हाथ जोड़ कर कहा, गुरु हरिगोबिंद साहिब सच्चे पातशाह! तेरे चरणों में अरदास है। एक कृपा करो कि छः महीने बाद तन ढकने को वस्त्र दे देना, दो वक्त की रोटी दे देना। आज के बाद हमने घर नहीं जाना। इस तन की जहां ज़रूरत हो इसे इस्तेमाल कर लेना। धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब के सामने फिर दो ढाढी खड़े हुए। ये भी दोनों भाई—नत्था और अब्दुल्ला सुरसिंघ गांव के थे। गुरमुखो! यह अच्छा गाते थे। गुरु हरिगोबिंद साहिब को किसी ने हाथी भेंट किया और मेरी सरकार ने ढाढियों को हाथी भेंट में दे दिया। कहने लगे, आप शूरवीरों की वारें गाने वाले पैदल क्यों आओ। आज के

बाद हाथी पर चढ़कर आना। वह चढ़े अवश्य परंतु उन्होंने हाथ जोड़कर कहा, सच्चे पातशाह! हम तो गायक हैं, आपकी प्रशंसा करने वाले हैं। यह हाथी आपको अच्छे लगते हैं। गुरु साहिब तख़्त पर बैठे, दो कृपाणें पहनीं और आज जो प्रताप था, इसको सोन कवि ने गुरबिलास पातशाही ६ में लिखा है कि धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के बैठने से यह तख़्त शोभा देने लगा है। धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब जी का नूर नहीं बताया जा सकता। चमकता चेहरा है। चंद्रमा और सूर्य आज दोनों फीके लग रहे हैं। जब मीरी और पीरी का मालिक तख़्त पर बैठा तो पहले परमात्मा को याद किया। अब हम तख़्त तो सभी ढूंढते हैं, परंतु परमात्मा को कौन याद करे? गुरु ग्रंथ साहिब जी को हमने अगर सचमुच गुरु माना हो। न्यायमूर्ति कुर्सी पर बैठा हो, किसी की हिम्मत नहीं कि सांस ले सके। प्यारिओ! योग्य गुरु बैठा हो और आप मनमर्ज़ी करें। इसका मतलब सारे पखंड करते हैं। गुरु ग्रंथ साहिब जी को गुरु मानने के लिए तैयार नहीं। वह इसलिए मानते हैं क्योंकि तेरे करके हमें ख़ज़ाना मिलना है :

कबीर साचा सतिगुरु किआ करै जउ सिखा महि चूक।।
अंधे एक न लागई जिउ बांसु बजाईऐ फूक।।

(अंग १३७२)

धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब बैठे हैं। उस दिन दोनों भाइयों ने गाया। कहने लगे, दो कृपाणें बंधी हैं एक मीरी की, एक पीरी की। मीरी की कृपाण तो है परंतु पीरी की क्यों? हम कहेंगे तलवार से बाहर वाले शत्रु पर विजय हासिल की जा सकती है, परंतु पीरी के लिए, धार्मिकता के लिए तलवार क्यों? क्योंकि गुरमुखो! मीरी की तलवार वही पकड़ेगा जो पहले भीतर से पीरी की धार्मिकता के मार्ग पर चला होगा। पीरी की तलवार को बाबा फ़रीद जी ने कहा कि :

वाट हमारी खरी उडीणी।। खंनिअहु तिखी बहुतु पिईणी।।
उसु ऊपरि है मारगु मेरा।। सेख फरीदा पंथु सम्हारि सवेरा।।

(अंग ७९४)

इस पीरी की तलवार को गुरु अमरदास ने कहा है :

खंनिअहु तिखी वालहु निकी एतु मारगि जाणा।।

(अंग ९१८)

हजूर सिंहासन पर बैठे। दो बादशाह गुरु हरिगोबिंद साहिब जी के जीवन काल में रहे हैं। एक जहांगीर और दूसरा शाहजहां। सिक्खों में नई आत्मा डाली गई। जहांगीर अभी अपने सिंहासन पर है। गुरु हरिगोबिंद साहिब और जहांगीर की मुलाकात हुई। साहिब धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब आगरा मिले। सिक्ख कई दिनों का एक सिक्का संभाल कर बैठा था और मन में एक भय था कि मैं निर्धन हूं, तू पातशाह है। तुम्हारे पास चलकर नहीं आ सकता। कभी शुभ वक्त आए तो पातशाह तू दर्शन दे और इन नेत्रों से तेरे दर्शन करूं। यह सिक्का तुम्हारे चरणों की भेंट है, मैंने संभाल कर रखा है। मेरे तन छोड़ने से पहले अपनी अमानत ले लेना। धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब गए, इस घास खोदने वाले सिक्ख को किसी ने कहा, सिक्खा! आज समाचार मिला है कि तेरे मन का सुलतान धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब सच्चे पातशाह आए हैं। चलो दर्शन कर लो। कहते हैं कि तन मन खिल गया। कहता है सतिगुरु के लिए सिक्का और गुरु के घोड़े के लिए सुंदर घास खोदकर छांटकर लाया।

SIKHBOOKCLUB.COM

इतिहास कहता है कि उसने भूल से पातशाह का पूछा और अधिकारियों ने जहांगीर के कैंप की ओर इशारा कर दिया। चला गया। सिक्का और घास की गठरी रखकर एक बात कही, कहने लगा, जन्म-मृत्यु तोड़ दो। परमात्मा! मृत्यु का भय खत्म करो। जहांगीर कांप गया। उसने अपनी ज़ुबान से कहा, सिक्खा! मैं बादशाह हूं, सच्चे पातशाह साथ वाले कैंप में हैं। सिक्ख ने सिक्का उठाया, घास की गठरी उठाई। बस इतनी बात हम सारे समझ जाएं सिंहासन पर बैठने वाले, सिंहासन को मानने वाले। गुरमुखो! हम सिंहासन इसलिए प्रयोग करते हैं ताकि हमें जहांगीर मिल जाए। जहांगीर के सामने रखा हुआ सिक्का और घास की गठरी उठाई, उसने हाथ पकड़कर कहा तुम्हें पता नहीं कि सुलतान के आगे सिक्का और घास रखकर उठाना इसका तिरस्कार है और उस

निर्धन सिक्ख ने कहा, याद रखना, मैं पातशाह को मानने वाला हूं, मैं बादशाह के राज्य में नहीं रहता। उसने कहा, मैं इसके बदले सोने की मोहरें दूंगा, सिक्का और घास की गठरी मत उठा। कहने लगा, याद रख, जिसका राज हो, सिक्के भी उसके चलते हैं। तेरा राज असत्य है, असत्य राज के सिक्के सच्चे पातशाह के दरबार में नहीं चलेंगे। इस सिक्के को अपनी मोहर न समझ, इस सिक्के में केवल प्रेम की टकसाल की मुहर लगी है। याद रखो, पातशाह के दरबार में प्रेम के सिक्के चलते हैं, उसके राज में असत्य के सिक्के नहीं चलते। घास की गठरी और सिक्का उठा कर लाओ। धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब स्वयं लेने आए हैं और कहने लगे, मुझे घास की गठरी पकड़ा। जहांगीर दंग था। कहता, हे मन! पातशाह भी तो ही फिर सिक्ख मानते हैं। जब पातशाह भी सिंहासन छोड़ कर अपने प्यारों को आगे लेने के लिए आया। धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब बैठे हैं सिंहासन पर। यहां कहे वचन नत्था और अबदुल्ला जी ने, भाई गुरदास जी ने कलम उठाई, कहते हैं :

SIKHBOOKCLUB.COM

पंजि पिआले पंजि पीर

सत्य, संतोष, दया, धर्म और धीरज, ये पांच गुणों के प्याले। गुरु नानक साहिब से गुरु अरजन देव तक उन्होंने इन गुणों का वर्णन किया।

पंजि पिआले पंजि पीर छठमु पीरु बैठा गुरु भारी।

अब छठम पीर गुर भारी कैसे? यहां समझदार लोग कहते हैं कि देखो! हम क्यों मीरी-पीरी का मालिक कहेंगे। दूसरे गुरुओं से भेदभाव नहीं। एक नदी की धारा पर्वत से जमी हुई चमकी पत्थर में से निर्मल जल निकलता है। धारा बनकर चला है। वह मानो उस धरती पर चला जा रहा है। सामने एक चट्टान आ जाए। उससे पानी रुक गया। टकराने के बाद उस चट्टान को नीचे रखकर उसके ऊपर होकर जब आबशार बन कर गिरा, पानी तो पहले भी सारा अच्छा है। उससे आबशार बनी है परंतु जहां आबशार बनती है, लोग वहां खड़े होकर देखते हैं कि टकराने वाले के ऊपर से भी पानी निकल गया।

पंजि पिआले पंजि पीर छठमु पीरु बैठा गुरु भारी।
अरजनु काइआ पलटि कै मूरति हरिगोबिंद सवारी।
चली पीड़ी सोढीआं रूपु दिखावणि वारो वारी।
दलि भंजन गुरु सूरमा वड जोधा बहु परउपकारी।
पुछनि सिख अरदासि करि छिअ महलां तकि दरसु निहारी।

आपने छः पातशाहों तक दर्शन किए गुरु हरिगोबिंद साहिब।

अगम अगोचर सतिगुरू बोले मुख ते सुणहु संसारी।...
जुगि जुगि सतिगुरु धरे अवतारी।। *(वार १, पउड़ी ४८)*

छः के दर्शन किए और अगर चार और देखोगे, जिससे भीतर को शांति मिलेगी। सतिगुरु रहमत करें।

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

SIKHBOOKCLUB.COM

जीवन धन्य बाबा बुड्ढा साहिब जी

धन्य गुरु अरजन देव सच्चे पातशाह जी को लेकर बाबा बुड्ढा साहिब जी अमृतसर की धरती पर आ गए। सरोवर की सेवा आरंभ हो गई। हरिमंदर का निर्माण होना है। इस वक्त के दौरान भाई लंगाह ने अपनी ज़मीन का एक टुकड़ा गुरु-घर को भेंट किया, जिसको हम आज बीड़ बाबा बुड्ढा साहिब कहते हैं। हजूर ने कहा बाबा जी को कि आप बीड़ साहिब में रहोगे। वहां बागबानी, वहां पशुओं की संभाल, वहां गुरु नानक के लंगर के लिए आप फ़सल तैयार करोगे। बाबा जी ने सति वचन कहा। बीड़ की धरती पर चले गए। बीड़ साहिब पहुंच गए।

SIKHBOOKCLUB.COM

इधर मेरे धन्य गुरु अरजन देव जी का लंगर आरंभ हो गया। जितनी भी सामग्री आती प्रिथिए अपने घर ले जानी और लंगर खाने के लिए संगत को धन्य गुरु अरजन देव जी के घर पहुंचा देना। अंत में ऐसा वक्त आ गया कि गुरु अरजन देव जी भोजन के बिना ही रात को सोते रहे। भाई गुरदास आए और लंगर के तंग हालात देखे और बाबा बुड्ढा जी के पास चले गए। बीड़ साहिब बैठा था यह गुरु का सिक्ख। जहां गुरुद्वारा पिपली साहिब है, वहां हाथ में लाठी पकड़कर बाबा बुड्ढा जी ने नाकाबंदी लगा दी और साथ कह दिया आने वाली संगत को कि विश्वास करो कि गुरु नानक साहिब जी के प्रकाश के मालिक धन्य गुरु अरजन देव हैं न कि प्रिथिया। आप गुरु अरजन देव जी के घर जाना। संगत को इतना विश्वास है कि जिसको बाबा बुड्ढा ने कह दिया वे ही वास्तव में गुरु हैं। बाबा बुड्ढा साहिब ने लंगर की मर्यादा फिर स्थापित की। फिर से सरोवर की ईंटों की सेवा में समय व्यतीत किया।

हरिमंदर का निर्माण होने लगा। इस वक्त के दौरान बाबा बुड्ढा साहिब जी फिर से बीड़ साहिब चले गए।

धन्य गुरु अरजन देव सच्चे पातशाह अमृतसर की धरती पर विराजमान हैं। आज सगे भाई के घर से आवाज़ सुनाई दी है, जब बीबी करमो, बाबा प्रिथिया की पत्नी ने कहा कि देखो आप तो कहते थे कि सब कुछ मेरा हो जाएगा, गुरुता-गद्दी मुझे मिलनी है और गद्दी छोटिओं को मिल गई। आपके पास क्या रहा? और करमो के शब्द सुनकर प्रिथिए ने कहा कि इनके घर कहां संतान होगी! जैसे आए वैसे चले जाएंगे। कल को मेरे पुत्र मेहरबान ने इस सिंहासन का वारिस बनना है। माता गंगा के कानों में जब यह खबर पड़ी तो उन्होंने गुरु अरजन देव जी को कहा, सच्चे पातशाह! अब तो लोग भी कहने लग पड़े कि कल को इस घर का कोई वारिस नहीं। मेरी गोदी को भाग्य लगे। इसमें कोई दो राय नहीं हैं। हजूर ने कहा, इंद्री-जीत सिक्ख है। बाबा बुड्ढा साहिब को इंद्री-जीत कहते थे, जिसने अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण पाया है। बीड़ साहिब जाओ, बाबा बुड्ढा साहिब को कहो कि गुरु नानक के प्यारे सिक्ख, तू अरदास कर। तेरी अरदास कभी व्यर्थ नहीं जाती।

SIKHBOOKCLUB.COM

माता गंगा जी और एक नौकरानी सेवादार साथ गई है। अपने हाथ से प्रसाद-पानी तैयार किया है। अपने हाथ से मिस्से प्रसादे, लस्सी लेकर माता जी जब पहुंचे तो उस वक्त आषाढ़ का माह था। धान के खेत लहलहा रहे थे। बाबा बुड्ढा जी अपने खेतों की मेढ़ पर बैठे थे। आज अंदर एक तड़प थी, जब सेवादार से पूछा कि सामने से कौन आ रहा है? सेवादार ने कहा, बाबा जी! माता गंगा जी आए हैं। माता गंगा जी पास आए, सिर पर देखा, मिट्टी का लस्सी वाला पात्र है, ऊपर भोजन रखा है और आचार, प्याज, मिस्सी रोटी लेकर आए।

बाबा बुड्ढा साहिब हाथ जोड़कर कहते हैं, माँ! पुत्र की भूख केवल माँ ही जानती है। दूसरों को क्या पता कि पुत्र के अंदर कितनी भूख है? कहते हैं, आज इतनी भूख लगी है कि अपने हाथों से तैयार किया हुआ भोजन खिलाओ। जब माता गंगा जी ने देखा कि गुरु नानक का आदि सिक्ख, सिक्खी का सितारा, मिट्टी भरे हाथों से और हाथ जोड़कर कहता है, मां! मेरे अंदर की भूख केवल तू जानती है और जब भोजन

खिलाया तो साथ कह दिया, बाबा जी अब कानों में आवाज़ पड़ रही है कि इनके घर का वारिस कोई नहीं होगा।

बाबा बुड्डा जी कहने लगे, कौन कहता है इस घर का वारिस नहीं आएगा? महाबली योद्धा आएगा, जो ज़ालिमों के सिर काट कर रख देगा। गुरु नानक साहिब के चरणों में अरदास की। आकाश में बिजली चमकी और विश्वास करो आज भी लोगों को उस बाबा के घर से दात मिलती है।

माता गंगा जी प्रसन्नता से घर आए। गुरु अरजन साहिब अमृतसर की धरती से वडाली चले गए, जिसको हम गुरु की वडाली कहते हैं। परमात्मा ने कृपा की, माता गंगा जी के उदर से धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब जी का जन्म हुआ। गुरु अरजन देव जी ने संदेश भेजा कि बाबा बुड्ढा साहिब जी को बीड़ साहिब से बुला कर लाओ। सिक्ख गए और कहा, बाबा जी! गुरु अरजन साहिब के घर परमात्मा ने पुत्र की दात दी है। आज बाबा बुड्ढा जी अपने गुरु के चरणों में झुकने के लिए बीड़ साहिब से आए हैं। जब भीतर प्रवेश किया और धन्य गुरु अरजन देव जी ने अपने पुत्र गुरु हरिगोबिंद साहिब को हाथों में लिया और बाबा बुड्ढा जी की झोली में डाल दिया। देखकर कह दिया बाबा जी अरदास भी आपकी थी और नाम भी आपने रखना है। शीश को देखकर, मस्तक को देखकर कहने लगे, यह मेरा हरिगोबिंद है। बाबा बुड्ढा साहिब फिर बीड़ साहिब चले गए।

समय ने करवट ली। गुरु हरिगोबिंद साहिब जी थोड़े बड़े हुए। इधर गुरु हरिगोबिंद साहिब जी बाल उम्र में बढ़ रहे हैं और बाबा महादेव जी और गुरु अरजन देव जी आज आकर इकट्ठे हुए। गुरु अरजन देव पूछते हैं, बाबा महादेव जी! बालक हरिगोबिंद की तालीम का क्या प्रबंध किया जाए? बाबा महादेव कहते हैं कि बाबा बुड्ढा से बड़ा कोई विद्वान नहीं। गुरु अरजन देव जी ने बाबा बुड्ढा जी को बुलाया। गुरु हरिगोबिंद साहिब के सामने खड़े करके कहने लगे, बाबा जी! मेरे पुत्र को आप विद्या पढ़ाओगे। बाबा जी ने हाथ जोड़ लिए। सच्चे पातशाह! खेती-बाड़ी करने वाला हूं। गाय-भैंसे चराता हूं, खेत में हल

चलाता हूं, फसल बोता हूं, मुझे खेती करनी आती है, किसी पढ़े-लिखे सज्जन के पास बिठाओ। मुझे अनपढ़ को क्या पता कि कैसी विद्या देनी है। गुरु अरजन देव जी ने कहा, मेरे पुत्र को वह पाठ पढ़ा दो जो पाठ आपसे सुनकर गुरु नानक देव जी ने आपको बच्चे से बाबा बुड्ढा बना दिया।

गुरु हरिगोबिंद साहिब को बाबा जी ने साथ लिया। पहला १ओअंकार बाबा बुड्ढा जी ने डाला था। १ओअंकार बाबा बुड्ढा जी ने कहा और गुरु हरिगोबिंद साहिब पीछे से तुतला कर बोले। बाबा बुड्ढा जी ने गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को 65 विद्याएं सिखाईं। इसमें ऐसी कोई विद्या नहीं थी जो बाबा बुड्ढा जी ने गुरु हरिगोबिंद साहिब को नहीं दी।

समय आ गया। धन्य गुरु अरजन देव जी गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ लिखाने लगे हैं। अब देखो, सिक्ख में गुरु कैसे प्रकट होता है? जिस हरिमंदर साहिब में बैठकर गुरु अरजन देव जी सिक्ख संगत को गुरमति का उपदेश दृढ़ कराते हैं, आज कहा, बाबा जी! आप बीड़ साहिब से हरिमंदर साहिब आ जाओ। हमने एक स्थान पर बाणी एकत्र करके ग्रंथ तैयार करना है। महाराज, मैं हरिमंदर में क्या करूंगा? कहने लगे, हमारे स्थान पर सिक्ख संगत को आत्मिक उपदेश आप देंगे। धन्य गुरु अरजन देव जी ने कहा, बाबा जी! आज आप संध्या काल में रामसर के किनारे आ जाना। बाबा जी आदेश मानकर रामसर के किनारे आ पहुंचे हैं। संध्या काल दीवान रामसर सुशोभित है और धन्य गुरु अरजन साहिब ने पास बुला कर पूछा, बाबा जी! गुरु ग्रंथ सहिब को कहां स्थापित करेंगे? बाबा बुड्ढा जी की ज़ुबान में वचन थे कि हे धन्य गुरु अरजन देव सच्चे पातशाह! गुरु ग्रंथ साहिब की स्थापना केवल दरबार साहिब में, हरिमंदर साहिब में ही हो सकती है, कोई और स्थान नहीं गुरु ग्रंथ साहिब जी की स्थापना के लिए।

शाम के दीवान की संपूर्णता हुई। प्रात:काल संगत ने हरिमंदर साहिब में गुरु ग्रंथ साहिब की स्थापना करनी है। वहां कवि संतोख सिंघ लिखते हैं कि सभी सिक्ख रात को ज़मीन पर लेट गए। केवल

SIKHBOOKCLUB.COM

गुरु ग्रंथ साहिब की बीड़ थी जो पलंघ पर थी। यहां तक कि गुरु अरजन देव जी भी स्वयं ज़मीन पर लेट गए। जब सभी सिक्ख विश्राम कर रहे थे तो कहते हैं, उनके सोने पर गुरु अरजन देव जी उठे। उठकर मन में एक ही ख्याल था कि गुरु साहिबान के प्रकाश ने बाणी उच्चारण की है। भक्तों की ज़ुबान पर धुर की बाणी का निवास हुआ है। भाई गुरदास ने लिखी और मेरे प्रभु! अगर गुरुकुल में से कोई ग्रंथी बने तो कल को यह मान कर न कहने लग जाना कि हमारे दादा की बाणी है। धन्य गुरु अरजन देव जी बाबा बुड्ढा जी के पास आए। बाबा बुड्ढा साहिब ज़मीन पर हैं। वहां चरणों में पास खड़े होकर कहा, हे मेरे बाबा नानका! तेरा आदि सिक्ख मिल गया है, तेरा धन्यवाद।

सुबह दिन चढ़ा। बाबा बुड्ढा साहिब जी ने स्नान किया। सिक्ख संगत ने भी स्नान किया। बाबा जी हमेशा जब बैठते थे, संगत में पीछे जाकर बैठ जाते थे। मैं कहता हूं, पीछे नहीं बैठते थे, वास्तव में गुरु नानक के घर के चौकीदार थे। इस घर में मेरे गुरु की मर्यादा को कोई चोट न पहुंचाए। आज स्नान करके जब वस्त्र पहन कर बाबा जी आए तो हजूर ने आवाज़ दी, बाबा जी! आज पीछे नहीं। सच्चे पातशाह! आपके पीछे चलने में आनंद है। कहने लगे, नहीं, आज आप आगे चलोगे और हम आपके पीछे चलेंगे। सच्चे पातशाह! मैं आगे नहीं। कहते हैं गुरु ग्रंथ साहिब का स्वरूप आपके शीश पर होगा, हम चवर करेंगे। बाबा बुड्ढा जी ने अपने शीश पर गुरु ग्रंथ साहिब रखा। धन्य गुरु अरजन साहिब चवर करते चले हैं। हरिमंदर साहिब आ गया है। बाबा बुड्ढा साहिब जी के मन में यह आया कि गुरु अरजन साहिब बैठेंगे। गुरु साहिब के स्वरूप को रखकर पीछे हुए। हजूर ने बाजू पकड़कर हाथ में चवर पकड़ाया और 98 वर्ष के बुज़ुर्ग बाबा को कहा :

बुड्ढा साहिब, खोलो ग्रंथ। लेहु आवाज, सुणे सभ पंथ।

कहने लगे :

अदब संग तब ग्रंथ सो खोला।

SIKHBOOKCLUB.COM

प्रात:काल था। सरोवर का पानी काफी भरा हुआ था। उसकी लहरों में से एक आवाज़ आई। वह आवाज़ ब्रह्मज्ञानी बाबा बुड्ढा की थी। बोलकर कहने लगा :

सूही महला ५ ।।
संता के कारजि आपि खलोइआ
हरि कंमु करावणि आइआ राम।।
धरति सुहावी तालु सुहावा
विचि अंम्रित जलु छाइआ राम।।

(अंग ७८३)

बाबा बुड्ढा साहिब ने हुक्मनामा लिया। धन्य गुरु अरजन साहिब ने कहा, आज अपनी ज़ुबान से जपु जी साहिब सुनाओ। आज उसी तरह सुना दो जैसे गुरु नानक से सुनते रहे हो। बाबा जी ने जपु सुनाया और बाबा जी की आवाज़ से ऐसे प्रतीत हुआ जैसे बाबा नहीं, इसका गुरु नानक बोल रहा है। हज़ूर ने संध्या काल की मर्यादा निभाने के लिए कहा और बाबा बुड्ढा साहिब ने पूछा, सच्चे पातशाह! इस ग्रंथ का विश्राम कहां करना है ? कहने लगे, आज के बाद कोठा साहिब में हमारा पलंघ नहीं लगेगा। इस पलंघ पर गुरु ग्रंथ साहिब विराजमान होंगे।

आज भी गुरु ग्रंथ साहिब जब कोठा साहिब जाते हैं तो गुरु अरजन देव जी के नाम की चादर बिछती है। समय निकलता गया, बाबा बुड्ढा जी सेवा करते गए। शहीदी के दिन आ गए हैं। गुरु अरजन साहिब जी अमृतसर की धरती से लाहौर रवाना हो गए। गुरु अरजन देव जी ने अपने पुत्र गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को गुरुता-गद्दी देते समय यह शब्द कहे थे—बेटा! इस बुज़ुर्ग बाबा का आदर करना। परंतु बाबा जी ने हाथ जोड़कर कहा, नहीं, परमात्मा मैं तेरे दर का दास हूं। गुरु अरजन साहिब लाहौर जाने से पहले हरिमंदर साहिब में आए हैं, प्रणाम किया और परिक्रमा करके स्वयं लाहौर को चले गए। गुरु हरिगोबिंद साहिब और बाबा बुड्ढा साहिब जी पीछे हैं। पांच सिक्ख कृपालु दाता जी के साथ गए।

गुरु अरजन देव पातशाह जी की शहीदी हो गई और इधर इस बाबा ने अपनी आंखों से गुरबाणी का युग देखा था। आज बाबा बुड्ढा की आंखों ने बलिदान का युग भी देखा है और कल को इस बाबा बुड्ढा के हाथों ने, बांहों ने तख़्त की ईंटें लगाकर गुरु को सिंहासन पर बिठाकर दो कृपाणें भी पहना देनी हैं।

बाबा बुड्ढा सिक्ख इतिहास की वह किताब है जो आज तक न कोई पढ़ सका है और न कोई लिख सका है। धन्य गुरु अरजन साहिब के बाद धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब के अत्यधिक समीप हैं बाबा बुड्ढा साहिब जी। आज अकाल तख़्त की प्रथम ईंट रखी जाएगी। गुरु के सिक्खो! कोई मज़दूर--कारीगर नहीं, केवल तीन हैं, क्योंकि जिन्होंने अकाल का जाप किया है, अकाल का सिमरन किया है, तन से ऊपर उठकर अकाल में अभेद हो गए हैं। उसके तख़्त को केवल वह ईंटें लगा सकता है जिसको अकाल का भय हो। बाबा बुड्ढा साहिब ने सतिगुरु को ईंट पकड़ाई। दूसरे साथ भाई गुरदास लगे, तीसरे गुरु हरिगोबिंद साहिब लगे। बाबा बुड्ढा जी ने तख़्त पर बिठाया है और आज बाबा बुड्ढा जी ने दो कृपाणें पहना दी हैं। मीरी और पीरी की दो कृपाणें पहना दी हैं और जब बाबा बुड्ढा जी कृपाणें पहना रहे थे तो सुरसिंघ गांव के ढाडी नत्था और अब्दुल्ला दोनों भाई सामने खड़े थे। उन्होंने साथ ही वार गा दी कि :

दो तलवारां बद्धीआं इक मीर दी इक पीर दी।
इक अज़मत दी इक राज दी इक राखी करे वज़ीर दी।
हिंमत बांह कोटगढ़ दरवाज़ा बलख़ बखीर दी।
नाल सिपाही नील नल मार दुशटां करे तगीर दी।

और यहां आकर पउड़ी लगाते हैं :

पग्ग तेरी, की जहांगीर दी?

बाबा बुड्ढा साहिब की आयु उस वक्त 100 वर्ष के ऊपर है। बाबा जी बीड़ साहिब चले गए हैं। धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब के दर्शन करने आते हैं। 100 वर्ष की आयु और हाथ में लाठी होना, सफेद वस्त्र,

सफेद दाढ़ी और साथ दो-तीन सेवादार और रास्ते में जिन्होंने देखना है कहते हैं अब अमृतसर की गलियों में से बाबा जी निकलते थे, लोग दुकानों पर खड़े होकर पैरों से जूते उतार कर माथा टेकते थे। आज वे बुजुर्ग बाबा हाथ में लाठी पकड़े आए।

धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब सिंहासन पर बैठे हैं। जब बाबा बुड्ढा साहिब आते थे तो गुरु जी सिंहासन से उठ खड़े हो जाते थे। हरिगोबिंद साहिब जी ने कहा, बाबा जी! हम आपसे एक विनती करते हैं, हमारी विनती नामंजूर मत करना। सच्चे पातशाह! आदेश करो, मैं आपका सेवादार हूं। हजूर कहने लगे, बाबा जी! एक दया करो, आप पैदल मत आया करो। बुजुर्ग शरीर है। सच्चे पातशाह! शक्ति तूने दी है। कहने लगे, हमारी पालकी ले जाओ। आज के बाद सिक्ख आपको पालकी में लाएंगे। हाथ जोड़ दिए, दाता! सिक्ख तेरे दर पर पैदल चल कर आता ही अच्छा लगता है। हजूर ने कहा, हमारी विनती स्वीकार नहीं करोगे? कहने लगे, जैसे आप कहते हो।

SIKHBOOKCLUB.COM

कुछ दिनों के बाद सिक्ख बाबा बुड्ढा साहिब को पालकी में बिठा कर बीड़ साहिब से हरिमंदर साहिब ला रहे हैं, परदे लगे हैं। गुरु हरिगोबिंद साहिब स्वयं हरिमंदर से चलकर रामसर के किनारे आ पहुंचे। बाबा बुड्ढा साहिब परदे में हैं। एक सज्जन को कहा, तू अपना कंधा पीछे कर ले, आज बाबा जी की पालकी को मुझे कंधा देने दे। धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने जब कंधा दिया तो भीतर से आवाज़ आई, पालकी रोक दो। पालकी नीचे रख दी। बाबा जी ने निकल कर चरण पकड़ लिए। चरण पकड़ कर कहा, सच्चे पातशाह! मैं तेरे दर पर पैदल आता हूं। मैंने पालकी में नहीं आना। हजूर ने अपनी बाहों में लेकर कहा, बाबा जी! आपको कैसे पता चल गया कि हमने आपकी पालकी को कंधा दिया है? हाथ जोड़कर कहा, सच्चे पातशाह! जिस दिन गुरु नानक ने एक बार सीने से लगाया था, करतारपुर कह कर गए थे **तेरे तों ओहले कदे ना होसां**, जब आप चले थे, मुझे तब ही पता चल गया था।

बाबा जी आते रहे और गुरु हरिगोबिंद साहिब अपने पास ऊंचे स्थान पर बिठाते रहे। गुरु हरिगोबिंद साहिब ग्वालियर के किले में चले गए। बाबा बुड्ढा साहिब बीड़ साहिब में हैं। जब पता चला कि गुरु हरिगोबिंद साहिब को कैद कर लिया गया है, तो फिर यह 109 वर्ष का बुज़ुर्ग बाबा उठा। आज संगत का समूह बीड़ साहिब पहुंचा। बाबा बुड्ढा साहिब ने रात को मशाल जलाई, उसका प्रकाश, हाथ में केसरी निशान, सभी सिक्खों को कहा मेरे साथ शब्द पढ़ो। स्वयं गुरु के पास जाएंगे। बाबा बुड्ढा ने किले के दरवाज़े को देखा है और अधिकारी से पूछा कि मेरी सच्ची सरकार इस दरवाज़े से भीतर गई है ? अधिकारी ने कहा, हां। तो बाबा जी ने उस वक्त अपने घुटने झुका दिए। कहा, जिस राह से तू मेरे मालिक गया है, तेरी राह पर मैं शीश झुकाता हूं। बाबा बुड्ढा साहिब जी किले की परिक्रमा कर रहे हैं।

गुरु हरिगोबिंद साहिब रिहा होकर आ गए हैं। अमृतसर की धरती पर जब बाबा बुड्ढा जी ने गुरु हरिगोबिंद साहिब का आना सुना तो उन्होंने घी के दीये जलाए। उस दिन दीपावली का दिन था और बाबा बुड्ढा जी ने उस दिन सिक्खों में दीये जलाने की मर्यादा कायम कर दी। गुरु हरिगोबिंद साहिब जी ने बाबा जी की हाज़री को देखकर कहा कि आपकी हाज़री युग–युग तक अटल रहेगी। भावना वाले जब हाज़री में आएंगे तब हमारे दर्शन करेंगे।

1631 का वक्त आ गया। बाबा बुड्ढा साहिब को इस संसार में आए 125 वर्ष के करीब हो चुके हैं। आज गुरु हरिगोबिंद साहिब के चरणों में हाथ जोड़कर कहा, सच्चे पातशाह ! मैं रमदास जा रहा हूं, एक दया करो कि जिस दिन इस तन का त्याग करना है, याद करूंगा तो आकर दर्शन देना।

आज रमदास से एक व्यापारी को धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब के चरणों में भेजा है कि जाकर कहो कि आपको बुड्ढा ने याद किया है, कृपा करके आकर दर्शन दो। गुरु हरिगोबिंद साहिब को भी पता है कि इस बाबा के तन को छोड़ने का वक्त आ चुका है। गुरु हरिगोबिंद साहिब, भाई जेठा, भाई गुरदास जी, भाई बिधी चंद जी गए। धन्य

गुरु हरिगोबिंद साहिब जी जब रमदास गए उस वक्त बाबा बुड्ढा साहिब आसन लगाकर बैठे थे और धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब ने जाकर चरण पकड़ लिए थे। बाबा बुड्ढा साहिब ने हाथ जोड़ लिए, हे सच्चे पातशाह! आप दया करो। धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब जी पास बैठ गए हैं। गुरु जी कहने लगे, कृपा करके बताओ कि सिक्खी कैसे प्राप्त की जाती है? बाबा जी ने हाथ जोड़ कर कहा, प्रभु जी! आप सूर्य हो। मैं आप में से निकली किरण हूं। मेरे पास कोई शक्ति नहीं। 125 वर्ष हो गए हैं, बस वही चरण जो कत्थूनंगल पकड़े थे आज वही चरण फिर मुझे मिले हैं। चरण पकड़ कर कहने लगे, एक बार कह दो, बुड्ढिआ तूझे बख्श दिया। गुरु जी कहने लगे, आपने गुरु नानक जी को केवल देखा या सुना नहीं, आपने उनके सीने से अपने सिर को लगाकर प्रेम भी लिया है।

गुरु जी शाम तक बाबा बुड्ढा जी के आसन के पास ही रहे। बाबा जी ने सभी को संबोधित करके शब्द कहे—साधना करो, जाप करो, सिमरन करो, उद्यम करो, सेवा करो, सब कुछ करके बाबा नानक की दया का सहारा लो। भेंट दया से मिलती है। धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब रात को पास रहे। बाबा बुड्ढा जी विश्राम के लिए पलंघ पर पड़े। यह भी पता है प्रात:काल तन को त्याग देना है। रात विश्राम से उठे। उठकर स्नान किया। स्नान करके बाबा जी ने वस्त्र पहने। धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब जी को कहा, सच्चे पातशाह! आज आप मेरे सामने बैठो, मैंने जी भर के आपके दर्शन करने हैं। जब दर्शन किए आज बाबा ने और जपु जी साहिब आरंभ किया। ग़ुरु हरिगोबिंद साहिब सुनते हैं। सच मानो, उन्होंने जुबान करके सीढ़ियां नहीं लांघीं, वे तो सुरति करके सचखंड के द्वार के सामने जा खड़े हुए हैं। सचखंड की पउड़ी पढ़ी, धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब को देखते हुए श्लोक पूरा किया, दोनों हाथ जोड़े, नेत्र बंद हैं। नेत्र केवल गुरु हरिगोबिंद साहिब के चरणों की तरफ थे। आवाज़ अंत में आई कि :

SIKHBOOKCLUB.COM

जिनी नामु धिआइआ गए मसकति घालि।।
नानक ते मुख उजले केती छुटी नालि।।

(जपु जी साहिब)

केवल शीश झुका। आज का झुका मस्तक फिर नहीं उठा। जब हरिगोबिंद साहिब ने देखा बाबा बुड्ढा साहिब गुरु में लीन हो चुके थे तो साहिब ने कहा, सिक्खो! मुबारक हो। पूछा, क्यों प्रभु? कहने लगे, आज कोई दुख नहीं, आज संसार में रहने वाला यह महापुरुष 125 वर्षों में से 113 वर्ष सिक्खी प्राप्त कर गया है। इसके दामन में कोई दाग़ नहीं। जो ज़िन्दगी का संग्राम विजय कर जाए उसको मुबारकबाद देते हैं। जीतने वाले को अफ़सोस नहीं करते। जब ले जाने से पहले स्नान कराया गया, उनमें धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब भी थे। स्नान कराते वक्त एक-एक तस्वीर नेत्रों के सामने आई। जब अर्थी तैयार की गई तो भाई भाना जी लगे, भाई गुरदास जी लगे, भाई जिता जी, गुरु हरिगोबिंद साहिब जी लगे। जब गुरु हरिगोबिंद साहिब सच्चे पातशाह कंधा देने लगे तो किसी ने कहा, सच्चे पातशाह! आप जी कंधा दोगे? कहने लगे, हां, कभी इस महापुरुष की पालकी को कंधा देना चाहता था, पालकी को कंधा नहीं दे सका। आज मुझे अर्थी को कंधा देने दो। धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब कंधा लगाकर बाबा बुड्ढा साहिब जी के तन को स्वयं उस स्थान पर ले गए जहां चिता चुनी गई। उस सच्ची सरकार के नेत्र छलक गए। चिता का लाम्बू उठाया। अग्नि की लपटों ने उस तन को संकोच लिया परंतु जहां उसके चरण पड़े उसकी तरंगों की अग्नि भी न लपेट सकी। धन्य गुरु हरिगोबिंद साहिब वापिस आए। भाई गुरदास जी ने बाबा बुड्ढा जी का उस वक्त पाठ किया। उतने दिन गुरु हरिगोबिंद साहिब रमदास रहे, जितने दिन बाबा बुड्ढा साहिब जी का दुशहरा न किया गया। सतिगुरु गुरु ग्रंथ साहिब दया करें, बाबा बुड्ढा साहिब हमें आशीष बख़्शें! धन्यवाद।

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

SIKHBOOKCLUB.COM

साका चमकौर साहिब

तुमरे गुण किआ कहा मेरे सतिगुरा
जब गुरु बोलह तब बिसमु होइ जाइ।।
हम जैसे अपराधी अवरु कोई राखै
जैसे हम सतिगुरि राखि लीए छडाइ।।
तूं गुरु पिता तूंहै गुरु माता
तूं गुरु बंधपु मेरा सखा सखाइ।। *(अंग १६७)*

वाहिगुरु जी का ख़ालसा।।
वाहिगुरु जी की फ़तह।।

परम सम्मानयोग्य चवर छत्र तख़्त के मालिक, युगो-युग अटल सतिगुरु श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी महाराज की पावन पवित्र हजूरी में शोभायमान सतसंगी-जनो! आज इस रात के विशेष दरबार में, हम अपने उन महापुरुषों को और धन्य गुरु कलगीधर सच्चे पातशाह के सामने तन के टुकड़े-टुकड़े कराने वाले दो गुरु के लाल बाबा अजीत सिंघ जी और बाबा जुझार सिंघ जी, पांच प्यारों में से गुरु के तीन प्यारे और इसके अलावा 35 के लगभग और कुछ सिक्ख जिन्होंने चमकौर की गढ़ी में गुरु कलगीधर सच्चे पातशाह के सामने शहीदी का जाम पिया है, उनको याद करना है।

इतनी बड़ी शहीदी हो गई है, आखिर इसका क्या कारण था? धन्य गुरु नानक साहिब कृपालु जी से लेकर हमने आज चमकौर गढ़ी के साके तक आना है। धन्य गुरु कलगीधर के चरणों का आज सहारा लो। उन्होंने तो अपने पुत्रों का खून इस कौम की जड़ों में डाला है। केवल उनके पुत्रों की शहीदी को हम कभी प्रेम-भावना से कह सकें और सुन सकें।

1469 को राय भोय की तलवंडी में धन्य गुरु नानक साहिब कृपालु जी का आगमन हुआ है। उस वक्त की घटना को भाई साहिब भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में बहुत अद्भुत ढंग से वर्णन किया है। उन्होंने इसमें तीन शब्दों का प्रयोग किया है, सतिगुरु नानक मौजूद है और दूसरा शब्द, एक ज्ञान का सूर्य निकला है और तीसरा शब्द उन्होंने यह प्रयोग किया है कि एक सिंघ-गर्जना पैदा हुई है। जब हम भाई गुरदास जी की तीन पंक्तियां पढ़ते हैं तो मेरा विचार है, इन पंक्तियों में वे पूरी बात कह गए हैं। गुरु नानक साहिब इस संसार पर क्यों आए हैं? हमने उनकी वारों की तीन पंक्तियों से आरंभता करनी है। उन्होंने प्रथम पंक्ति कही है कि :

सतिगुरु नानकु प्रगटिआ मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।

उनकी दूसरी पंक्ति है :

जिउ करि सूरजु निकलिआ तारे छपि अंधेरु पलोआ।

तीसरी पंक्ति है :

SIKHBOOKCLUB.COM

सिंघु बुके मिरगावली भंनी जाइ न धीरि धरोआ।

(भाई गुरदास जी, वार १ : २७)

जब हम भाई गुरदास जी की वार की तीन पंक्तियां पढ़ते हैं तो हमें उन तीनों पंक्तियों का संक्षेप में वर्णन करना अत्यंत ज़रूरी हो जाता है। हमने आना साके पर है। जब गुरु नानक साहिब प्रकट हुए हैं उनकी तुलना धुंध से की है कि सतिगुरु नानक देव जी के प्रकट होने से धुंध के मिटने का क्या मतलब है? हम कहेंगे कि धुंध को मिटाने के लिए तो बाहर से प्रकाश चाहिए। अंधेरा दो तरह का होता है। एक है काली रात का अंधेरा, एक है सफेद अंधेरा। काला अंधेरा होगा तो दीये जलाएंगे, बत्तियां जलाएंगे। रात के अंधेरे को दीये का प्रकाश, सूर्य की किरणें दूर कर देंगी परंतु याद रखो जब धुंध आ जाए, धुंध पड़ने लग जाए, तब सूर्य की किरणों का प्रभाव नहीं होता। यह सच्चाई है कि काले अंधेरे से कई गुणा भयानक सफेद अंधेरा धुंध का होता है। गुरु

नानक साहिब जी के प्रकट होने की देर थी कि जो धुंध थी वह मिट गई। वह सफेद अंधेरा क्या था ? और दूसरी तरफ अगली पंक्ति उन्होंने काले अंधेरे की तारों की दी :

जिउ करि सूरजु निकलिआ तारे छपि अंधेरु पलोआ।

जैसे सूर्य निकलता है तो सारे तारे आलोप हो जाते हैं। सूर्य निकलता है तो अंधकार चला जाता है। गुरु के सिक्खो! सफेद अंधेरा धुंध का था, वे लोग जो धर्म का भ्रम डालते थे, परंतु भीतर से अंधे थे। मेरे गुरु ने कहा, सच मानो, ये धर्मियों और कुकर्मियों से ज्यादा ख़तरनाक हैं। जो धर्म के बारे में जानकर भी धर्म की प्राप्ति नहीं करते वे धुंध के समान हैं और यह सच्चाई है कि जिनको कोई समझ नहीं वे काले अंधेरे की तरह हैं।

बाबा नानक को दो प्रकार का अंधकार मिला। जिस दिन विद्वान पंडित मिले, जिस दिन मौलवी मिले, जिस दिन मुतस्सबी लोग मिले, धर्म की विचार करते थे, परंतु सच्चाई यह है कि उनके भीतर धर्म नहीं था, सफेदपन का भ्रम डाला हुआ था, धुंध का भ्रल डाला था, परंतु उनके भीतर अंधकार था, तभी गुरु साहिब को यह कहना पड़ा :

SIKHBOOKCLUB.COM

सुणि वेखहु लोका एहु विडाणु।।

दुनिया के लोगो! देखो आकर। कैसा आश्चर्य का खेल है।

मनि अंधा नाउ सुजाणु।। *(अंग ४७१)*

मन में अंधकार है और बाहर से समझदार बना हुआ है। धुंध बाहर से देखने में सफेद लगती है, परंतु जब कोई धुंध में चलने का प्रयास करे तो धुंध इंसान को मृत्यु की झोली में डाल देती है। मैं अर्ज़ करूं, यहां भाई गुरदास जी ने सिंघ शब्द प्रयोग किया है, शेर प्रयोग किया है। परंतु मैं सोचता हूं कि बाबा जो गर्ज तूने, जो तूने गर्जना शेर के रूप में दी थी, तेरी इस गर्जना को खत्म करने के लिए कभी लाहौर की तवी आई, कभी चांदनी चौक आया, कभी सरसा के किनारे

परिवार–विछोड़े आए और आज कभी चमकौर की गढ़ी आई। सच्चाई यह है कि तेरी सिंघ की गर्ज को खत्म करने के लिए सभी उपाय किए गए। भाई साहिब ने वहां शब्द प्रयोग किया कि :

सिंघु बुके मिरगावली भंनी जाइ न धीरि धरोआ।

और जब गुरु नानक साहिब सिंघ की तरह गरजे और उनके सामने जैसे शेर की गर्ज से मृग दौड़ते हैं। बाबा नानक के सामने, उनकी गर्जना के सामने कोई भी कपटी मृग की तरह खड़ा नहीं हो सका। यहां गुरु नानक साहिब की एक गर्ज थी। अब उस गर्ज की आवाज़ कभी बाणी में सुनें। वह कौन–सी गर्ज थी, कैसी आवाज़ थी, जिसके सामने कोई कपटी न टिक सके।

सबसे पहले बाबा ने यहां के समाज की दुर्दशा को देखा, यहां के राज–प्रबंध को देखा, यहां के लोगों की भूमिका को देखा और उसकी आवाज़, उसकी गर्ज से रुक न सकी। उस सिंघ–गर्ज ने पहली आवाज़ में कहा :

SIKHBOOKCLUB.COM

राजे सीह मुकदम कुते।। जाइ जगाइन्हि बैठे सुते।।
चाकर नहदा पाइन्हि घाउ।। रतु पितु कुतिहो चटि जाहु।।

(अंग १२८८)

उस सिंघ–गर्ज ने यह अमृत शब्द प्रयोग किए। जब हम बाणी पढ़ते हैं :

कलि काती राजे कासाई

सच यह है कि बाबा नानक की इस सच की गर्ज को खत्म करने के लिए सारे साके घटित हुए और हर तरह का अत्याचार किया। साहिब की आवाज़ थी कि :

कलि काती राजे कासाई धरमु पंख करि उडरिआ।।
कूड़ु अमावस सचु चंद्रमा दीसै नाही कह चड़िआ।।

(अंग १४५)

राय भोय की तलवंडी के बाद ऐमनाबाद की धरती आती है। क्या देखते हैं कि प्रभम मुठभेड़ ऐमनाबाद की धरती पर बाबा और बाबर की हुई है और जो शब्द बाबा की सिंघ–गर्ज से निकले, उसको सतिगुरु ने अमृत बाणी में दर्ज कर दिया। देखो बाबा और बाबर की मुठभेड़ है। यह चमकौर की गढ़ी तक आनी है। साहिब कृपालु की वहां एक सिंघ–गर्ज थी। वह ऐमनाबाद को बर्बाद कर रहा था और गुरु नानक ईमान दृढ़ करा रहे थे। ऐमनाबाद गए और वहां भाई लालो के घर रहे। घटना से पहले हजूर ने यह शब्द कह दिए :

जैसी मै आवै खसम की बाणी
तैसड़ा करी गिआनु वे लालो।।

एक सिंघ–गर्ज थी :

जैसी मै आवै खसम की बाणी
तैसड़ा करी गिआनु वे लालो।।
पाप की जंञ लै काबलहु धाइआ
जोरी मंगै दानु वे लालो।।
सरमु धरमु दुइ छपि खलोए
कूड़ु फिरै परधानु वे लालो।।

बाबा जी ने इसमें एक वचन कहा था कि :

खून के सोहिले गावीअहि नानक
रतु का कुंगू पाइ वे लालो।।

और उस दिन वचन कहा था कि :

आवनि अठतरै जानि सतानवै
होरु भी उठसी मरद का चेला।।
सच की बाणी नानकु आखै
सचु सुणाइसी सच की बेला।। *(अंग ७२२)*

सच की बाणी तो शेर–गर्ज थी और आज साका ऐमनाबाद का घटित हो गया। भाणे घटित हो गए। आज फिर रबाब गूंजी, मर्दानिआ!

SIKHBOOKCLUB.COM

रबाब छेड़, आज यह यमदूत बन कर आया है। मर्दानिआ! रबाब छेड़, इसके सिपाही कुत्ते बन कर आए हैं। अगर समय के साथ हमने सच न बताया तो फिर सच सदा आलोप हो जाएगा। बाबे ने फ़रमाया :

खुरासान खसमाना कीआ हिंदुसतानु डराइआ।।
आपै दोसु न देई करता जमु करि मुगलु चड़ाइआ।।

वहां शब्द थे बाबा के हृदय की वेदना कि :

एती मार पई करलाणे तैं की दरदु न आइआ।।

(अंग ३६०)

गुरमुखो! एक शब्द था :

जमु करि मुगलु चड़ाइआ।।

और दूसरा शब्द था :

रतन विगाड़ि विगोए कुतीं मुइआ सार न काई।।

SIKHBOOKCLUB.COM

गुरु नानक साहिब कहते हैं कि बाबर यमदूत बन कर आया और दूसरी तरफ इसके सिपाही पाग़ल कुत्ते बन कर आए हैं। ओए हिंदुस्तान के लोगो! जब यहां की बहू-बेटियों की बेइज्जती हुई, जब यहां के नौजवानों के मास के चीथड़े उड़ाए तो बाबे ने कहा, सब्र कर बाबर, तूने रत्नों जैसे शरीरों को तोड़ कर रख दिया है। यह सिंघ-गर्ज थी। यह बाबे और बाबर की पहली टक्कर हुई थी। फिर यह टक्कर वक्ती नहीं थी। यह टक्कर पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली। बाबे के साथ बाबर भिड़ा और बाबे के पुत्रों के साथ भी टक्कर हुई।

दूसरे पातशाह गुरु अंगद देव जी आज खडूर साहिब की धरती पर विराजमान हैं। हुमायूं कन्नौज के मैदान में से हार कर आया है और गुरु नानक साहिब जी की ज्योति ने कोई परवाह नहीं की बाबर-किआं दी। अब यहां बाबर और बाबे-किआं की टक्कर है। हुमायूं ने अपनी तलवार के मुट्ठे पर हाथ रखा है और जिस बाबे ने बोल कर कहा था कि :

जमु करि मुगलु चड़ाइआ।।

उस बाबे का गद्दी-नशीन बोल कर कहता है, हुमायूं! जो तलवार आज फकीर पर उठाने लगा है, यह तलवार शेरशाह सूरी के सामने खुंडी क्यों हो गई थी? मेरे धन्य गुरु अरजन देव कृपालु जी आ गए हैं। गुरमुखो! जिस खून का, जिस परिवार का, जिस खानदान का, आज हम शहीदों का वर्णन करते हैं उसकी गुरु अरजन देव जी से शुरूआत होती है। इसके बाबे-किआं में से गुरु अरजन देव जी तख़्त पर बैठे हैं और दूसरी ओर बाबर-किआं में से जहांगीर दिल्ली के तख़्त पर बैठा है। दूसरी टक्कर खडूर साहिब की धरती पर हुई। आज तीसरी टक्कर बाबे-किआं और बाबर-किआं की लाहौर की धरती पर होने लगी है। धन्य गुरु अरजन देव कृपालु जी को शहीद करने का आदेश दे दिया गया और आपको पता है कि उनको शहीद करने का आदेश जो दिया गया था उसके अनुसार उनको इस ढंग से यातनाएं देकर शहीद किया जाए कि इनके रक्त की एक भी बूंद धरती पर गिरे न। और धन्य गुरु अरजन देव जी लाहौर गए हैं। तीन तरीकों से शहीद किया गया है। पहले इन्होंने गर्म तवी की, दूसरा, इन्होंने देग पानी की भर कर उबाली और तीसरा, मेरे गुरु अरजन देव की के शीश में गर्म रेता डाला गया। तपती तवी है, तपती देग है और शीश में गर्म रेता है। और यहां एक बात कभी न भूलना, गर्म तवी पर बैठने वाला गुरु शीश पर रेता डलवा कर आज शब्द प्रयोग कर रहा है कि:

तेरा कीआ मीठा लागै।। हरि नामु पदारथु नानकु मांगै।।

(अंग ३९४)

लोग तो जहांगीर ने पता नहीं कितने ख़त्म किए होंगे, परंतु सुरति और शब्द का अभ्यासी गुरु अरजन देव जी जैसा कोई नहीं, जो गर्म तवी पर बैठ कर भी अपने अंदर को डगमगाने नहीं देता। यही ज्योति है जो रेत पड़ती सिर में:

तेरा कीआ मीठा लागै।।

कह गई और यही ज्योति है जो पुत्रों के शहीद होते हुए भी प्रभु का धन्यवाद करे।

हज़ूर गर्म तवी पर बैठे हैं। यहां एक विद्वान ने बहुत सुंदर शब्द कहे हैं जो आज के साकों से मेल खाएंगे। कहते हैं साईं मियां मीर जी आए हैं। कृपालु दाता जी के तन पर रेत की बौछार पड़ रही होती है। सारा तन छाले-छाले हुआ पड़ा है और उस वक्त साईं मियां मीर के शब्द थे, दाता जी! यह क्या खेल बरताने लगे हो? कहने लगे, साईं जी! जितना बीज स्वस्थ डालेंगे उतनी फसल अच्छी पैदा होगी। यह सच्ची सरकार मैं समझा नहीं कि बीज स्वस्थ डालने का मतलब क्या है? क्या भाव है? आप कौन-सा बीज डालने लगे हो? कहने लगे, एक तरफ मैं संसार को गुरबाणी की ज्योति गुरु ग्रंथ साहिब देकर चला हूं और दूसरी ओर इस संसार को कुर्बानी की जाच सिखा चला हूं। और वहां वचन कहे कि जितना बीज स्वस्थ हो उतनी फसल अच्छी निकलती है। आज पांचवें जामे में मैं कुर्बानी का, शहादत का बीज डालने लगा हूं। आप देखना, इस बीज ने पेड़ बनना है। इसके एक फल ने चांदनी चौक जाकर कुर्बानी देनी है। इसके दो फूलों ने चमकौर की जूहों में अपने तन कटा कर शहीद होना है। दो अधखिले फूल मेरे पेड़ को लगेंगे जिनको वक्त की हकूमत तोड़ कर बुनियादों में चिन देगी। याद रखना, मैं अपने घर के, खुद के बिना पांच सदस्यों का खून देकर इस पेड़ को इतना प्रफुल्लित कर दूंगा कि रहती दुनिया तक यह शहीदों का ख़ून खत्म नहीं होना। मेरे बलिदान के पेड़ ने कभी नहीं सूखना। वहां जो शब्द हज़ूर कृपालु जी ने इस्तेमाल किए हैं, यूं ही नहीं पुत्र सामने टुकड़े-टुकड़े करवा दिए, उनकी रगों में गर्म तवी पर बैठने वाले का ख़ून था। यूं ही नहीं बुनियादों में ललकारे मारते, फतह गजाते शहीद हो गए। कहने लगे, थोड़े ही दिनों में फूल इसके बिखर जाएंगे।

इउं संसार अंदर कोई चांदनी चौक नूं भाग लासी,
चढ़ के देश दे दरद पिआर अंदर।
महिक उठू चमकौर की जूह सारी,
खिड़े फुल्ल रुत्त बहार अंदर।

अधखिड़े ही तोड़ के टाहणीआं 'तों,
चिण देएगा कोई दीवार अंदर।
बणी रहेगी सदा बहार इस उत्ते,
लागे ख़िज़ां वी इस दे ढुक्कणा नहीं।
लग्गी औड़ 'ते इहनां ने सुक्कणा नहीं,
किउंकि ख़ून शहीदां दा मुक्कणा नहीं।

यह आरंभता मेरे कृपालु सतिगुरु धन्य गुरु अरजन देव जी ने की। गुरु अरजन देव जी शहीद हो गए हैं। जहांगीर उस वक्त तख़्त पर है। गुरु अरजन देव जी की शहादत के बाद अब बाबे-किआं के घर में हरिगोबिंद साहिब आए हैं और उधर जहांगीर का पुत्र शाहजहां आ गया। अकेली गर्म तवी पर बात न खत्म हुई। आज मेरे धन्य गुरु अरजन देव जी के पुत्र ने चार युद्ध लड़े और गुरु अरजन देव जी के शब्द उन्होंने सत्य कर दिखाए। यह शब्द संबोधित करके कहे थे जहांगीर को। बाबे-किआं के शब्द विद्वानों ने भी अपनी कलम से लिखे हैं। शब्द कहे थे—ऐ बाबर के पोते! मेरी आवाज़ रोक सकता है तू कुछ वक्त के लिए, परंतु यह तेरा भ्रम है। आज बाबे-किआं ने तलवार पकड़ी है और चार युद्ध उन्होंने लड़े और चारों युद्ध बाबर-किआं हारे। बाबे-किआं की विजय हुई। वक्त निकलता गया। इधर बाबर में से जहांगीर का पोता औरंगज़ेब दिल्ली के तख़्त पर बैठ गया और इधर बाबे-किआं में से गुरु अरजन देव का पोता गुरु तेग बहादर आ गया। कभी देखो दादा के साथ दादे की टक्कर, पोते के साथ पोते की टक्कर, पड़पोते की पड़पोते के साथ टक्कर। उधर जहांगीर का पोता औरंगज़ेब आ गया और इधर गुरु अरजन देव जी के पोते धन्य गुरु तेग बहादर जी आ गए।

आप सब को पता है कि गुरु तेग बहादर साहिब कृपालु अनंदपुर साहिब की धरती से चले हैं। लाला दौलतराय के शब्द कानों में गूंजते हैं। उन्होंने यह शब्द कहे थे कि आज तक ये तो सुना है कि कातिल मकतूल के पास जाए, यह नहीं सुना कि मकतूल कातिल के पास जाए।

SIKHBOOKCLUB.COM

ऐसा करके गुरु तेग बहादर जी ने उलटी गंगा बहा दी। मैं कई दफ़ा विनती करता हूं कि हे सिक्ख जगत! तुझे बाबे ने कोई बात कहने से पहले अपने तन पर सह कर बताई है। अगर तुम्हें शब्द कहे थे कि :

तनु मनु काटि काटि सभु अरपी
विचि अगनी आपु जलाई ।। (अंग ७५७)

और सच जानो, पहले आग पर बैठ कर तुझे दिखाया। गुरु तेग बहादर जी के सामने तलवार आई। हे मेरे गुरु रामदास सच्चे पातशाह! तेरे परिवार का कर्ज़ा सिक्ख कभी नहीं उतार सकेंगे। तेरे पुत्र गुरु अरजन देव जी शहीद हैं, पुत्र के पोते गुरु तेग बहादर जी शहीद हैं और तेग़ बहादर जी के पुत्र गुरु गोबिंद सिंघ जी शहीद हैं तथा इनके चारों पुत्र शहीद हैं। गुरु रामदास! तेरा कर्ज़ तो हम कभी उतार नहीं सकेंगे। उधर औरंगज़ेब है, इधर गुरु तेग बहादर सच्चे पातशाह हैं। कृपालु दाता जी ने औरंगज़ेब को संबोधित करके यह शब्द कहे हैं। गुरु तेग बहादर के सामने तलवार तेज़ की। आज बाबा जी पिंजरे में से निकले हैं। उन्होंने कुएं पर स्नान किया और जब तलवार तेज करते हैं तो उन्होंने कहा, सज्जना! मुझे तलवार तेज़ करके डरा न, मेरा नाम तेग बहादर है। शब्द क्या थे—करतारपुर की धरती पर जब चौथा युद्ध हुआ था तो मैंने अपने हाथ में तेग़ पकड़ कर शत्रुओं का सामना किया था। मैं तेग़ चलाने में भी बहादुर हूं और घबराना न, मायूस न होना कि मैं कहीं डगमगा न जाऊं। सच जानो, मैं तेग़ चलाने में भी बहादुर हूं। केवल मैं तेग़ चलाता नहीं, मैं तेग़ खानी भी जानता हूं। परंतु तू एक बात याद रखना, इस तलवार से मैं डरने वाला नहीं। गुरु तेग बहादर जी के वचन हैं :

मैं हां तेग़ ते कढ लै तेग़ तूं वी,
इक दो नहीं परख लै सौ तेग़ां।
मैनूं लकब है तेग़ बहादरी दा,
मेरे साहवें नहीं सकदीआं हो तेग़ां।
मैं तां जंमदिआं तेगां दी छां माणी,
वेख बापू दीआं पहिनीआं दो तेगां।

मेरे पिता दी अणख बहादरी 'ते,
रिहा परखदा तेरा पिउ तेगां।
हुण वी वेखीं आउंदे भविक्ख दे अंदर,
मेरे पुत्तर ने वहाउणीआं उह तेगां।
उहदी टेक विचों जिहड़ी तेग़ निकलू,
लक्खां लैणगीआं तेरीआं खोह तेग़ां।

आज लाखों तेग़ें चमकौर की गढ़ी के नज़दीक आनी हैं, लाखों तेग़ों का मुकाबला तेग बहादर के पुत्र गुरु गोबिंद सिंघ जी ने करना है। गुरु तेग बहादर जी शहीद हो गए। गुरु गोबिंद राय जी गद्दी के वारिस बने और वहां मेरे बाबा जी ने बाबर के सिर पिर ठीकरा फोड़ते हुए शब्द कहे :

ठीकरि फोरि दिलीसि सिरि प्रभ पुर कीया पयान।।
तेग बहादर सी क्रिआ करी न किनहूं आन।।
तेग बहादर के चलत भयो जगत को सोक।।
है है है सभ जग भयो जै जै जै सुर लोक।।

SIKHBOOKCLUB.COM

(बचित्र नाटक)

बाबर की जै-जैकार नहीं, यहां याद रखना, बाबिआं की संगत की जै-जैकार है।

गुरु गोबिंद राय जी अनंदपुर की धरती पर विराजमान हैं। कृपालु दाता जी ने पिता की नगरी अनंदपुर साहिब में रणजीत नगाड़े बजाए हैं। यहां प्रसादी हाथी आए हैं। यहां होले और महल्ले निकाले गये हैं। मेरे कृपालु दाता पाउंटा साहिब की धरती पर गए हैं। पहली जंग भंगाणी की लड़ी है और जिस दिन गुरु कलगी वाले आज युद्ध जीत कर आए हैं तो उन्होंने अपनी रचना में वचन कहे हैं, क्योंकि हमने लालों की शहादत का ज़िक्र करना है। माता सुंदरी जी पाउंटा साहिब हैं। कलगीधर जीत रहे हैं और जब जीत कर आए तो उनकी ज़ुबान से शब्द थे :

भई जीत मेरी।। क्रिपा काल तेरी।।

जब जीत कर घर आए हैं तो आते ही समाचार मिला है कि हे कृपालु दाता जी! उस अकाल पुरख की कृपा का सदका आज आपके घर के मालिक ने एक पुत्र की दात दी है जिन्होंने चमकौर की गढ़ी में शहीद होना है। साहिब कृपालु जी को समाचार मिला कि मालिक ने पुत्र की दात दी है तो हंस कर कहने लगे, मेरे इस लाल का नाम अजीत रखना। आज मैं युद्ध जीत कर आया हूं। याद रखना मेरे लाल को कभी मृत्यु भी जीत नहीं सकेगी। मृत्यु को भी सहर्ष कल को स्वीकार करेगा। साहिब कृपालु जी ने अपने पुत्र का नाम अजीत सिंघ रखा।

समय ने करवट ली और दाता जी के घर 1686 को बाबा अजीत सिंघ जी आए हैं। 1690 को बाबा जुझार सिंघ जी का जन्म हुआ। अनंदपुर साहिब जी की धरती पर रौनकें लगी हैं परंतु दुर्भाग्य, जिस तिलक की खातिर, जिस जनेऊ की खातिर इतनी बड़ी कुर्बानी की, आज वही पहाड़ी राजे अनंदपुर को घेरा डाले बैठे हैं। उनको नहीं भाती सत्य की आवाज़, उनको नहीं भाती गुरु गोबिंद सिंघ के नगाड़े की आवाज़, गुरु ग्रंथ साहिब में से निकला हुआ सत्य का बोल। उन्होंने अनंदपुर साहिब जी की धरती को घेरा डाल लिया है। इधर औरंगज़ेब को कह दिया है किसी दिन तेरे राज-भाग को खत्म कर देंगे। बाईस धार के पहाड़ी राजे, सूबा लाहौर, सूबा सरहिंद, दिल्ली से आई हुई शाही सेना ने अनंदपुर साहिब की धरती को घेरा डाल लिया। गुरु के सिक्खो! कभी उस वक्त को देखो, न कोई बाहर से अन्न आ सकता है, न कोई पानी का प्रबंध है। समय निकला परंतु मेरे कलगियों वाले सच्चे पातशाह अकाल का धन्यवाद करते हुए, परमात्मा के हुक्म को सहर्ष स्वीकार करते हुए मालिक की रज़ा में टिके रहे हैं। इतनी भूख आ पड़ी कि जो प्रसादी हाथी कलगीधर के शीश पर चवर करता था, जो हाथी मेरे कलगी वाले के तीर उठा कर लाता था, जो हाथी मेरे कलगी वाले के चरणों को अपनी सूंड में निर्मल जल डाल कर धोता था, भूख के मारे आज वह प्रसादी हाथी कलगियों वाले के नेत्रों के सामने तड़प-तड़प कर मर गया। इधर शाही सेना, पहाड़ी राजे, जितने

भी, यह लाहौर का सूबा, सरहिंद का सूबा, इनके मन में था कि थोड़े दिनों को इन्होंने अनंदपुर छोड़ देना है भूख के दुख से, परंतु इनको पता नहीं था कि भूख के दुख से नहीं जो रोज अमृत वेले यह बाणी पढ़ते हैं :

केतिआ दूख भूख सद मार।।
एहि भि दाति तेरी दातार।। *(जपु जी साहिब)*

वे भूख के दुख से कभी किला छोड़ेंगे नहीं। जो यह पढ़ते हैं कि :

जे सुखु देहि न तुझहि अराधी दुखि भी तुझै धिआई।।
जे भुख देहि त इत ही राजा दुख विचि सूख मनाई।।

(अंग ७५७)

क्या उस कलगी वाले ने भूख के दुख से अनंदपुर छोड़ना था? कहते हैं फिर उन्होंने उपाय सोचा कि गुरु गोबिंद सिंघ के पास जाएं और उनके पास कसम खाकर कहते हैं कि आप अनंदपुर साहिब की धरती को छोड़ दो। जहां मर्ज़ी चले जाओ। हमारी भी रह जाएगी, हम आपको कुछ नहीं कहेंगे। कई सिक्ख वहां उत्सुक हैं। मेरे कलगी वाले ने सिक्खों को टिकने के लिए कहा। सिक्ख कहने लगे, महाराज! उनकी बात पर भरोसा तो करो, वे विश्वास दिला रहे हैं और हम उनकी बात पर विश्वास करके अनंदपुर छोड़ दें। साहिब कहते हैं कि सच जानना, मुझे उनकी बात पर कोई विश्वास नहीं। साहिब सच्ची सरकार गुरु कलगीधर जी के सामने कसमें खाईं। साहिब ने कहा, विश्वास नहीं, परंतु यदि आप प्रभु पर विश्वास करके कुरान की कसम खाते हो तो सिक्ख किला छोड़ देंगे।

आज गुरु के सिक्खो! पौष की सर्द रात है, सन 1704 है। आज बापू ने जो नगरी बसाई थी, माखोवाल की धरती थी, पहला नाम रखा था चक्क नानकी। फिर नाम रखा था अनंदपुरी। आज कृपालु दाते ने संध्या काल में अनंदपुर में से निकलना था। शाम का समय है। हज़ूर ने व्यवस्था क्या बनाई है? आवाज़ दी, भाई

SIKHBOOKCLUB.COM

दया सिंघ, प्यारे भाई धर्म सिंघ जी, आप काफिले के आगे चलोगे। सैंकड़ों की तादाद में सिक्ख अनंदपुर से निकले हैं। आपकी अगुवाई में कुछ सिंघ होंगे। बीच में माता गुजरी होंगी। अपने सीने से ज़ोरावर सिंघ और फतह सिंघ को अपने घोड़े के आगे बिठा कर चलेगी। बीच में गुरु के महल माता सुंदरी जी होंगे, माता साहिब कौर जी होंगे। इन डोलों के साथ, गुरु की सुपत्नियों के साथ भाई मनी सिंघ जी होंगे और पीछे गुरु कलगी वाले होंगे। सबके पीछे चलेंगे भाई उदय सिंघ और भाई मनी सिंघ के पुत्र तथा उनके साथ चलेंगे हमारे बड़े पुत्र बाबा अजीत सिंघ जी।

मैं कहता हूं कि अनंदपुर से चलते हुए मेरे गुरु ने पुत्र पीछे क्यों रखा है। अनंदपुर छोड़ते समय हमला आगे से नहीं होना, हमला पीछे से होना था और कलगी वाले की इच्छा यह है कि अगर पीछे से हमला हो तो यह लोग न कहें कि अपना पुत्र बचा कर ले गया। कहने लगे, बेटा अजीत सिंघ, अगर पीछे से हमला हो तो पुर्ज़ा-पुर्ज़ा कर मरना, पीछे से रक्षा करना तुम्हारा फर्ज़ है। पीछे बाबा अजीत सिंघ और भाई उदय सिंघ लगाए हैं। अनंदपुर से चलने से पहले गुरबख्श उदासी को कृपालु दाता जी ने पास बुलाया और अनदंपुर से निकलने से पहले गुरबख्श उदासी को कहा था कि अपने केशों में से नज़र मारना और सच जानना, तुझे गुरु का रूप याद आएगा। गुरु ने हिदायत करके गुरबख्श उदासी को वहां छोड़ा। आप अनंदपुर से निकले हैं।

चोजी प्रीतम आज चार पुत्रों को लेकर चला। दो महल उसके साथ हैं। बूढ़ी माता गुजरी साथ है। पांच प्यारे साथ हैं। मरजीवड़े सिक्ख साथ हैं और ऐसे नज़र आता है कि जो काफ़िला आज अनंदपुर साहिब से निकला है धीरे-धीरे इसने बिखर जाना है। जहां-जहां समय आना है, वहां-वहां शहादतों का जाम पीना है। अनंदपुर साहिब से रात को निकले हैं। हज़ूर कृपालु साहिब जी अनंदपुर की धरती से कीरतपुर आए हैं। बाबा सूरज मल की संतान मे से उनके पोते मिले हैं। अपनी तरफ से उनको आशीषें दी हैं और कृपालु दाता

SIKHBOOKCLUB.COM

जी अपने बुजुर्गों की धरती कीरतपुर साहिब को माथा टेक कर आगे चल पड़े हैं। कसमें उठाने वाले लोग कहते हैं कि आज गुरु गोबिंद सिंघ का परिवार जा रहा है। आज तो घेर लो। पहले तो किलों में थे, परंतु अब मैदान में आ उतरे हैं। अब घेर कर गुरु कलगीधर के परिवार को और इसके सिक्खों को ख़त्म किया जाए।

जब हजूर कीरतपुर पार करते हैं और सरसा के किनारे अभी आना है। इधर रात निकली और प्रभात समय होने लगा है। अमृत वेला हुआ। देखो परमात्मा का खेल! पीछे से टिड्डी दल चढ़ कर आ रहा है, फौजें चढ़ कर आ रही हैं। आगे से सरसा नदी मुंह फैलाए नागिन खड़ी है। बारिश के पानी से उसमें बाढ़ आई है। ऊपर आकाश से वर्षा हो रही है। मैंने कहा, दाता जी! इन दिनों में जो तूने परमात्मा का भाणा माना है, वास्तव में सिक्ख को बता कर गया था कि अगर इतना कुछ भी घटित हो जाए, अकाल का पल्ला कभी न छोड़ना। गुरु गोबिंद सिंघ जी ने आवाज़ दी, बेटा! अजीत सिंघ हजूर के सामने आए। पिता जी हुक्म! आप एक काम करना। हम काफ़िले के सहित यहां आसा की वार का कीर्तन करेंगे। यहां दीवान सजेंगे, क्योंकि पीछे से आवाज़ आई है कि पीछे से शत्रु आया है। कहने लगे, याद रखना, सिक्ख की पूंजी अमृत वेला का नाम-सिमरन है। जिस दिन सिक्ख की पूंजी बाणी चली गई तो इसको शत्रु जहां मर्ज़ी घेर कर खत्म कर दे। इसको परमात्मा की प्राप्ति नहीं होगी।

अमृत वेला हुआ। आसा की वार का कीर्तन आरंभ हो गया। उधर पीछे शत्रु और आगे सरसा नदी, तो दो बच्चे—बाबा ज़ोरावर सिंघ, बाबा फतह सिंघ, दादी माता गुजरी जी के संग बैठकर कीर्तन सुना। गुरु कलगीधर वाले ने आज स्वयं कीर्तन किया। उधर बाबा अजीत सिंघ और भाई उदय सिंघ शत्रु का सामना करते रहे। दीवान की समाप्ति के उपरांत आज संसार का एक अद्‌भुत योद्धा जिसके परिवार का विछोड़ा पड़ने वाला है। माँ, पुत्र, महल सभी सरसा के किनारे खड़े हैं। जब पार करने लगे सरसा को तो इसमें कई सिक्ख

पानी के बहाव में बह गए। कीमती विद्या के ग्रंथ पानी बहाकर ले गया। इतना तेज़ पानी था। मेरे कलगी वाले ने परिवार को तीन हिस्सों में बांट दिया। उधर शत्रु चढ़ कर आ गया। बाबा अजीत सिंघ ने मुकाबला किया और भाई उदय सिंघ ने इसकी रक्षा करते हुए शहादत का जाम सरसा के किनारे पर पिया था। बाबा उदय सिंघ शहीद हो गए, परंतु गुरु के दीवान को आंच नहीं आने दी। बाबा अजीत सिंघ लौट आए। हजूर ने सरसा पार की है। अजीत सिंघ और जुझार सिंघ पिता के दाएं-बाएं हो गए हैं। प्यारे भाई दया सिंघ, भाई धरम सिंघ, भाई हिम्मत सिंघ, भाई मोहकम सिंघ, भाई साहिब सिंघ साथ चले हैं। सरसा पार की। इस बदनसीब सरसा ने मेरे गुरु के पुत्रों को बिछोड़ा। माँ गुजरी पोतों को लेकर एक तरफ चली गई। माता सुंदरी, माता साहिब कौर जी, भाई मनी सिंघ जी के साथ चले गए और कलगीवाला चोजी प्रीतम आज उन मरजीवड़ों को, अपने लालों को और पांच प्यारों को सीने से लगाकर चमकौर की गढ़ी की ओर चलने लगा है। सरसा पार की। रोपड़ हजूर के साथ कुछ झपटें हुई हैं। आगे निकल गए और बूर माजरे ठहरे।

गुरु के सिक्खो! 21 दिसम्बर 1704 शाम पड़ गई है। कलगी वाले ने सब कुछ अनंदपुर, छोटे पुत्र, सब कुछ छोड़ कर आज चमकौर की गढ़ी की ओर पैर बढ़ाया है। चमकौर की गढ़ी के समीप गए। यहां देखो, यह दो भाइयों की गढ़ी थी। चाहे तवारीख़ वालों ने बहुत शब्द और तरह से लिखे हैं। एक का नाम था भाई गरीबू, एक का नाम था बुधी चंद रावत। जब हजूर चमकौर की गढ़ी में आए हैं वहां कृपालु सतिगुरु के चरणों में बुधी चंद रावत, कहते हैं स्वयं पहुंचा था। इसने हाथ जोड़कर कहा, दाता! तू हमारी खातिर सब कुछ कुर्बान करने पर तुला है। हम तेरी क्या सेवा कर सकते हैं? एक मेरी कच्ची गढ़ी है। अगर रात्रि विश्राम करना है तो उस कच्ची गढ़ी में कर लो। साहिब कृपालु जी उस वक्त कच्ची गढ़ी में प्रवेश करते हैं। 21 दिसम्बर की रात सन् 1704 शाम को कृपालु दाता जी ने भीतर प्रवेश किया है। जब प्रवेश किया तो गढ़ी को देखकर

मुस्कराए। प्यारे भाई दया सिंघ ने पूछा, दाता! यह मुस्कराहट कैसी? हजूर ने कमरबंद में से खंजर निकाला। उस गढ़ी की दीवार पर लगी मिट्टी तोड़ी और एक दम तेज़ हवा में उस मिट्टी को उड़ा दिया। प्यारे भाई दया सिंघ ने पूछा, यह माजरा क्या है? हंस कर कहने लगे, दया सिंघ! इस गढ़ी के सामने हकूमतों वालों के किले झुक जाएंगे। महाराज! इसकी मिट्टी आपने उड़ाई क्यों है? कहने लगे, मैं बस इस गढ़ी की इंतज़ार में था, जहां मैंने अपने दोनों पुत्र लाकर अकाल की गोद में और कौम की ख़ातिर भेंट कर देने हैं।

जिस खिते में हम कहिते थे आना है ये वही है।
कल लुट के जिस जगा से जाना है ये वही है।
जिस जगा पे बच्चों को कटाना है ये वही है।

कहने लगे कि मिट्टी की महानता को भी सलामी दी है कि आज तू कच्ची है परंतु तेरे भीतर दृढ़ता का बसेरा हो गया। सच जानना, आज के बाद रहती दुनिया तक मैंने जो हाथ से धूल उड़ाई है, ऐ गढ़ीए! तेरी धूल, आकर लोग माथे पर लगाएंगे।

SIKHBOOKCLUB.COM

●